जयपुर • कोटा • बीकानेर • उदयपुर • अजमेर • जालोर • हिण्डौनसिटी • चूरू

राष्ट्रदूत

epaper.rashtradoot.com

बीकानेर

Rashtradoot

फोनः- 2200660 फैक्स : 0151-2527371 वर्षः 47 संख्याः 187 प्रभात बीकानेर, शुक्रवार 30 जनवरी, 2026 डाक प.स.बीकानेर/045/2020-22 पृष्ठ 6 मूल्य 2.50 रू.

राजस्थान के वरिष्ठ नेतागण, खड़गे व राहुल गांधी से मिले दिल्ली में

मुलाकात का मुख्य ध्येय, ऐसा लगा है कि सचिन पायलट के खिलाफ वातावरण बनाना, जिससे डोटासरा अपने प्रदेशाध्यक्ष पद पर बने रहें व सचिन पायलट को प्रदेशाध्यक्ष बनने से रोका जा सके।

- रेणु मित्तल-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 29 जनवरी। राजस्थान कांग्रेस के वरिष्ठ नेताओं की पार्टी अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे और राहुल गांधी के साथ एक बैठक हुई, जिसमें पूर्व मुख्यमंत्री अशोक गहलोत संदिग्ध रुप से अनुपस्थित रहे।

दिलचस्प बात यह है कि गहलोत एक महीने से अधिक समय से राजस्थान से गायब थे और लोगों द्वारा उनके ठिकाने को लेकर सवाल उठाए जाने के बावजूद, वे चुप्पी साधे हुए थे। हालांकि, दिल्ली में होने वाली बैठक से ठीक पहले आज सुबह अशोक गहलोत ने ट्वीट कर बताया कि डॉक्टरों ने उन्हें ठंडे स्थानों से दूर रहने और गर्म जलवायु में रहने की सलाह दी है, क्योंकि वे स्वास्थ्य लाभ कर रहे हैं।

बैठक के दौरान राहुल गांधी ने पूछा कि अशोक गहलोत कहाँ हैं, जिस पर मल्लिकार्जुन खड़गे ने गहलोत को फोन मिलाया और फोन राहुल गांधी को दे दिया। राहुल ने उनके स्वास्थ्य के बारे में पूछा, और उन्हें बताया गया कि गहलोत को निमोनिया हुआ था और वे मुंबई में स्वास्थ्य लाभ कर रहे हैं। गहलोत की बेटी मुंबई में रहती हैं और राजनीतिक गलियारों में चर्चा है कि गहलोत की अधिकांश संपत्ति मुंबई में ही है।

- इस बैठक में अशोक गहलोत की अनुपस्थिति काफी चर्चित रही, हालांकि, बैठक से ठीक पहले गहलोत ने ट्वीट करके यह उजागर किया था कि वे मुम्बई में हैं तथा उन्हें निमोनिया हो गया था। अतः डॉक्टरों ने उन्हें हिदायत दी है कि ठंड से बचें और ऐसी गरम जगह पर रहें, जहाँ तापमान ज्यादा ठंडा न हो, बल्कि थोड़ा गरम हो।
- गहलोत ने यही बात राहुल गांधी को दोहराई, जब राहुल ने उनसे उनके स्वास्थ्य के बारे में पूछा, खड़गे द्वारा गहलोत को फोन मिलाने पर।
- भंवर जितेन्द्र सिंह, प्रभारी रंधावा, कांग्रेस के संगठन महासचिव वेणुगोपाल आदि की पूरी कोशिश है कि डोटासरा, प्रदेशाध्यक्ष बने रहें तथा सचिन पायलट को किसी भी तरह प्रदेशाध्यक्ष की कुर्सी से दूर ही रखा जा सके।

इस बैठक में सचिन पायलट के ख़िलाफ़ एक तरह से घेराबंदी भी देखने को मिली, जहाँ वरिष्ठ नेताओं ने प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष डोटासरा की जमकर तारीफ़ की, चाहे वह एसआईआर हो, बीएलए हो, मनरेगा हो या पार्टी संगठन व पार्टी को एकजुट रखने का मुद्दा हो।

डोटासरा और जूली की सराहना करने वालों में भंवर जितेन्द्र सिंह, एआईसीसी प्रभारी रंधावा और संगठन मामलों के एआईसीसी महासचिव के.सी. वेणुगोपाल प्रमुख रुप से शामिल थे।

सूत्रों के अनुसार, डोटासरा को मजबूत करने, उन्हें प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष की कुर्सी पर बनाए रखने और किसी भी तरह से यह सुनिश्चित करने की कोशिश हो रही है कि सचिन पायलट डोटासरा की जगह न ले सकें।

भंवर जितेन्द्र सिंह की गांधी परिवार तक सीधी पहुँच मानी जाती है और वे लगातार 'गुपचुप कैंपेन' चलाने के लिए जाने जाते हैं। रंधावा, डोटासरा के काफ़ी क़रीबी माने जाते हैं, जिसके पीछे जाट समुदाय की बॉन्डिंग को भी कारण बताया जा रहा है। वहीं, वेणुगोपाल भी काफी समय से डोटासरा की प्रशंसा करते आ रहे हैं, ताकि प्रदेश कांग्रेस की कमान उनके पसंदीदा व्यक्ति के हाथों में बनी रहे।

रंधावा ने आगामी राज्यसभा चुनावों का मुद्दा भी उठाया और कहा कि यह सुनिश्चित किया जाना चाहिए कि

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

नीरजा मोदी स्कूल सीधे हाई कोर्ट में याचिका नहीं लगा सकता- सीबीएसई

जयपुर, 29 जनवरी। कक्षा चार की बालिका अमायरा की मौत के मामले में नीरजा मोदी स्कूल की समबद्धता वापस लेने के मामले में सीबीएसई ने हाईकोर्ट में अपना जवाब पेश कर दिया है। हालांकि जवाब रिकॉर्ड पर नहीं आने के चलते, जस्टिस बिपिन गुप्ता की एकल पीठ ने नीरजा मोदी स्कूल की याचिका पर शुक्रवार के लिए सुनवाई टाल दी।

सीबीएसई की ओर से अधिवक्ता एमएस राघव ने कहा कि स्कूल प्रशासन को सीधे हाईकोर्ट में याचिका पेश करने का अधिकार नहीं है। इसके लिए सीबीएसई चेयरमैन के समक्ष अपील पेश करनी चाहिए थी। घटना के बाद दो सदस्यीय कमेटी का गठन किया गया। जिसकी रिपोर्ट में स्कूल में कई तरह की गंभीर खामियां होने की बात सामने आई है, जैसे स्कूल के बच्चे आइडी कार्ड नहीं लगाते, जिससे घटना के आधा घंटा बाद तक यह पता नहीं चला कि चौथी मंजिल से कूदने वाली छात्रा कौन थी। इसके अलावा, इमारत पर सेफ्टी नैट भी नहीं था। इसके होने से घटना रोकी जा सकती थी।

- सीबीएसई के अधिवक्ता ने हाई कोर्ट में कहा कि स्कूल को पहले सीबीएसई चेयरमैन के समक्ष अपील पेश करनी चाहिए।

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

इकोनॉमिक सर्वे ने भी "डोमैस्टिक डिमांड" को ड्राइविंग इंजन माना

- अंजन रॉय-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 29 जनवरी। केन्द्रीय वित्त मंत्रालय द्वारा जारी इकोनॉमिक सर्वे ने भारतीय अर्थव्यवस्था के भविष्य के सम्बंध में "वैश्विक अनिश्चितताओं के बीच स्थिर विकास" का नज़रिया पेश किया है, जिसमें "सावधानी बरतने, लेकिन निराशावादी न होने" की बात कही गई है।

इकोनॉमिक सर्वे (आर्थिक सर्वेक्षण) में वित्त वर्ष 2027 में भारतीय अर्थव्यवस्था के 7.2 प्रतिशत की दर से बढ़ने का अनुमान लगाया गया है, जिसमें घरेलू कारकों की प्रमुख भूमिका बताई गई है।

सर्वेक्षण के अनुसार, वैश्विक माहौल अभी भी नाजुक बना हुआ है, हालांकि यह उम्मीद से बेहतर प्रदर्शन कर रहा है। इसके बावजूद भू-राजनीतिक तनाव, व्यापार में बंटवारा और वित्तीय कमजोरियां बढ़ रही हैं।

भारत के लिए राहत की बात यह है कि सर्वेक्षण मानता है कि वैश्विक हालात तत्काल बड़े आर्थिक दबाव की बजाय, बाहरी अनिश्चितताएं पैदा कर सकते हैं। सर्वेक्षण के अनुसार, "प्रमुख व्यापारिक साझेदार देशों में धीमी वृद्धि, शुल्कों के कारण व्यापार में रुकावट और पूंजी प्रवाह में उतार-चढ़ाव समय-समय पर निर्यात और निवेशकों की भावना पर असर डाल सकते हैं।"

- वित्त मंत्रालय द्वारा जारी "इकोनॉमिक सर्वे" के अनुसार, अंतर्राष्ट्रीय परिस्थितियां, विश्व की इकॉनमी में अनिश्चितता तो जरूर ला रही हैं, पर, देश की इकॉनमी पर इसका खास असर नहीं हुआ है।
- इसका मुख्य कारण है, देश की "डोमैस्टिक डिमांड" (आतंरिक खपत) के आंकड़े।
- सर्वे के अनुसार, देश की इकॉनमी के शानदार प्रदर्शन व महँगाई की दर पर नियंत्रण के कारण सरकार अब इस स्थिति में है कि नये-नये प्रोजैक्ट ला सके व महत्वाकांक्षी स्कीम्स ला सके।
- इससे, "डोमैस्टिक डिमांड" में उछाल आयेगा व नये रोज़गार की उपलब्धता बढ़ेगी।

घरेलू अर्थव्यवस्था के प्रदर्शन पर आते हुए सर्वे ने कहा कि 2025-26 में घरेलू मांग ने आर्थिक वृद्धि को आगे बढ़ाया। सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) में अंतिम निजी उपभोग व्यय (पीएफसीई) की हिस्सेदारी बढ़कर 61.5 प्रतिशत हो गई।

सर्वे में इस बात पर जोर दिया गया है कि खपत में मजबूती एक अनुकूल व्यापक आर्थिक माहौल को दर्शाती है, जिसकी विशेषता, कम महंगाई, स्थिर रोजगार स्थिति और बढ़ती वास्तविक क्रय शक्ति है।

इसके अलावा, मजबूत कृषि प्रदर्शन से समर्थित स्थिर ग्रामीण खपत और प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष करों के सरलीकरण से शहरी खपत में धीरे-धीरे सुधार के कारण उपभोग मांग की गति व्यापक आधार पर बनी रही।

इसी संदर्भ में आर्थिक सर्वेक्षण में एक विरोधाभास नजर आता है।

आर्थिक सर्वेक्षण की प्रस्तावना में मुख्य आर्थिक सलाहकार वी. अनंतनागेश्वरन ने कठोपनिषद का हवाला देते हुए कहा है कि भविष्य की तृप्ति के लिए वर्तमान उपभोग पर

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

शशि थरूर, राहुल गांधी व खड़गे से मिलने गए

लम्बी मुलाकात में शिकवे-शिकायतें दूर हुईं तथा थरूर ने एक ही आग्रह किया, राहुल उन पर विश्वास करें

- रेणु मित्तल-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 29 जनवरी। लगातार सुर्ख़ियों में रहे शशि थरूर की अंततः राहुल गांधी और मल्लिकार्जुन खड़गे के साथ एक लंबी और विस्तृत बैठक हुई, जिसमें कई गलतफ़हमियों को दूर किया गया। इस बैठक के बाद थरूर और राहुल गांधी के बीच एक कार्यकारी (वर्किंग) संबंध स्थापित हुआ।

यह बैठक केरल के कुछ सक्रिय कांग्रेस सांसदों की पहल का नतीजा थी, जिन्होंने के.सी. वेणुगोपाल से मुलाक़ात कर ज़ोर दिया था कि राहुल गांधी और शशि थरूर को आपस में मिलकर अपने मतभेद सुलझाने चाहिए, अन्यथा कांग्रेस केरल खो सकती है।

एक वरिष्ठ पार्टी नेता ने कहा कि अधिकांश गलतफ़हमियाँ के.सी. वेणुगोपाल ने अपनी व्यक्तिगत महत्वाकांक्षाओं के चलते पैदा की थीं। उनका कहना था कि यदि राहुल गांधी अब भी यह नहीं समझ पा रहे हैं कि वेणुगोपाल किस तरह अपनी महत्वाकांक्षा, केरल का मुख्यमंत्री

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

- यह बैठक कांग्रेस के केरल से निर्वाचित सांसदों के जोर देने पर आयोजित की गई थी। इन सांसदों ने दबाव बनाया था कि राहुल गांधी व शशि थरूर अपने मतभेद साफ करके, नेतृत्व प्रदान करें राज्य में, अन्यथा कांग्रेस केरल में चुनाव हार जाएगी।
- शशि थरूर ने राहुल से यह भी कहा कि उन्होंने केरल में एक आमसभा को संबोधित करते हुए, थरूर का नाम भी नहीं लिया था, हालांकि वे मंच पर बैठे थे। राहुल ने जवाब दिया, उनको एक चिट दी गई थी, जिसमें वे नाम लिखे हुए थे, जिन्हें राहुल को संबोधित करना था, अपना भाषण शुरु करने से पहले। यह आम धारणा है, यह चिट में नाम न होना, वेणुगोपाल की शरारत थी।
- राहुल गांधी ने उसी समय यह भी आदेश दिए कि प्रदेशाध्यक्ष को पाबंद किया जाए कि हर पीसीसी बैठक में थरूर को लाज़मी तौर पर आमंत्रित किया जाए।

जद (एस) प्रमुख देवेगौड़ा प्रधानमंत्री से मिले

नयी दिल्ली 29 जनवरी। पूर्व प्रधानमत्री एच.डी. देवेगौड़ा ने गुरुवार को यहां प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी से भेंट की। इस दौरान दोनों नेताओं ने देश के विकास से जुड़े अनेक महत्वपूर्ण मुद्दों पर चर्चा की। प्रधानमंत्री ने सोशल मीडिया पर इस मुलाकात के बारे में जानकारी दी।

- देवेगौड़ा राज्यसभा सदस्य हैं तथा उनका दल राजग का हिस्सा है।

मोदी ने सोशल मीडिया पोस्ट में कहा , " एच.डी. देवेगौड़ा जी के साथ उत्कृष्ट बैठक हुई। उनके महत्वपूर्ण मुद्दों पर विचार सराहनीय हैं। भारत के विकास के प्रति उनका उत्साह भी समान रूप से प्रशंसनीय है।"

देवेगौड़ा जनता दल (एस) के प्रमुख हैं और अभी राज्यसभा के सदस्य हैं। जनता दल (एस) राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन में होने के नाते केन्द्र में सरकार में भी भागीदार है।

नफरती बयानबाजी कर भारी कानूनी विवाद में पड़ सकते हैं असम के मु.मंत्री

असम के मु.मंत्री हिमंत बिस्वा ने लोगों को मुस्लिमों को परेशान करने के लिए उकसाया

-श्रीनंदन झा-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 29 जनवरी। असम के मुख्यमंत्री हेमंत बिस्वा सरमा अपने बयानों को लेकर विवाद में फंसते नजर आ रहे हैं। उन्होंने लोगों से "मियां मुस्लिम" रिक्शा चालकों को कम पैसे देने के लिए कहा था। साथ ही उन्होंने यह भी कहा कि सरकार "मियां" समुदाय को "काबू में रखने" के लिए उन्हें परेशान करेगी और यह सुनिश्चित करेगी कि वे स्थानीय समुदाय पर हावी न हो सकें।

इससे पहले वे यह भी दावा कर चुके हैं कि विशेष पुनरीक्षण (स्पेशल रिवीजन) अभियान के दौरान पांच लाख मियां मुसलमानों के नाम मतदाता सूची से हटाए जाएंगे।

सांप्रदायिक ध्रुवीकरण की राजनीति विभिन्न राज्यों, खासकर असम चुनाव प्रचार का लगातार हिस्सा रही है। असम में 1980 के शुरुआती वर्षों में "जनसांख्यिकीय घुसपैठ" के खिलाफ बड़ा जन आंदोलन हुआ था। वर्ष 2014 में असम की एक रैली में नरेन्द्र मोदी, जो तब भाजपा के प्रधानमंत्री पद के उम्मीदवार थे, ने अवैध बांग्लादेशी प्रवासियों से कहा था कि वे अपना सामान बांधकर लौट जाएं। बारह साल बाद, केन्द्र और राज्य दोनों में भाजपा की सरकार होने के बावजूद यह समस्या अब भी बनी हुई है।

जब असम में नैशनल रजिस्टर ऑफ सिटिज़न्स (एन.आर.सी.) तैयार किया गया, तब पाया गया कि 19 लाख अवैध प्रवासियों में से 11 लाख हिंदू थे। हैरानी की बात यह है कि भाजपा एनआरसी के इन निष्कर्षों को स्वीकार नहीं करती, लेकिन मौजूदा विशेष पुनरीक्षण प्रक्रिया के दौरान मियां समुदाय को निशाना बना रही है। इससे विपक्षी भड़क गए हैं और आरोप लगा रहे हैं कि यह अल्पसंख्यकों को मताधिकार से वंचित करने के लिए किया जा रही एक लक्षित और सांप्रदायिक कवायद है।

- मुख्यमंत्री हिमंत बिस्वा सरमा ने एक बयान में लोगों से अपील की कि मुसलमानों को परेशान किया जाए ताकि वे कमज़ोर हो जाएं। उन्होंने तरीका भी बताया, जैसे मुस्लिम रिक्शा वाले को कम किराया दिया जाए।
- ऐसी टिप्पणियाँ गैर जमानती, संज्ञेय अपराधों की श्रेणी में आती हैं और अगर यह बयान संवैधानिक पद पर बैठे किसी नेता, जैसे मुख्यमंत्री, का हो तो बेहद गंभीर मामला बनता है।
- कंग्रेस की असम यूनिट ने इस संबंध में याचिका भी दायर की है।

सभी सरकारों को अवैध प्रवासियों को हटाने का अधिकार है। लेकिन यह अलग बात है कि कोई मौजूदा मुख्यमंत्री किसी खास समुदाय को सजा देने की खुली बात करे और उन्हें वोट देने के अधिकार से वंचित करने की धमकी दे। इस तरह की बातें जनप्रतिनिधित्व अधिनियम के प्रावधानों का उल्लंघन हैं। साथ ही, यह बात भारतीय दंड संहिता की धारा 153ए के तहत भी आ सकती हैं, जो धर्म, जाति, जन्म स्थान, निवास या भाषा के आधार पर अलग-अलग समूहों के बीच दुश्मनी, नफरत या वैमनस्य फैलाने को अपराध मानती है। यह अपराध संज्ञेय है, जमानत नहीं

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

नालों की सफाई के दौरान मौत पर 30 लाख मुआवजा

नयी दिल्ली, 29 जनवरी। उच्चतम न्यायालय ने स्पष्ट किया है कि मैला ढ ोने और नालों की सफाई के दौरान होने वाली मौतों के लिए मुआवजे को बढ़ ाकर 30 लाख रुपये करने का उसका आदेश पुराने मामलों पर भी लागू होगा, यदि उनमें अभी तक मुआवजा तय नहीं हुआ है या मुआवजे का भुगतान नहीं किया गया है।

- सर्वोच्च न्यायालय ने कहा कि यह आदेश पुराने मामलों पर भी लागू होगा।

उल्लेखनीय है कि न्यायालय ने अक्टूबर 2023 के बलराम मामले में ऐसी मौतों के लिए मुआवजे की राशि 10 लाख रुपये से बढ़ ाकर 30 लाख रुपये कर दी थी। यह स्पष्टीकरण राष्ट्रीय कानूनी सेवा प्राधिकरण (नालसा) द्वारा शीर्ष अदालत के समक्ष दायर एक आवेदन के बाद आया है।

नालसा ने कहा था कि अलग-

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

सुप्रीम कोर्ट ने नए यू.जी.सी. नियमों के क्रियान्वयन पर स्टे लगाया

सुप्रीम कोर्ट ने शिकायत निवारण व्यवस्था का गठन जातिगत आधार पर होने को गलत माना

-डॉ. सतीश मिश्रा-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 29 जनवरी। मोदी सरकार को झटका देते हुए सुप्रीम कोर्ट ने आज यूनिवर्सिटी ग्रांट्स कमीशन (उच्च शिक्षा संस्थानों में समानता को बढ़ावा) नियम, 2026 पर रोक लगा दी। देशभर में इन नियमों के खिलाफ विरोध और आलोचना हो रही थी।

ये नियम 23 जनवरी को अधिसूचित किए गए थे। कई याचिकाकर्ताओं ने इन्हें चुनौती दी थी। उनका कहना था कि ये नियम अस्पष्ट, भेदभावपूर्ण और पक्षपातपूर्ण हैं और संविधान तथा यूजीसी अधिनियम, 1956 का उल्लंघन करते हैं।

नए नियमों पर रोक लगाते हुए अदालत ने कहा कि फिलहाल 2012 के यूजीसी नियम ही लागू रहेंगे। कोर्ट ने नियम 3 (सी) को लेकर गंभीर चिंता जताई। यह नियम जाति आधारित भेदभाव से जुड़ा है। अदालत ने कहा कि इसमें स्पष्टता नहीं है और इसका दुरुपयोग हो सकता है। कोर्ट के अनुसार, इस नियम की भाषा में बदलाव की जरूरत है।

2026 के नए नियम कॉलेज और विश्वविद्यालय परिसरों में जाति आधारित भेदभाव से निपटने के लिए बनाए गए थे। नियमों के तहत, संस्थानों को विशेष समितियां और हेल्पलाइन बनानी थीं, ताकि छात्र, खासकर अनुसूचित जाति (एससी), अनुसूचित जनजाति (एसटी) और अन्य पिछड़ा वर्ग (ओबीसी) के छात्र, अपनी शिकायत दर्ज करा सकें।

लेकिन इस कदम का कड़ा विरोध भी हुआ। सामान्य वर्ग के कई छात्रों का कहना है कि यह फ्रेमवर्क उन्हें हाशिये पर डाल सकता है। उनका तर्क है कि नियम कुछ वर्गों पर ही केन्द्रित हैं, जबकि दूसरों के लिए कोई स्पष्ट सुरक्षा या प्रतिनिधित्व नहीं दिया गया है।

- सुप्रीम कोर्ट का कहना था कि इससे देश में जातिगत विभाजन और बढ़ेगा ही, घटेगा नहीं।
- 23 जनवरी को अधिसूचित इन नियमों का देश भर में सवर्णों द्वारा भारी विरोध किया जा रहा है।
- इन नियमों के खिलाफ दायर याचिकाओं में कहा गया है कि ये नियम अस्पष्ट हैं और संविधान व यूजीसी एक्ट, 1956 के खिलाफ हैं।
- सुप्रीम कोर्ट ने व्यवस्था दी है कि फिलहाल वर्ष 2012 के यूजीसी रैगुलेशन ही मान्य होंगे। बैंच ने रैगुलेशन 3 (सी) पर विशेष रूप से चिंता जताई और कहा कि इसका भारी दुरुपयोग हो सकता है।

प्रदर्शनकारियों का कहना था कि ये नियम सामान्य वर्ग के छात्रों के लिए कोई अनिवार्य प्रतिनिधित्व या सुरक्षा का प्रावधान नहीं करते हैं।

बुधवार को, ज्यादातर सामान्य वर्ग के छात्रों ने दिल्ली विश्वविद्यालय के नॉर्थ कैंपस में प्रदर्शन किया और नए नियमों को वापस लेने की मांग की। इसी तरह के प्रदर्शन लखनऊ से भी सामने आए, जहां छात्रों ने लखनऊ विश्वविद्यालय के बाहर इकट्ठा होकर यूजीसी नीतियों के खिलाफ नारे लगाए।

विरोध के बीच केन्द्रीय शिक्षा मंत्री धर्मेन्द्र प्रधान ने छात्रों को आश्वासन देने की कोशिश की। उन्होंने कहा कि इन नियमों का दुरुपयोग नहीं किया जाएगा। मंगलवार को पत्रकारों से बात करते हुए उन्होंने कहा, "मैं सभी को भरोसा दिलाता हूं कि कोई भेदभाव नहीं होगा और कोई भी कानून का गलत इस्तेमाल नहीं कर सकेगा।"

यह विवाद राजनीतिक हलकों तक भी पहुंच गया। रायबरेली के सलोन विधानसभा क्षेत्र से भाजपा किसान मोर्चा के उपाध्यक्ष श्याम सुंदर त्रिपाठी ने अपने पद से इस्तीफा दे दिया। उन्होंने नए यूजीसी नियमों से असंतोष जताया। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी को लिखे पत्र में उन्होंने इन नियमों को विभाजनकारी बताया और कहा कि वे ऐसे कानून का समर्थन नहीं कर सकते, जिसे वे अन्यायूर्ण मानते हैं।

मोदी सरकार ने यूजीसी (उच्च शिक्षा संस्थानों में समानता को बढ़ावा) नियम, 2026 को एससी, एसटी और ओबीसी वर्ग के वोटों को एकजुट करने के उद्देश्य से पेश किया था। लेकिन इन नियमों के खिलाफ हुए विरोध प्रदर्शनों

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

अजित पवार के विमान का ब्लैक बॉक्स मिला

नयी दिल्ली, 29 जनवरी। महाराष्ट्र के बारामती में बुधवार सुबह दुर्घटनाग्रस्त विमान का ब्लैकबॉक्स बरामद हो गया है।

जांच में शामिल अधिकारियों ने गुरुवार को बताया कि दुर्घटनाग्रस्त लीयरजेट 45 विमान का ब्लैकबॉक्स दुर्घटनास्थल से बरामद किया गया है।

- एएआईबी का जाँच दल बुधवार को बारामती में।

इस विमान हादसे में महाराष्ट्र के उपमुख्यमंत्री अजित पवार, उनके एक निजी सुरक्षा अधिकारी तथा एक सहायक और चालक दल के दो सदस्यों की मौत हो गयी थी। एएआईबी के महानिदेशक के नेतृत्व में जांच दल बुधवार को ही बारामती पहुंच गया था। इसके साथ नागर विमानन महानिदेशालय (डीजीसीए) के तीन अधिकारियों की मुंबई की टीम भी जांच कर रही है।

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

विचार बिन्दु

पुरुषार्थ से दरिद्रता का नाश होता है, जप से पाप दूर होता है, मौन से कलह की उत्पत्ति नहीं होती और सजगता से भय नहीं होता। –चाणक्य

परंपरा और तकनीकी मिलकर गढ़ रहे हैं नया राजस्थान

राजस्थान, जो कभी रेगिस्तानों और किलों की भूमि के नाम से जाना जाता था, आज परंपरा और तकनीकी के अनोखे संगम से एक नया स्वरूप धारण कर रहा है। यहाँ की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत आधुनिक विज्ञान के साथ जुड़कर न केवल आर्थिक प्रगति को गति दे रही है, बल्कि युवा पीढ़ी को भी अपनी जड़ों से जोड़े हुए है।

यह संयोजन राजस्थान को वैश्विक पटल पर एक अनूठा राज्य बना रहा है, जहाँ ऊँटों के मेलों के साथ डिजिटल स्टार्टअप्स फल-फूल रहे हैं। परंपरागत हस्तशिल्प अब ई-कॉमर्स प्लेटफॉर्म्स पर बिक रहे हैं, और प्राचीन लोकगीत डिजिटल संगीत ऐप्स में गूँज रहे हैं।

राजस्थान की परंपराएँ सदियों पुरानी हैं, जो लोककला, संगीत, नृत्य और वास्तुकला में झलकती हैं। यहाँ के त्योहार जैसे पुष्कर मेला या जैसलमेर का डेजर्ट फेस्टिवल रंग-बिरंगे परिधानों, कठपुतली नृत्य और भोपा गायकों से सजते हैं। महिलाएँ पनिहारी गीत गाते हुए कुएँ से पानी भरती हैं, जो उनकी दैनिक जीवन की कविता है। किले जैसे आमेर, मेहरानगढ़ और जैसलमेर का स्वर्ण किला पीले बलुआ पत्थरों से चमकते हैं, जो राजपूत शौर्य की गाथा कहते हैं।

इन परंपराओं में हस्तशिल्प का विशेष स्थान है। टाई-डाई, मिरर वर्क, ब्लॉक प्रिंटिंग और ज़री कढ़ाई जैसी कला पीढ़ियों से चली आ रही है। बीकानेर की कठपुतलियाँ और जोधपुर की लकड़ी की नक्काशी पर्यटकों को लुभाती हैं। राजस्थानी व्यंजन जैसे दाल बाटी चूरमा कम पानी वाली जलवायु के अनुकूल हैं, जो स्थानीय कृषि पर आधारित हैं। ये परंपराएँ न केवल सांस्कृतिक पहचान हैं, बल्कि आजीविका का स्त्रोत भी। लेकिन बदलते समय में इन्हें तकनीकी से जोड़ना आवश्यक हो गया है।

तकनीकी क्रांति ने राजस्थान को तेजी से बदल दिया है। राज्य में सौर ऊर्जा संयंत्रों का जाल बिछा है, खासकर फलोदी और जैसलमेर जैसे क्षेत्रों में, जहाँ सूरज की प्रचुरता का लाभ उठाया जा रहा है।चंबल और माही नदियों पर बांधों से सिंचाई और बिजली मिल रही है, जो कृषि को आधुनिक बना रही है। जयपुर और जोधपुर में आईटी हब विकसित हो रहे हैं, जहाँ स्टार्टअप्स फल-फूल रहे हैं।

सीमेंट उद्योग में राजस्थान देश में प्रथम है। लाखेरी और बूंदी के अलावा वर्तमान में सभी सीमेंट कारखाने अब उन्नत तकनीक से चलते हैं। कांच उद्योग भी फलोदी, जयपुर और धौलपुर में पनप रहा है। डिजिटल इंडिया के तहत राजस्थान में ई-गवर्नेंस मजबूत हुआ है, जिससे ग्रामीण क्षेत्रों में सेवाएँ पहुँच रही हैं। मोबाइल ऐप्स से किसान फसल बेच रहे हैं, और ड्रोन से खेतों की निगरानी हो रही है।

यह संयोजन सबसे सुंदर रूप में पर्यटन में दिखता है। प्राचीन किले अब वर्चुअल रियलिटी से जुड़ गए हैं। जयपुर का हवा महल या आमेर किला पर्यटक ऐप्स पर 360 डिग्री टूर देते हैं। पुष्कर मेला लाइव स्ट्रीमिंग से वैश्विक दर्शकों तक पहुँच रहा है। जैसलमेर के घरों में परंपरागत डिजाइन के साथ सोलर पैनल लगे हैं, जो बीकानेर के एक घर का उदाहरण है जहाँ पुरानी वास्तुकला और आधुनिक तकनीक का संगम है।

हस्तशिल्प को तकनीकी ने नई उड़ान दी है। राजस्थानी ब्लॉक प्रिंट अब ऑनलाइन मार्केट्स जैसे अमेज़न और फ्लिपकार्ट पर बिकता है। डिजाइन सॉफ्टवेयर से आर्टिसन्स नए पैटर्न बना रहे हैं। जोधपुर की वुडन क्राफ्ट को 3डी प्रिंटिंग से मजबूती मिल रही है। ई-कॉमर्स ने स्थानीय कारीगरों को वैश्विक बाजार से जोड़ा है। उदाहरणस्वरूप, राजस्थानी साफा और जूतियाँ अब डिजिटल कैटलॉग्स में हैं, जो युवाओं को परंपरा से जोड़ते हैं।

परंपरा और तकनीकी का यह संगम राजस्थान को सशक्त बना रहा है। यह न केवल आर्थिक विकास ला रहा है, बल्कि सांस्कृतिक निरंतरता भी सुनिश्चित कर रहा है। भविष्य में एआई और वर्चुअल टूरिज्म से राज्य चमकेगा। राजस्थान अब रेत के टीलों से आगे, डिजिटल रेगिस्तान का राजा बन चुका है। यह प्रक्रिया समावेशी है। महिलाएँ ई-लर्निंग से सशक्त हो रही हैं। आदिवासी समुदाय डिजिटल मार्केटिंग से अपनी कला बेच रहे हैं। पर्यावरण संरक्षण में स्मार्ट सेंसर रेगिस्तान को हरा बना रहे हैं। राजस्थान का यह नया स्वरूप प्रेरणादायक है। वर्तमान समय में परंपरा तकनीकी की जड़ें हैं, और तकनीकी परंपरा के पंख। दोनों मिलकर राजस्थान को विश्व गुरु बना सकते हैं। युवाओं को इस संगम को अपनाना चाहिए।

कृषि क्षेत्र में यह मेल चमत्कारिक है। राजस्थान सूखा प्रभावित होने के बावजूद डिजिटल कृषि से बदल रहा है। किसान ऐप्स से मौसम पूर्वानुमान पाते हैं, और ड्रोन से बीज बोया जा रहा है। इंदिरा गांधी नहर से सिंचाई बढ़ी है, जो परंपरागत खेती को आधुनिक बनाती है। जैसलमेर के रेगिस्तान में ड्रिप इरिगेशन से सब्जियाँ उग रही हैं। जैविक खेती को प्रमोट करने वाले ऐप्स किसानों को प्रीमियम दाम दिला रहे हैं। यह न केवल उत्पादन बढ़ा रहा है, बल्कि जल संरक्षण भी।

शिक्षा में भी परिवर्तन आया है। ग्रामीण स्कूलों में स्मार्ट क्लासरूम हैं, जहाँ बच्चे टैबलेट पर राजस्थानी लोककथाएँ सीख रहे हैं। जयपुर के विश्वविद्यालयों में एआई कोर्सेस राजस्थानी इतिहास पर आधारित हैं। ऑनलाइन प्लेटफॉर्म्स से युवा कठपुतली कला या लोकनृत्य सीख रहे हैं। यह परंपरा को जीवंत रखते हुए भविष्य की तैयारी करा रहा है। उदाहरण के लिए, भोपा गीतकार अब यूट्यूब पर अपनी प्रस्तुतियाँ अपलोड कर रहे हैं, जो लाखों व्यूज पा रहे हैं।

स्वास्थ्य सेवाओं में तकनीकी ने क्रांति ला दी। टेलीमेडिसिन से दूरदराज के गाँवों में डॉक्टर पहुँच रहे हैं। जोधपुर के एम्स में एआई से डायग्नोसिस हो रहा है। आयुर्वेद को डिजिटल प्लेटफॉर्म्स पर प्रमोट किया जा रहा है, जहाँ प्राचीन जड़ी-बूटियाँ आधुनिक रिसर्च से सिद्ध हो रही हैं। कोविड काल में राजस्थान ने डिजिटल हेल्थ ऐप्स से लाखों को बचाया।

सांस्कृतिक संरक्षण में डिजिटल अभिलेखागार महत्वपूर्ण हैं। राजस्थान सरकार ने विरासत को डिजिटाइज किया है। किलों की स्कैनिंग से 3डी मॉडल बने हैं, जो भूकंप जैसी आपदाओं से बचाव करेंगे। लोक संगीत को डिजिटल स्वरूप में संग्रहीत किया जा रहा है। एनजीओ और स्टार्टअप्स मिलकर राजस्थानी बोलियों को ऐप्स में ला रहे हैं। इससे युवा अपनी भाषा नहीं भूलेंगे।

आर्थिक प्रभाव गहरा है। तकनीकी ने रोजगार सृजित किए हैं। आईटी क्षेत्र में हजारों युवा कार्यरत हैं। ई-कॉमर्स से हस्तशिल्प निर्यात बढ़ा है। सौर ऊर्जा से ग्रामीण क्षेत्र आत्मनिर्भर बने हैं। स्टार्टअप इंडिया के तहत राजस्थानी उद्यमी उभर रहे हैं, जो परंपरागत उत्पादों को ब्रांड बना रहे हैं। उदाहरणस्वरूप, मोहब्बत मरजानी जैसी ब्रांड्स बैलेंस गाउन को ग्लोबल बना रही हैं।

चुनौतियाँ भी हैं। डिजिटल डिवाइड ग्रामीण क्षेत्रों में है, जहाँ इंटरनेट कमजोर है। परंपराओं का व्यावसायिकीकरण उनकी शुद्धता को प्रभावित कर सकता है। युवा शहरों की ओर पलायन कर रहे हैं। लेकिन सरकार की योजनाएँ जैसे राज-ई-मित्र और डिजिटल गांव इनसे निपट रही हैं।

परंपरा और तकनीकी का यह संगम राजस्थान को सशक्त बना रहा है। यह न केवल आर्थिक विकास ला रहा है, बल्कि सांस्कृतिक निरंतरता भी सुनिश्चित कर रहा है। भविष्य में एआई और वर्चुअल टूरिज्म से राज्य चमकेगा। राजस्थान अब रेत के टीलों से आगे, डिजिटल रेगिस्तान का राजा बन चुका है।

यह प्रक्रिया समावेशी है। महिलाएँ ई-लर्निंग से सशक्त हो रही हैं। आदिवासी समुदाय डिजिटल मार्केटिंग से अपनी कला बेच रहे हैं। पर्यावरण संरक्षण में स्मार्ट सेंसर रेगिस्तान को हरा बना रहे हैं। राजस्थान का यह नया स्वरूप प्रेरणादायक है।

वर्तमान समय में परंपरा तकनीकी की जड़ें हैं, और तकनीकी परंपरा के पंख। दोनों मिलकर राजस्थान को विश्व गुरु बना सकते हैं। युवाओं को इस संगम को अपनाना चाहिए। यह नया राजस्थान सिर्फ राज्य नहीं, एक विचार है जहाँ अतीत और भविष्य एक साथ चलते हैं।

–अविनाश जोशी,
अतिथि संपादक
वरिष्ठ पत्रकार एवं कॉरपोरेट सलाहकार

राज्यपाल का अभिभाषण: विकसित राजस्थान की दिशा में सशक्त और सुनियोजित पहल

अभिभाषण में इस बात पर विशेष बल दिया है कि शासन की सफलता का वास्तविक पैमाना अंतिम पंक्ति में खड़े व्यक्ति के जीवन में आने वाला सकारात्मक परिवर्तन है

डॉ. अरुण चतुर्वेदी

सोलहवीं राजस्थान विधानसभा के पंचम सत्र में राज्यपाल द्वारा प्रस्तुत अभिभाषण राज्य के विकास, सुशासन और जनकल्याण के प्रति सरकार की प्रतिबद्धता का सशक्त प्रतिबिंब है। यह अभिभाषण प्रदेश की वर्तमान उपलब्धियों, नीतिगत प्राथमिकताओं और भावी दृष्टि का समग्र, तथ्यपरक और परिणामोन्मुख दस्तावेज है। इसमें स्पष्ट रूप से परिलक्षित होता है कि मुख्यमंत्री श्री भजनलाल शर्मा के नेतृत्व में राजस्थान सरकार सेवा, सुशासन और समावेशी विकास के मूल मंत्र को धरातल पर उतार रही है।

अभिभाषण में लोकतांत्रिक मूल्यों की गरिमा को रेखांकित करते हुए इस बात पर विशेष बल दिया गया है कि शासन की सफलता का वास्तविक पैमाना अंतिम पंक्ति में खड़े व्यक्ति के जीवन में आने वाला सकारात्मक परिवर्तन है। इसी दृष्टि के अनुरूप राज्य सरकार ने विगत दो वर्षों में प्रशासनिक पारदर्शिता, जवाबदेही और निर्णयों की गति को सुदृढ़ किया है। प्रतियोगी परीक्षाओं की पवित्रता सुनिश्चित करने के लिए एसआईटी के माध्यम से सख्त कार्रवाई की गई। परिणामस्वरूप पिछले दो वर्षों में पेपर लीक की एक भी घटना सामने नहीं आई। भर्ती प्रक्रियाओं में अनियमितताओं पर कठोर रुख अपनाते हुए 140 प्रकरणों में एफआईआर दर्ज कर 420 आरोपियों की गिरफ्तारी की गई, जिससे युवाओं के मन में विश्वास की पुनर्स्थापना हुई।

युवाओं के भविष्य को सुरक्षित और सशक्त बनाना राज्य सरकार की सर्वोच्च प्राथमिकताओं में रहा है। इसी संकल्प के साथ अब तक लगभग एक लाख युवाओं को सरकारी नियुक्तियाँ प्रदान की जा चुकी हैं, जबकि 1 लाख 54 हजार 547 पदों पर भर्ती प्रक्रिया प्रगति पर है। वर्ष 2026 के लिए एक लाख सरकारी पदों का भर्ती कैलेंडर जारी किया जाना इस बात का प्रमाण है कि सरकार अवसरों को योजनाबद्ध ढंग से सृजित कर रही है।

खेलों के क्षेत्र में भी राजस्थान ने नई पहचान बनाई है। खेलो इंडिया यूनिवर्सिटी गेम्स-2025 का सात शहरों में सफल आयोजन हुआ, जिसमें देशभर के 222 विश्वविद्यालयों के लगभग 7 हजार खिलाड़ियों ने भाग लिया। राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय स्तर पर उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले 49 खिलाड़ियों को 2 करोड़ 95 लाख रुपये की सहायता प्रदान कर राज्य ने प्रतिभाओं को प्रोत्साहित किया है।

शिक्षा के क्षेत्र में सरकार ने समान अवसर और गुणवत्तापूर्ण शिक्षा को केंद्र में रखते हुए व्यापक सुधार किए हैं। शिक्षा का अधिकार अधिनियम के अंतर्गत 2 लाख 37 हजार से अधिक विद्यार्थियों को निजी विद्यालयों में निःशुल्क प्रवेश दिलाया गया, जिसके लिए लगभग 996 करोड़ रुपये की प्रतिपूर्ति की गई। वहीं, सरकारी विद्यालयों में अध्ययनरत 66 लाख से अधिक विद्यार्थियों को यूनिफॉर्म एवं स्कूल बैग उपलब्ध कराने हेतु 482 करोड़ रुपये से अधिक की राशि डीबीटी के माध्यम से हस्तांतरित की गई।

विगत दो वर्षों में 185 नए महाविद्यालय भवनों का लोकार्पण, 71 नए महाविद्यालयों की स्थापना और 17 महाविद्यालयों का स्नातकोत्तर स्तर पर उन्नयन किया जाना राज्य की उच्च शिक्षा के प्रति प्रतिबद्धता को दर्शाता है। तकनीकी शिक्षा को भविष्य की आवश्यकताओं से जोड़ते हुए 21 नए पॉलिटेक्निक महाविद्यालय प्रारंभ किए गए तथा आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस एवं मशीन लर्निंग नीति लागू कर राजस्थान को तकनीकी नवाचार के अग्रणी राज्यों की श्रेणी में स्थापित करने की दिशा में ठोस कदम उठाए गए हैं।

कृषि एवं किसान कल्याण को राज्य की अर्थव्यवस्था की रीढ़ मानते हुए सरकार ने वित्तीय, संरचनात्मक और तकनीकी सहयोग को प्राथमिकता दी है। मुख्यमंत्री किसान सम्मान निधि योजना के अंतर्गत 71 लाख 79 हजार किसानों को लगभग 718 करोड़ रुपये का भुगतान किया गया। समर्थन मूल्य पर 21 लाख 37 हजार मीट्रिक टन गेहूं की खरीद कर किसानों को 320 करोड़ रुपये का बोनस दिया गया। इसके साथ ही, अल्पकालीन ब्याज मुक्त फसली ऋण के रूप में 78 लाख से अधिक लाभार्थियों को 44 हजार 355 करोड़ रुपये वितरित किए गए, जिससे किसानों की तात्कालिक जरूरतों की पूर्ति के साथ उनकी आय में स्थायित्व आया है।

महिला सशक्तिकरण और सामाजिक सुरक्षा के क्षेत्र में भी राज्य सरकार की पहलें प्रभावी सिद्ध हो रही हैं। 15 लाख 95 हजार महिलाओं को 'लखपति दीदी' श्रेणी में लाकर उन्हें आत्मनिर्भरता की दिशा में आगे बढ़ाया गया है। सामाजिक सुरक्षा पेंशन योजनाओं के अंतर्गत 91 लाख 73 हजार लाभार्थियों को 12 हजार 700 करोड़ रुपये का भुगतान सुनिश्चित किया गया। महिला उद्यमिता को बढ़ावा देने के लिए मुख्यमंत्री नारी शक्ति उद्यम प्रोत्साहन योजना के अंतर्गत 103 करोड़ रुपये के ऋण स्वीकृत किए गए हैं।

स्वास्थ्य सेवाओं के सुदृढ़ीकरण के लिए मुख्यमंत्री आयुष्मान आरोग्य योजना राज्य की पहचान बनकर उभरी है। इसके अंतर्गत 1 करोड़ 36 लाख परिवारों को 25 लाख रुपये तक का कैशलेस उपचार उपलब्ध कराया जा रहा है। विगत दो वर्षों में लगभग 37 लाख रोगियों को 7 हजार 300 करोड़ रुपये से अधिक का निःशुल्क उपचार प्रदान किया गया। राजस्थान ने अक्षय ऊर्जा के क्षेत्र में अग्रणी भूमिका निभाई है। फरवरी 2025 में 19 हजार 165 मेगावाट की अधिकतम बिजली मांग बिना कटौती के पूरी की गई, वहीं किसानों को 46 हजार 500 करोड़ रुपये की बिजली सब्सिडी प्रदान कर उन्हें सशक्त बनाया गया है।

समग्र रूप से अभिभाषण इस तथ्य को रेखांकित करता है कि राजस्थान सरकार ने विकास को ठोस क्रियान्वयन, मापनीय परिणामों और जन विश्वास से जोड़ा है। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा के नेतृत्व में प्रदेश विकसित भारत-विकसित राजस्थान के लक्ष्य की ओर तेज़ी से अग्रसर है। सुशासन, समावेशी विकास और दीर्घकालिक ओदृष्टि के साथ राजस्थान आज एक सशक्त, आत्मनिर्भर और समृद्ध भविष्य की ठोस आधारशिला रख चुका है।

–डॉ. अरुण चतुर्वेदी,
अध्यक्ष, राजस्थान वित्त आयोग

ऐसे तो ''विकसित भारत'' नहीं बनेगा

विकसित भारत यदि केवल बातों और नारों से हो जाता तो शायद भारत कभी का विकसित हो चुका होता

राजेन्द्र भाणावत

जब से प्रधानमंत्री मोदी ने 2047 तक भारत को आत्मनिर्भर और 'विकसित भारत' बनाने की बात कही है, सत्ता धारी दल के सभी नेताओं के भाषणों एवं सरकार की सभी योजनाओं में 'विकसित भारत' शब्द सम्मिलित हो गया है। इसका सबसे ताजा उदाहरण तो हाल ही में घोषित ''विकसित भारत-जी राम जी'' योजना है, जिसे नरेगा के स्थान पर लाया गया है।

विकसित भारत यदि केवल बातों और नारों से हो जाता तो शायद भारत कभी का विकसित हो चुका होता। इसी प्रकार का एक नारा 'गरीबी हटाओ' तत्कालीन प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी के द्वारा दिया गया था, किंतु गरीबी आज भी ज्यों की त्यों है तथा गरीब और अमीर के बीच खाई तो पहले से भी कहीं अधिक चौड़ी हो गई है।

सरकार के प्रयास भी भारत को विकसित बनाने की ओर दिखाई नहीं देते। यदि यही स्थिति रही तो यह सपना केवल सपना ही बनकर रह जाएगा और कभी साकार होकर धरातल पर नहीं उतरेगा। हम वर्तमान में किस प्रकार की प्राथमिकताएं तय कर रहे हैं और किस प्रकार की दिशा में जा रहे हैं, उसके लिए कुछ उदाहरण प्रस्तुत करना उपयुक्त होगा।

इंदौर को देश का सबसे स्वच्छ शहर कई बार घोषित किया जा चुका है। इसी इंदौर शहर में सीवर का दूषित पानी पीने से 27 लोगों की मौत हो चुकी है। उल्लेखनीय है कि इस क्षेत्र के निवासी लगभग आठ महीने से स्थानीय प्रशासन और जन प्रतिनिधियों को गंदा पानी आने की शिकायत कर रहे थे किंतु किसी ने इस पर ध्यान नहीं दिया। परिणामस्वरूप इसी मलमूत्र युक्त पानी को नागरिक पीते रहे और सैंकड़ों की संख्या में लोग बीमार हो कर अस्पतालों के आई सी यू में पहुंच गए। जब मामला मीडिया में बहुत चर्चित हुआ तब जाकर प्रशासन की आंख खुली और इस दिशा में कुछ कार्रवाई की गई। जो शहर लगातार देश में सबसे स्वच्छ शहर का इनाम प्राप्त कर रहा हो, वहां के मासूम नागरिकों को यदि गंदा पानी पीने के कारण काल कवलित होना पड़े तो यह विकसित भारत की दिशा में बढ़ता कदम तो कतई नहीं कहा जा सकता।

उत्तर प्रदेश के नोएडा में हाल ही में एक कार ऐसे खड्डे में गिर गई जहां 35 फीट पानी भरा हुआ था। यह खड्डा किसी भवन के बेसमेंट के निर्माण के लिए बनाया गया था और लगभग दो वर्षों से इस स्थिति में था । कोहरे के कारण दिखाई कम दे रहा था और कार चालक इस पानी में चला गया। यह 27 वर्षीय सॉफ्टवेयर इंजीनियर युवराज मेहता था जिसने हिम्मत रखकर डूबने से पहले कार के ऊपर खड़े होकर दो घंटे तक मोबाइल की रोशनी से लोगों का ध्यान अपनी ओर आकर्षित करने का प्रयास किया। उसने अपने पिता को अपनी लोकेशन भेज दी जिन्होंने फोन नंबर 112 पर सूचित भी कर दिया। जिला प्रशासन, पुलिस, फायर ब्रिगेड और एसडीआरएफ के सैंकड़ों लोगों के आने के बावजूद किसी ने उसे बचाने का प्रयास तक नहीं किया और मूक दर्शक बने रहे।

इसका कोई उत्तर प्रशासन के पास नहीं है कि केवल 15-20 किलोमीटर दूर हिंडन एयर बेस पर उपलब्ध हेलीकॉप्टर की मदद से उस युवक को बचाने की कोशिश क्यों नहीं की गई? जब किसी डूबते हुए युवक को आधुनिकतम तकनीक के सहारे सुशासन देने का दावा करने वाली उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा 2 घंटे तक नहीं बचाया जा सकता, तो विकसित भारत की बात करना बेमानी होगा। यही वह राज्य है जहां नोएडा के पास जेवर में विश्व स्तरीय हवाई अड्डा बनने की बात हो रही है। सरकार ने शायद यह समझ लिया है कि विश्वस्तरीय एयरपोर्ट बनाने, बुलेट ट्रेन चलाने से,आधुनिकतम भवन बनाने से, महंगी गाड़ियों में चलने से या बड़े-बड़े स्टेडियम बना देने से भारत विकसित हो जाएगा। सरकार को यह समझना होगा कि भारत विकसित तब होगा जब लोगों को शुद्ध वायु और पेयजल, गुणवत्तापूर्ण शिक्षा और स्वास्थ्य की सुविधा और योग्यता अनुसार रोजगार उपलब्ध हो।

जहां तक वायु प्रदूषण का सवाल है, स्थिति इतनी खराब है कि अंतरराष्ट्रीय प्रतियोगिता में भाग लेने वाले खिलाड़ी नेसल स्ट्रिप लगाकर बाहर निकल रहे हैं, ताकि कहीं बीमार ना पड़ जाएं। जिस देश की राजधानी का ए क्यू आई 800 तक हो जाए, वह देश कैसे विकसित कहला सकता है। निवेश लाने के लिए सरकार बड़े-बड़े दावे कर रही है और निवेशकों को लुभाने के लिए करोड़ों, अरबों रुपए खर्च भी करती है, किंतु यह भूल जाती है की मूलभूत सुविधाओं के अभाव में कोई भी विदेशी निवेशक यहां आकर निवेश करना उचित नहीं समझेगा। बाहर के लोग जब यहां आकर सांस तक न ले पाएं, पीने का साफ पानी तक ठीक से न मिल पाए, तो वहां आएंगे ही क्यों?

भारतीय मूल की गीता गोपीनाथ, जो इंटरनेशनल अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष की उप प्रबंध निदेशक रह चुकी हैं और वर्तमान में हार्वर्ड में प्रोफेसर हैं, ने दावोस में आयोजित होने वाले वर्ल्ड इकनोमिक फोरम में बातचीत करते हुए यह स्पष्ट रूप से कहा कि भारत में निवेश तब ही आएगा जब भारत सरकार प्रदूषण की गंभीर स्थिति के संबंध में प्रभावी कार्रवाई करे।

गीता गोपीनाथ ने इंडिया टुडे ग्रुप की मालकिन कली पूरी से यह बात कही जब उनसे भारत में अच्छे होते ईज ऑफ डूइंग बिज़नेस के संबंध में पूछा गया। उन्होंने कहा कि भारत में प्रतिवर्ष लगभग 18 लाख लोग केवल प्रदूषण के कारण मरते हैं। यह स्वीकार्य नहीं है। उनके अनुसार ''इज़ ऑफ डूइंग बिजनेस'' का कोई अर्थ नहीं है यदि देश में शुद्ध वायु तक उपलब्ध नहीं है। आप कितने ही लाल कालीन विदेशियों के लिए भारत आने पर क्यों न बिछा दें, हवा में इतनी गंदगी है कि कोई भी व्यक्ति भारत आने से पहले 10 बार सोचेगा। जो बातें भारतीय मूल की गीता गोपीनाथ ने कही हैं उनको सरकार को बड़ी गंभीरता से लेना चाहिए और उन पर रक्षात्मक रूप अपनाने के बजाय उस दिशा में कार्रवाई करनी चाहिए। समय आ गया है जब नेता गणों को केवल अपने और अपने परिवार की सुख सुविधा पर ध्यान देने की बजाय उन्हें साधारण जनता की सुविधा को बेहतर करने और उनके जीवन को सरल बनाने की दिशा में प्रयास करने होंगे। यदि यहां के जन प्रतिनिधि और अधिकारी गण स्वयं को जनता का मालिक मानते रहे तो कभी भी देश न तो आत्मनिर्भर हो पाएगा और ना ही वह विकसित भारत बनने की ओर अग्रसर हो पाएगा। अतः यदि भारत सरकार चाहती है कि देश में प्रगति हो, औद्योगीकरण बढे और बाहर से निवेश आए तो उसे पहले वायु और जल प्रदूषण को नियंत्रित करने को सर्वोच्च प्राथमिकता देनी होगी। भारतीय मूल की एक प्रख्यात प्रोफेसर का दावोस में विदेशी समुदाय के समक्ष इस प्रकार की बात कहना भारत सरकार को आईना दिखाने के समान है।

नगरीय प्रशासन व्यवस्था लगभग ठप्प है। महानगरों में रहने वाली आबादी का लगभग 40 प्रतिशत नारकीय जीवन जी रहा है । दिल्ली में संसद भवन से केवल 40-50 किलोमीटर दूर किराड़ी जैसी अनेक बस्तियां हैं जहां लोगों को प्रतिदिन एक फुट सीवर के पानी के कीचड़ में पांव रखकर अपने घरों में जाना पड़ता है। इस क्षेत्र के वीडियो सोशल मीडिया में प्रतिदिन देखने को मिलते हैं जिन्हें देखकर स्वयं को भारतीय कहने पर शर्म आने लगती है। विकसित होने की बात करने से पहले हमें यहां के नागरिकों को कम से कम मनुष्य के लिए जीने लायक व्यवस्था तो उपलब्ध करानी होगी।

सरकार भले ही सोमनाथ में स्वाभिमान पर्व और अयोध्या में भगवान राम की प्राण प्रतिष्ठा की द्वितीय वर्षगांठ मनाने में लोगों को लगा दे, किंतु इससे लोगों का जीवन बेहतर नहीं होता। आप किसी भी शहर में चले जाइए, कूड़े के ढेर, गंदे पानी से अटी सड़कें, जर्जर स्कूल और बिना चिकित्सक के अस्पताल मिल जाएंगे। रोजगार का हाल यह है कि स्नातक और तकनीकी शिक्षा प्राप्त लोग भी डिलीवरी बॉयज़ की तरह काम करने के लिए मजबूर हैं।

विकसित भारत का नमूना हाल ही में हमें देखने को मिला जब प्रधानमंत्री के गृह राज्य गुजरात के प्रमुख शहर सूरत में 21 करोड़ की लागत से बनी नई पानी की टंकी, जिसकी क्षमता 11 लाख लीटर की थी, 9 लाख लीटर के पानी का वजन भी नहीं सह सकी और पहली बार में ही ढह कर जमीन पर गिर गई। क्या इस पर व्यय हुए 21 करोड़ किसी अधिकारी से वसूल होंगे ?

विकसित भारत तभी बनेगा जब लोगों को धर्म, जाति के प्रपंचों में उलझाए रखने और उन्हें तथाकथित इतिहास की गौरव गाथा का गुणगान करने में व्यस्त रखने के बजाय उनकी वर्तमान ज्वलंत समस्याओं की ओर ध्यान दिया जाए। शिक्षित और वैज्ञानिक सोच वाले समाज के अभाव में विकसित भारत की कल्पना करना संभव नहीं है। सरकार ने विकास का अर्थ उत्कृष्टता के टापू बनाना ही मान लिया है । यह विकसित भारत की दिशा में बढ़ता हुआ कदम नहीं कहा जा सकता ।

जहां शहरों के फुटपाथ अनुपयोगी वाहनों से भरे पड़े हों, सड़कों पर सरकारी भूमि पर अतिक्रमण करना जैसे लोगों का जन्म सिद्ध अधिकार हो, वह भारत विकसित कैसे बनेगा? जहां अंधविश्वास, लोगों को कदम कदम पर परोसा जाता हो, बाबाओं को 'जेड' श्रेणी की सुरक्षा दी जाती हो और आम जनता को वाहनों के नीचे कुचले जाने के लिए छोड़ दिया जाता हो, उसे हम विकसित भारत कैसे कहेंगे?

अशिक्षित, बीमार, बेरोजगार और असुरक्षित नागरिकों के भारत को कभी भी विकसित भारत नहीं कहा जाएगा, न ही उस भारत को विकसित कहा जाएगा, जहां शुद्ध पेयजल उपलब्ध न हो, शहरों में गंदगी के ढेर लगे हों और जहां कानून का राज नहीं हो। विकसित भारत बनाने के लिए सरकार को अपनी प्राथमिकताओं का उपरोक्तानुसार पुनर्निर्धारण करना होगा ताकि सही दिशा में तेजी से अग्रसर हो सके।

-राजेन्द्र भाणावत, (पूर्व आई.ए.एस. अधिकारी)

राशिफल

पंडित अनिल शर्मा

शुक्रवार 30 जनवरी, 2026

माघ मास, शुक्ल पक्ष, द्वादशी तिथि, शुक्रवार, विक्रम संवत 2082, आर्द्रा नक्षत्र रात्रि 3:27 तक, वैधृति योग सायं 4:58 तक, बालव करण दिन 11:10 तक, चन्द्रमा आज मिथुन राशि में संचार करेगा।

गृह स्थितिः सूर्य-मकर, चन्द्रमा-मिथुन, मंगल-मकर, बुध-मकर, गुरू-मिथुन, शुक्र-मकर, शनि-कुम्भ, राहु-कुम्भ, केतु-सिंह

आज सर्वार्थ सिद्धि योग रात्रि 3:27 से सूर्योदय तक है। रवियोग रात्रि 3:27 से आरम्भ होगा। आज प्रदोष व्रत, वैधृति पुण्यं, कल्पादि है।

श्रेष्ठ चौघड़ियाः चर सूर्योदय से 8:38 तक, लाभ-अमृत 8:38 से 11:19 तक, शुभ 12:40 से 2:01 तक, चर 4:42 से सूर्यास्त तक।

राहूकालः 10:30 से 12:00 तक। सूर्योदय 7:18, सूर्यास्त 6:03

मेष
परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे। व्यक्तिगत प्रयासों से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। प्रतिष्ठित व्यक्ति से संपर्क बन सकता है। व्यावसायिक सफलता से मनोबल बढ़ेगा।

वृष
आर्थिक कारणों से अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक कार्यों में व्यस्तता बनी रहेगी। चलते कार्यों में प्रगति होगी।

मिथुन
नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। व्यावसायिक अड़चनें दूर होने लगेंगी। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

कर्क
व्यक्तिगत परेशानियों के कारण मन में असंतोष बना रहेगा। घर-गृहस्थी के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि हो सकती है। समय अनर्गल कार्यों में खराब हो सकता है। स्वास्थ्य का ध्यान रखें।

सिंह
आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। व्यावसायिक कार्यों के संबंध में शुभ संदेश प्राप्त होंगे। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

कन्या
व्यावसायिक कार्यों के संबंध में उचित सोच-विचार हो सकता है। नौकरीपेशा व्यक्तियों का प्रभाव-प्रभुत्व बढ़ेगा। उच्चाधिकारियों से सहयोग मिलेगा। धार्मिक कार्यों में भाग ले सकते हैं।

तुला
व्यावसायिक कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। परिवार में अतिथियों का आगमन बना रहेगा।

वृश्चिक
अपनी कार्य योजना को सीमित रखें। चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। आवश्यक कार्यों में विलम्ब होने का भय है। बनते कार्य बिगड़ सकते हैं। यात्रा में परेशानी हो सकती है।

धनु
परिवार में धार्मिक-सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। आपसी सहयोग-समन्वय से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है।

मकर
विवादित मामलों से राहत मिल सकती है। अस्त-व्यस्त दिनचर्या में सुधार होगा। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

कुंभ
परिवार में शुभ-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। महत्वपूर्ण कार्य योजना का क्रियान्वयन हो सकता है। घर-परिवार में मनोरंजन के कार्यक्रम बन सकते हैं।

मीन
व्यावसायिक कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा। चलते कार्यों में प्रगति होगी। नवीन कार्यों में आ रही अड़चनें दूर होने लगेंगी। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

परीक्षा में सफलता कैसे हासिल करें विषय पर सेमिनार

बीकानेर। राजकीय डूंगर महाविद्यालय के उर्दू विभाग में ' 'परीक्षा में सफलता कैसे हासिल करे' विषय पर एक छात्र सेमीनार का आयोजन किया गया।

कार्यक्रम में विभागाध्यक्ष डॉ. असमा मसूद ने विश्वविद्यालय की आगामी परीक्षाओं के बी.ए. उर्दू एवं एम.ए.उर्दू के सभी सेमेस्टर के पाठयक्रम और परीक्षा प्रश्न पत्रों के पैटर्न को विस्तार से समझाया। विभाग की सहायक आचार्य डॉ. फखरुन्निशा बानो ने छात्र छात्राओं को प्रश्न पत्र हल करने के संबंध में जानकारी दी एवं असाइनमेंट फाइल तैयार करने का विधि बताई । सेमीनार में एम.ए. के छात्र राजा हसन ने भी अच्छे अंक प्राप्त करने के अपने प्रयासों को साझा किया। सेमीनार में उर्दू विभाग के बड़ी संख्या में छात्र छात्राओं ने भाग लिया।

फाग उत्सव की तैयारियों ने बांधा समां

बीकानेर, श्री खाटू श्याम मंदिर में जया एकादशी के पावन अवसर पर श्रद्धालुओं का तांता लगा रहा। अलसुबह से ही बाबा श्याम के दर्शन के लिए भक्तों की लंबी कतारें देखने को मिलीं। बसंत ऋतु के आगमन का असर मंदिर परिसर में स्पष्ट रूप से नजर आया, जहाँ श्रद्धालु लाल और पीले गुलाबों के साथ बाबा के दर्शन करने पहुंचे। भक्तों ने श्रद्धा और आस्था के साथ बाबा श्याम के चरणों में पुष्प अर्पित किए। मंदिर परिसर भक्ति भाव, जयकारों और श्याम नाम के संकीर्तन से गूंज उठा। इस पावन अवसर पर मंदिर के ट्रस्टी गणों द्वारा आगामी फाग उत्सव की भव्य तैयारियाँ भी प्रारंभ कर दी गई हैं, जिससे भक्तों में विशेष उत्साह देखने को मिल रहा है। मंदिर ट्रस्ट के अनुसार फाग उत्सव के दौरान कई दिवसीय धार्मिक एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किए जाएंगे। इनमें बाबा का फाग उत्सव, भक्ति भजनों की प्रस्तुति, बाबा का भंडारा, चंग पर धमाल, फूलों की होली सहित अनेक आकर्षक आयोजन शामिल होंगे। भक्ति संगीत और रंगों की छटा से मंदिर परिसर भक्तिरस में सराबोर रहेगा। विशेष रूप से दिल्ली से प्रतिदिन ताजे फूल मंगाकर बाबा श्याम का भव्य श्रृंगार किया जाएगा। बाबा के श्रृंगार की सेवा चेतन शर्मा एवं किशन शर्मा द्वारा की जाएगी।

फूलों से की जाने वाली होली भक्तों के लिए विशेष आकर्षण का केंद्र रहेगी। फाग उत्सव के दौरान महिलाओं की विशेष सहभागिता भी देखने को मिलेगी। परंपरा के अनुसार महिलाएं लाल और पीली साड.ियों में सुसज्जित होकर बाबा श्याम की हाजिरी लगाएंगी और श्रद्धा भाव से दर्शन करेंगी। मंदिर परिसर में बसंत के रंग और भक्ति का अनूठा संगम देखने को मिलेगा।मंदिर ट्रस्ट के अध्यक्ष के.के. शर्मा सहित ओम जिंदल, बृजमोहन जिंदल, सुरेश अग्रवाल सहित अनेक कार्यकर्ता एवं सेवाभावी सदस्य इस आयोजन में अपनी सेवाएं अर्पित करेंगे। इस अवसर पर मंदिर को विशेष रूप से सजाया जाएगा तथा पूरे मंदिर एवं गर्भगृह को इत्र की सुगंध से महकाया जाएगा। मंदिर प्रशासन के अनुसार फाग उत्सव के दौरान बड़ी संख्या में श्रद्धालुओं के पहुंचने की संभावना है। सुरक्षा, व्यवस्था और सुविधाओं को लेकर विशेष तैयारी की जा रही है।

ताकि भक्तों को सुगम दर्शन और आध्यात्मिक आनंद प्राप्त हो सके।जया एकादशी और फाग उत्सव के पावन अवसर पर श्री खाटू श्याम मंदिर एक बार फिर भक्ति, रंग और उल्लास का केंद्र बनने जा रहा है, जहाँ बाबा श्याम के जयकारों के साथ श्रद्धालु आस्था और आनंद के रंगों में डूबे नजर आएंगे।

कुष्ठ रोग के प्रति भ्रांतियों के खिलाफ चलेगा 'स्पर्श' अभियान

बीकानेर, । राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के निर्वाण दिवस को चिकित्सा एवं स्वास्थ्य विभाग कुष्ठ निवारण दिवस के रूप में मनाएगा। प्रातः 11 बजे 2 मिनट मौन रखकर बापू द्वारा कुष्ठ रोगियों के कल्याण के लिए किए गए प्रयासों को याद किया जाएगा। सीएमएचओ डॉ पुखराज साध ने बताया कि गुरुवार को जिला कलक्टर श्रीमती नम्रता वृष्णि द्वारा कुष्ठ रोग के प्रति जागरूकता हेतु अपना संदेश प्रसारित किया जाएगा। विद्यार्थियों व आमजन के साथ संगोष्ठी, रैली आदि गतिविधियां कर कुष्ठ रोग के प्रति जागरूकता हेतु 'स्पर्श' जागरूकता अभियान शुरू किया जाएगा। स्पर्श कुष्ठ रोग जागरूकता पखवाड़ा 13 फरवरी तक चलेगा। राष्ट्रीय कुष्ठ रोग निवारण कार्यक्रम के जिला नोडल अधिकारी तथा डिप्टी सीएमएचओ स्वास्थ्य डॉ लोकेश गुप्ता ने बताया कि इस वर्ष अभियान की थीम है 'कलंक का अंत और गरिमा की सुनिश्चितता'। पखवाड़े के दौरान गांवों में विशेष ग्राम सभाओं का आयोजन कर कुष्ठ रोग के प्रति भ्रांतियां को दूर किया जाएगा।

भागवत कथा में कलश यात्रा निकाली

नोखा, यहा जसरासर में आज से 4 फरवरी तक संगीतमय श्रीमद् भागवत कथा ज्ञान यज्ञ का आयोजन किया जा रहा है। यह आयोजन नायकों की धर्मशाला के पास स्थित पाबूजी महाराज के मंदिर के प्रांगण में हो रहा है। श्री डूंगरगढ़ के खेताराम जी शास्त्री बापेऊ से कथा का सुन पाएंगे। कथा का शुभारंभ गुरुवार को ब्राह्मणी माता मंदिर के प्रांगण से हुआ। यहां से दोपहर 12 बजकर 15 मिनट पर कथा स्थल तक एक भव्य शोभायात्रा कलश यात्रा निकाली गई। इस यात्रा में बड़ी संख्या में माता बहनों ने भाग लिया, जिससे क्षेत्र में भक्तिमय वातावरण बन गया।श्रीमद् भागवत कथा प्रतिदिन दोपहर 12 बजकर 15 मिनट से शाम 4 बजकर 15 मिनट तक चलेगी। कथा के समापन के बाद 5 फरवरी को हवन का आयोजन किया जाएगा। धार्मिक मान्यताओं के अनुसार श्रीमद् भागवत कथा को मनुष्य को सद्मार्ग की ओर प्रेरित करने वाली पवित्र कथा माना जाता है।आयोजकों का मानना है कि इस आयोजन से क्षेत्र में भक्तिमय वातावरण बनेगा और श्रद्धालु बड़ी संख्या में पहुंचकर धर्म लाभ अर्जित करेंगे। आयोजकों ने सभी धर्मप्रेमी लोगों से कथा में शामिल होकर पुण्य लाभ लेने की अपील की है।इस अवसर पर राधा कृष्ण ज्यानी, हुकमा राम तरड़, सोहनलाल छिपा, रुपाराम अचारी, हेमाराम मेघवाल, भागीरथ अचारी, हरजी राम नायक, चेनाराम छिपा, चंदू राम नायक, धर्माराम छिपा, लक्ष्मी नारायण तरड़, बाबूलाल छिपा सहित गांव के कई गणमान्य लोग मौजूद रहे। कवि सुरेश कुमरा ने गणेश वंदना प्रस्तुत कर सभी का मन मोह लिया।के हित में आवश्यक निणर्य समयबद्ध रूप से लिए जाएं यह सुनिश्चित करने के लिए अधिक समन्वय से काम किया जाए। सहायक महानिदेशक शर्मा ने डिजिटल माध्यम से बैठक में शामिल होकर अपनी बात रखी। बैठक में अनुसंधान निदेशक डॉ विजय प्रकाश , प्रसार शिक्षा निदेशक डॉ दीपाली धवन, अधिष्ठाता सामुदायिक विज्ञान महाविद्यालय डॉ वीर सिंह, परीक्षा नियंत्रक डॉ आर एस राठौड़ सहित सभी डीन डायरेक्टर्स और अन्य सदस्य उपस्थित रहे।

करुणा इण्टरनेशनल, बीकानेर का वार्षिक अधिवेशन

बीकानेर । करुणा इण्टरनेशनल संस्था, बीकानेर का वार्षिक अधिवेशन ी, को प्रातः 10:30 बजे गंगाशहर स्थित टी. एम. ऑडिटोरियम में समारोह पूर्वक आयोजित किया जाएगा। इस आयोजन के समन्वयक गिरिराज खैरीवाल ने बताया कि समारोह में पर्यावरण संरक्षण जागरूकता, जीव दया, अहिंसा, करुणा, राष्ट्र भक्ति, नशामुक्ति, शाकाहार इत्यादि क्षेत्रों उत्कृष्ट कार्य करने वाले विद्यालयों को सम्मानित किया जाएगा। संस्था के अध्यक्ष मेघराज बोथरा ने बताया कि बताया कि इस दौरान लगभग 100 करुणा क्लब्स स्कूल्स के प्रधानाध्यापक एवं करुणा क्लब प्रभारी को भी सम्मानित किया जाएगा।

■ **उत्कृष्ट कार्य करने वाले कल्ब्स को अवार्ड मिलेगा**

संस्था के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष जतनलाल दूगड़ के मुताबिक इस वर्ष नवाचार करते हुए उपस्थित प्रत्येक विद्यालय के करुणा क्लब के अध्यक्ष एवं सचिव का भी सम्मान किया जाएगा। उन्होंने बताया कि कक्षा 4 से लेकर आगे की कक्षाओं में अध्ययनरत विद्यार्थियों को ही करुणा क्लब के पदाधिकारियों का दायित्व दिया जाता है। इन्हीं पदाधिकारियों में से अध्यक्ष एवं सचिव का सम्मान किया जाएगा।

संस्था के सचिव राजेश रंगा ने बताया कि करुणा इण्टरनेशनल संस्था के उद्देश्यों के अनुसार कार्य करने वाले 11 श्रेष्ठ विद्यार्थियों को दयावान अवार्ड देकर सम्मानित किया जाएगा। इन विद्यार्थियों को स्मृति चिन्ह एवं प्रमाण पत्र दिया जाएगा। संस्था के शिक्षा अधिकारी घनश्याम साध के मुताबिक पिछले दिनों हुई नशा मुक्त जीवन – सुखद – संपन्न जीवन पोस्टर प्रतियोगिता के अव्वल विद्यार्थियों को भी पुरस्कृत किया जाएगा। उन्होंने बताया कि दो वर्गों में आयोजित हुई इस प्रतियोगिता में नगर की 21 स्कूल्स के सैंकड़ों विद्यार्थियों ने प्रतिभागिता की। प्रत्येक विद्यालय से प्रति वर्ग प्रथम व द्वितीय स्थान प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों को पुरस्कृत किया जाएगा। संस्था के कोषाध्यक्ष भैंरूदान सेठिया ने बताया कि इस कार्यक्रम में बीकानेर (पश्चिम) के विधायक जेठानंद व्यास, जिला शिक्षा अधिकारी (प्रारंभिक एवं माध्यमिक) किशन दान चारण, स्काउट व गाइड के बीकानेर सीओ जसवंत सिंह राजपुरोहित एवं समाजसेवी जयचंद लाल डागा एवं विनोद बाफना को अतिथियों के रूप में आमंत्रित किया गया है।

यातायात नियमों के प्रति किया जागरूक

बीकानेर राजकीय डूंगर महाविद्यालय की एन एस एस इकाई द्वारा एक दिवसीय कैम्प के दौरान राज्य परिवहन विभाग से ज्योति स्वामी सहायक प्रोग्रामर ने सड़क सुरक्षा के बारे में बताते हुए विद्यार्थियों को यातायात नियमों के प्रति जागरूक करने के उद्देश्य से रोड सेफ्टी निबंध, मेहंदी और पोस्टर प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का संयोजन डॉ घनश्याम बिठू समन्वयक एन एस एस डूंगर कॉलेज इकाई के निर्देशन में तथा सहायक प्रोग्रामर ज्योति स्वामी के समन्वय में किया गया, जिसमें चंचल पंवार एवं मानसी कच्छावा, निशांत के सहयोग से सभी प्रतियोगिताएँ सुव्यवस्थित रूप से संपन्न हुईं। प्रतियोगिताओं में विद्यार्थियों ने सड़क सुरक्षा, हेलमेट व सीट बेल्ट के उपयोग, यातायात संकेतों के पालन तथा सुरक्षित सड़क व्यवहार जैसे विषयों पर अपनी रचनात्मकता और समझ का उत्कृष्ट प्रदर्शन किया।

दस साल में सीवरेज का पानी नहीं ले पाई बिजली परियोजना

बीकानेर, यहा गंदे पानी से घरों को रोशन करने का मामला अभी नियमों की पेचीदगियों में उलझा है। केन्द्र और राज्य सरकार की अलग-अलग पॉलिसी में उलझने के कारण ना तो नेवेली अब तक कोई निणर्य कर पाया और ना ही निगम पीछे हटने को तैयार है। इसलिए नगर निगम सुजानदेसर ट्रीटमेंट प्लांट से नेवेली को पानी साफ करके देना तो चाहता है मगर उसके ना लेने के कारण 20 एमएलडी साफ पानी ऑक्सीजन पार्क में दिया जा रहा है। दरअसल 2016 में केन्द्र सरकार ने नीति बनाई कि महानगरों और शहरों में सीवरेज के पानी को बिजली परियोजना में काम में लिया जा सके। इससे दो काम एक साथ होंगे। पहला गंदे पानी का उपयोग और दूसरा पीने के पानी की बचत होगी क्योंकि अभी बिजली परियोजनाएं पीने के पानी को ही परियोजनाओं में उपयोग कर रही हैं। नेवेली प्रशासन ने प्रस्ताव दिया था कि एसटीपी प्लांट से पाइप लाइन के सहारे पानी ले जाएगी। इसके लिए निगम और नेवेली के बीच एक दौर की बातचीत हो चुकी थी। निगम ने पाइप लाइन बिछाने के लिए एक डीपीआर सौंपी थी। उसके बाद नेवेली को यह तय करना है कि निर्धारित तीन में से किस रूट से पानी ले जाए, जिससे उसकी लागत कम हो।

■ **केंद्र और राज्य सरकार के अलग-अलग नियमों में फंसा निर्णय**

2019 में नगर निगम ने नेवेली को केन्द्र सरकार के आदेशों का हवाला देते हुए पानी के उपयोग के लिए पत्र लिखा था। नेवेली ने वल्लभ गार्डन के एसटीपी सेंटर से पानी ले जाने के लिए डिटेल प्रोजेक्ट रिपोर्ट बनाई थी, मगर उसमें खर्चा 200 करोड़ रुपए आंका गया। नेवेली को खर्चा ज्यादा लगा, इसलिए बात वहीं रुक गई। कुछ समय पहले कलेक्टर की मौजूदगी में भी मीटिंग हुई और कलेक्टर ने भी राज्य सरकार के ही नियमों की पालना करने के लिए कहा। नेवेली पैसे देकर पानी नहीं लेना चाहती और इसी कारण बातचीत रुक गई। निगम बिना मेंटीनेंस खर्च के पानी देना नहीं चाहता क्योंकि राज्य सरकार ने मेंटीनेंस खर्च लेने का प्रावधान किया हुआ है। सुजानदेसर में 20 एमएलडी के बाद 12 एमएलडी का एक और प्लांट लगेगा। 32 एमएलडी पानी का निगम उपयोग कर नहीं पाएगा इसलिए अगर नेवेली ने पानी नहीं लिया तो वल्लभगार्डन की तरह यहां भी निगम गंदे पानी को बेचकर कमाई करेगा। पानी साफ कर किसानों को सिंचाई या दूसरे कामों के लिए पानी बेचने के लिए निविदाएं तैयार की जा रही हैं। हालांकि यह काम प्राइमरी लेवल पर है क्योंकि 20 एमएलडी पानी सिंचाई के लिए बहुत कम है। इससे करीब 100 से 200 हेक्टेयर तक ही सिंचाई हो सकती है। सुजानदेसर में नगर निगम की 300 बीघा के आसपास जमीन है। अगर नेवेली और निगम के बीच सहमति बनती भी है तो नेवेली को पानी ले जाने के लिए कुछ उपकरण लगाने होंगे। उसके लिए जमीन किराए पर लेनी होगी। फिलहाल नेवेली इंदिरा गांधी नहर से 25 क्यूसेक पानी ले रही है, जिससे बिजली बनने के साथ कूलिंग व अन्य प्रोसेस में लिया जाता है।

विभिन्न स्थानों पर 31 को ग्राम उत्थान शिविर लगेगा

बीकानेर, । राज्य सरकार के निर्देशानुसार 23 जनवरी से 'समृद्ध किसान, सशक्त राजस्थान' थीम पर अब तक 25 ग्राम उत्थान शिविरों का आयोजन किया जा चुका है। इसी श्रृंखला में 31 जनवरी को विभिन्न स्थानों पर शिविर आयोजित किए जाएंगे। कृषि विभाग के संयुक्त निदेशक मदनलाल ने बताया कि मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा के नेतृत्व में राज्य सरकार शीघ्र ही 'ग्लोबल राजस्थान एग्रीटेक मीट (ग्राम)-2026' का आयोजन करने जा रही है। ग्राम में प्रगतिशील किसानों और पशुपालकों की सहभागिता सुनिश्चित कर उन्हें विभिन्न कल्याणकारी योजनाओं का लाभ देने के लिए प्रदेश के प्रत्येक गिरदावर सर्किल पर 23 जनवरी से ग्राम उत्थान शिविरों का आयोजन किया जा रहा है। जिले के 77 गिरदावर सर्कल्स पर ग्राम उत्थान शिविरों का आयोजन 9 फरवरी तक किया जाना है। अब तक इनमें से 25 ग्राम उत्थान शिविरों का आयोजन किया जा चुका है। मदन लाल ने बताया कि शनिवार को कानासर, खिन्दासर, शेखसर, हिम्मटसर, खारबारा, अमरपुरा, बापेऊ, बाडेला में आयोजित किए जाएंगे। उन्होंने बताया कि जिला कलक्टर ने किसानों को विभागीय योजनाओं की जानकारी देने व अधिकाधिक संख्या में लाभान्वित करने के निर्देश दिए हैं। इसके लिए व्यापक प्रचार-प्रसार के लिए निर्देशित किया है। उद्यानिकी विभाग के सहायक निदेशक मुकेश गहलोत ने बताया कि ग्राम उत्थान शिविरों में किसानों को कृषि, उद्यानिकी, कृषि विपणन, डेयरी, पशुपालन, मत्स्य पालन, सहकारिता, जल संसाधन, ऊर्जा, उद्योग, ग्रामीण विकास एवं पंचायती राज सहित 12 विभागों की विभिन्न कल्याणकारी योजनाओं की जानकारी दी जा रही है। साथ ही तारबंदी, डिग्गी, पाइपलाइन, फार्म पौण्ड, बैलों से खेती योजना के तहत प्रोत्साहन राशि की जानकारी व स्वीकृतियां सॉइल हेल्थ कार्ड वितरण, बीज मिनिकिट वितरण का सत्यापन करने के साथ ही फव्वारा एवं ड्रिप, प्लास्टिक मल्च, पाली हाउस, सौर पम्प संयंत्र आदि की जानकारी, स्वीकृतियां और मुख्यमंत्री कृषक साथी सहायता योजना के आवेदनों का निस्तारण किया जा रहा है।

इस दौरान वीबी जी-राम-जी योजना का व्यापक प्रचार-प्रसार और पंडित दीनदयाल उपाध्याय गरीबी मुक्त गांव योजना का सर्वे कार्य पूरा किया जा रहा है। स्वामित्व कार्डों का वितरण, नहरों एवं खालों की मरम्मत की आवश्यकताओं का चिन्हीकरण, प्रधानमंत्री सूर्यघर मुफ्त बिजली योजना के तहत पंजीकरण एवं युवा स्वरोजगार योजना सहित अन्य कार्य किए जा रहे हैं।

नापासर में वीर तेजाजी महाराज की जयंती पर उमड़े श्रद्धालु

नापासर, यहा जाटबास स्थित श्री वीर तेजाजी महाराज मंदिर में गुरुवार को सत्यवादी गौभक्त वीर तेजाजी महाराज का जन्मोत्सव श्रद्धा और उल्लास के साथ मनाया गया। इस अवसर पर धार्मिक अनुष्ठानों का आयोजन किया गया और एक भव्य महारैली निकाली गई। जिसमें बड़ी संख्या में श्रद्धालुओं ने भाग लिया।प्रातःकाल मंदिर परिसर में विशेष पूजा-अर्चना, हवन और अन्य धार्मिक अनुष्ठान संपन्न हुए। इनमें बड़ी संख्या में श्रद्धालुओं ने हिस्सा लिया और वीर तेजाजी महाराज से क्षेत्र की खुशहाली की कामना की। जन्मोत्सव के उपलक्ष्य में सुबह करीब 11.15 बजे मंदिर परिसर से एक भव्य महारैली निकाली गई। इस महारैली में डीजे, सुसज्जित रथ, ऊंट, ट्रैक्टर और अन्य वाहन शामिल थे।

भक्तजन जयकारों और भजनों की धुन पर नाचते-गाते हुए मुख्य मार्गों से गुजरे, जिससे पूरा कस्बा भक्तिमय वातावरण में रंग गया। ग्रामीणों और दुकानदारों ने जगह-जगह पुष्पवर्षा कर महारैली का स्वागत किया।आयोजन समिति के अनुसार, इस महारैली में समाज के सभी वर्गों की भागीदारी रही, जिसमें युवाओं के साथ-साथ बुजुर्ग भी श्रद्धा भाव से शामिल हुए।

इस आयोजन से आपसी भाईचारे और सामाजिक एकता का संदेश दिया गया। कार्यक्रम के समापन पर आयोजकों ने सभी श्रद्धालुओं का आभार व्यक्त किया और वीर तेजाजी महाराज के आदर्शों पर चलने का आ ान किया।महारैली के बाद मंदिर परिसर में महाप्रसाद का आयोजन किया गया, जिसमें सभी भक्तों ने प्रसाद ग्रहण किया।महात्मा गांधी के निर्वाण दिवस को कुष्ठ रोग निवारण दिवस के रूप में मनाएगा स्वास्थ्य

श्रीगंगानगर में कोहरे और बारिश का अलर्ट

श्रीगंगानगर, जिले में एक बार फिर से मौसम बदल गया है। बारिश और घने कोहरे के बाद आज मौसम ड्राई बना हुआ है और धूप निकली है। साथ ही ठंडी हवाएं चल रही है।अगले दो दिन तक जिलेभर में ऐसा ही मौसम बना रहने की संभावना है। 31 जनवरी को जिले में बारिश का येलो अलर्ट जारी किया गया है। मौसम राडार स्टेशन, श्रीगंगानगर पर गुरुवार सुबह न्यूनतम तापमान 7.3 डिग्री रिकार्ड किया गया। यहां न्यूनतम तापमान 7.7 डिग्री और अधिकतम तापमान 20.1 डिग्री रिकार्ड किया गया। वहीं, मंगलवार को यहां न्यूनतम तापमान 10.9 डिग्री और अधिकतम तापमान 18.5 डिग्री रिकार्ड किया गया था। मौसम वैज्ञानिकों के अनुसार राजस्थान के पश्चिमी भागों में मौसम ड्राई बना हुआ है जिसके कारण ठंड पड़ रही है। मौसम विभाग ने 31 जनवरी को जिले में घने कोहरे का अलर्ट भी जारी किया है। मौसम ड्राई बना रहने से सरसों की फसल को नुकसान की आशंका है। जिससे उत्पादन कम होगा।

बैठक में विभिन्न प्रस्तावों का अनुमोदन

बीकानेर , । स्वामी केशवानंद राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय की अकादमिक परिषद की 65 वी बैठक गुरुवार को कुलगुरु प्रोफेसर डॉ राजेंद्र बाबू दुबे की अध्यक्षता में आयोजित की गई। कुलगुरु सचिवालय सभागार में आयोजित इस बैठक में परिषद के मनोनीत सदस्य डॉ बी एल छींपा , भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद सहायक महानिदेशक एस के शर्मा, विश्वविद्यालय के रजिस्ट्रार डॉ देवाराम सैनी सहित सभी डीन डायरेक्टर्स उपस्थित हुए।

बैठक में पूर्व में आयोजित एकेडमी परिषद की बैठक की एक्शन टेकन रिपोर्ट का अनुमोदन किया गया।

विश्वविद्यालय से संबद्ध कृषि महाविद्यालय हनुमानगढ़ के नए लोगो का अनुमोदन किया गया। एग्री बिजनेस मैनेजमेंट संस्थान में प्रवेश प्रक्रिया को पारदर्शी और त्वरित बनाए जाने के लिए ऑनलाइन किए जाने के प्रस्ताव का भी अनुमोदन किया गया। डॉ देवाराम सैनी ने बताया कि बैठक में आगामी दीक्षांत समारोह में यूजी की 1492, पीजी के 154 तथा पीएचडी के 37 विद्यार्थियों को उपाधियां प्रदान करने के प्रस्ताव का अनुमोदन किया गया। बैठक में सामुदायिक विज्ञान बीएससी ऑनर्स के स्किल एनहैंसमेंट कोर्स कोड को रिवाइज करने के प्रस्ताव का अनुमोदन किया गया। इस अवसर पर डॉ दुबे नापासर, यहा जाटबास स्थित श्री वीर तेजाजी महाराज मंदिर में गुरुवार को सत्यवादी गौभक्त वीर तेजाजी महाराज का जन्मोत्सव श्रद्धा और उल्लास के साथ मनाया गया। इस अवसर पर धार्मिक अनुष्ठानों का आयोजन किया गया और एक भव्य महारैली निकाली गई।जिसमें बड़ी संख्या में श्रद्धालुओं ने भाग लिया।प्रातःकाल मंदिर परिसर में विशेष पूजा-अर्चना, हवन और अन्य धार्मिक अनुष्ठान संपन्न हुए। इनमें बड़ी संख्या में श्रद्धालुओं ने हिस्सा लिया और वीर तेजाजी महाराज से क्षेत्र की खुशहाली की कामना की। जन्मोत्सव के उपलक्ष्य में सुबह करीब 11.15 बजे मंदिर परिसर से एक भव्य महारैली निकाली गई।

इस महारैली में डीजे, सुसज्जित रथ, ऊंट, ट्रैक्टर और अन्य वाहन शामिल थे। भक्तजन जयकारों और भजनों की धुन पर नाचते-गाते हुए मुख्य मार्गों से गुजरे, जिससे पूरा कस्बा भक्तिमय वातावरण में रंग गया। ग्रामीणों और दुकानदारों ने जगह-जगह पुष्पवर्षा कर महारैली का स्वागत किया।आयोजन समिति के अनुसार, इस महारैली में समाज के सभी वर्गों की भागीदारी रही।

सीए बनने वाले छात्रों को देगी छात्रवृति

बीकानेर, शाकद्वीपीय ब्राह्मण समाज की उच्च शिक्षा समिति इस वर्ष से नीट व जेईई प्रतियोगी परीक्षा की कोचिंग हेतु पिछले सात वर्षो से दी जाने वाली छात्रवृति के अलावा दो ऐसे प्रतिभाशाली छात्रों को भी छात्रवृति प्रदान करेगी जो चार्टर्ड एकाउंटेंट की परीक्षा की तैयारी कर रहे है। श्री श्यमोजी वंशज मग भोजक सेवागान प्रन्यास में आयोजित समिति की बैठक में यह निणर्य लिया गया । समिति के आर के शर्मा ने बताया कि बाबूलाल सेवग की अध्यक्षता में आयोजित बैठक में सदस्यों से प्राप्त इस प्रस्ताव को संयोजक महेश भोजक ने विचारार्थ रखा । सीए के डी सेवग ने सीए परीक्षा के बारे में बताया तथा कहा कि लाखों विद्यार्थी इस परीक्षा में भाग लेते है।

ग्रामीण विकास में सरपंच की भूमिका, महिलाओं के संदर्भ में कार्यक्रम आयोजित

बीकानेर राजकीय डूंगर महाविद्यालय, के महिला प्रकोष्ठ के तत्वाधान में आज दिनांक 29 जनवरी को 'ग्रामीण विकास में सरपंच की भूमिका ; महिलाओं के संदर्भ में' विषय पर आयोजित कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए प्राचार्य डॉ. राजेंद्र पुरोहित ने अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में कहा कि लोकतांत्रिक व्यवस्था में एक सशक्त महिला सरपंच बहुआयामी विकास कार्य करती है र्महिला प्रकोष्ठ सदस्य निधि शर्मा ने विषय की रूपरेखा प्रस्तुत की तथा अतिथि का परिचय दियर्ाकार्यक्रम की मुख्य वक्ता श्रीमती प्रियंका सारण, सरपंच, सोमलसर ने अपने वक्तव्य में अपने अनुभव बताते हुए छात्राओं को पूरे दृढ़ निश्चय के साथ अपना लक्ष्य निर्धारित करने की प्रेरणा दी साथ ही उन्होंने बताया की किस प्रकार अनेक चुनौतियों का सामना करते हुए सोमलसर गांव में डिजिटल लाइब्रेरी ,जलकुंड निर्माण, खेल मैदान निर्माण, सड़कों तथा बिजली के खभों की उपलब्धता सुनिश्चित कर्ीउन्हें 2025 में माननीय मुख्यमंत्री द्वारा अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर आमंत्रित किया गया।

■ **उन्होंने बताया की किस प्रकार अनेक चुनौतियों का सामना करते हुए**

नई दिल्ली में उन्होंने एर्पीजीहू कार्यक्रम में भाग लियर्ा प्रो. अनिला पुरोहित ने छात्राओं को निडर होकर आगे बढ़ाने की प्रेरणा दर्ी महिला प्रकोष्ठ की संयोजिका का डॉ. सोनू शिवा ने छात्राओं को करियर में आ रही चुनौतियों का सामना करते हुए उत्तरोत्तर प्रगति की ओर प्रेरित कियर्ा कार्यक्रम का संचालन डॉ.निधि शर्मा एवं डॉ मुक्ता ओझा द्वारा किया गयर्ा कार्यक्रम में प्रकोष्ठ सदस्यों में डॉ. मनीषा अग्रवाल, डॉ. करबी शाह, डॉ प्रेरणा महेश्वरी, डॉ उषा लामरोड़ ,डॉ सुनीता गोयल डॉ.उमा राठौड़, डॉ पूनम चरण ,डॉ अर्चना पुरोहित, डॉ सुमन चौधरी, डॉ सुनीता मंडा ,डॉ. फखरुनिसा बानो एवं डॉ. सुषमा सोनी उपस्थित रही तथा अनेक छात्राओं ने बढ़-चढ़कर हिस्सा लेकर सरपंच महोदय से संवाद करते हुए अपनी जिज्ञासाओं को शांत किया।

बीकानेर में भारतीय सेना भर्ती रैली का विधिवत शुभारंभ

बीकानेर, (निसं)। स्वामी केशवानंद राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय के खेल स्टेडियम में गुरुवार को भारतीय सेना भर्ती रैली का विधिवत शुभारंभ हुआ। उप महानिदेशक भर्ती ब्रिगेडियर श्री उपेंद्र कौशल ने हरी झंडी दिखाकर रैली को रवाना किया।

बीकानेर, हनुमानगढ़, श्रीगंगानगर, चूरू और झुंझुनूं समेत कुल पांच जिलों में सेना भर्ती के इंचार्ज कर्नल अंकुर कुमार ने बताया कि सुबह तड़के शुरू हुई भर्ती प्रक्रिया में अभ्यर्थियों ने उत्साह और अनुशासन के साथ भाग लिया। पहले दिन अभ्यर्थियों की 1.6 किलोमीटर दौड़, शारीरिक दक्षता परीक्षा तथा शारीरिक माप परीक्षण आयोजित किए गए। सेना के चिकित्सा अधिकारियों द्वारा अभ्यर्थियों की स्वास्थ्य जांच के साथ-साथ ड्रग स्क्रीनिंग किट के माध्यम से नशीले पदार्थों के सेवन की भी जांच की गई, जिससे भर्ती प्रक्रिया की पारदर्शिता और गुणवत्ता सुनिश्चित हो सके। कर्नल कुमार ने बताया कि भर्ती रैली के पहले दिन अग्निवीर ट्रेड्समैन पदों के लिए बीकानेर, चूरू, झुंझुनू, श्रीगंगानगर और हनुमानगढ़ जिलों के अभ्यर्थियों ने भाग लिया। शारीरिक परीक्षा में सफल अभ्यर्थियों को 30 जनवरी को विस्तृत चिकित्सा परीक्षण के लिए बुलाया गया है। रैली के दूसरे दिन अग्निवीर क्लर्क पद के लिए बीकानेर, चूरू, हनुमानगढ़ और झुंझुनू जिलों के अभ्यर्थियों का शारीरिक परीक्षण किया जाएगा।उन्होंने बताया कि भर्ती प्रक्रिया पूर्णतः पारदर्शी, निष्पक्ष और निर्धारित मानकों के अनुरूप संचालित की जा रही है। अभ्यर्थियों से अनुशासन बनाए रखने तथा निर्धारित दिशा-निर्देशों का पालन करने की अपील की गई है। विदित है कि यह भर्ती रैली सेना भर्ती कार्यालय (एआरओ) झुंझुनू द्वारा, मुख्यालय भर्ती क्षेत्र जयपुर के तत्वावधान में आयोजित की जा रही है। भर्ती प्रक्रिया 29 जनवरी से 15 फरवरी तक चलेगी। इस दौरान अग्निवीर जनरल ड्यूटी, अग्निवीर क्लर्क/स्टोरकीपर टेक्निकल, अग्निवीर टेक्निकल और अग्निवीर ट्रेड्समैन पदों के लिए अभ्यर्थियों का चयन किया जाएगा।

कार्यालय नगर विकास न्यास, श्रीगंगानगर (राज.)

क्रमांक : नियमन/2025/ Rajkaj Ref.20001178 दिनांक : 21-01-2026

सार्वजनिक आपत्ति सूचना

सर्व साधारण को सूचनार्थ प्रकाशित किया जाता है कि कृषि भूमि क्षेत्र में आवासीय भूखण्ड वाके चक 2 एमएल मुरब्बा नं. 34 के किला नं. 02 में भूखण्ड का माप 35'-0'' गुणा 65-0'' फीट के नियमन/पटटा हेतु आवेदक श्रीमती ज्योति सुराना पत्नी श्री अजय सुराना निवासी श्रीगंगानर द्वारा प्रस्तुत दस्तावेजों के आधार पर इनके भूखण्ड का नियमन/पट्टा सं. 2043 दिनांक 26.09.2013 के द्वारा जारी किया गया था। आवेदक / पट्टाधारक द्वारा उक्त जारी पटटे को निर्धारित समयावधि में उपपंजीयन कार्यालय से पंजीकृत नहीं करवाया गया। आवेदक द्वारा जरिये प्रार्थना पत्र उक्त भूखण्ड के जारी पट्टे को नवीनीकरण हेतु निवेदन किया गया है। विभागीय आदेशानुसार 3 वर्ष अवधि के पश्चात पटटा नवीनीकरण नहीं किया जाकर पुनः नया पट्टा जारी किया जाना है। अतः उपरोक्त वर्णित भूखण्ड के आवेदक के द्वारा प्रस्तुत दस्तावेजों/पट्टे के आधार पर नया पट्टा जारी करने के संबंध में किसी को कोई आपत्ति हो तो वह अपनी आपत्ति मय सबूत आपत्ति सूचना के प्रकाशन की तिथि से 07 दिवस के अन्दर-अन्दर न्यास कार्यालय में कमरा नं. 17 में प्रस्तुत कर सकता है अन्यथा बाद मियाद गुजरने अवधि के उपरान्त नियमानुसार आवेदक श्रीमती ज्योति सुराना पत्नी श्री अजय सुराना निवासी श्रीगंगानर द्वारा प्रस्तुत दस्तावेजों / जारी पटटे के आधार पर चक 2 एमएल मुरब्बा नं. 34 के किला नं. 02 में भूखण्ड का माप 35'-0'' गुणा 65'-0'' फीट का नियमन / पटटा जारी कर दिया जावेगा। यदि उक्त वर्णित क्षेत्र का पूर्व में नियमन / पटटा जारी होना पाया गया तो वर्तमान पटटा स्वतः ही निरस्त माना जावेगा। न्यास किसी भी विवाद के लिए जिम्मेवार नहीं होगा। - सचिव, नगर विकास न्यास, श्रीगंगानगर

राजस्थान सरकार, कार्यालय नगर विकास न्यास, श्रीगंगानगर (राज.)

क्रमांक : नियमन/2026/ **सार्वजनिक आपत्ति सूचना** दिनांक : 28-1-2026

सर्व साधारण को सूचनार्थ प्रकाशित किया जाता है कि कृषि भूमि क्षेत्रों में कृषि से अकृषि प्रयोजनार्थ रूपान्तरित योजना में नगर विकास न्यास, श्रीगंगानगर द्वारा चक 5 ई छोटी मुरब्बा नं. 09 के किला नं. 16 में माप 30 इन्टू 52.6 फीट, भूखण्ड संख्या 19, श्रीगंगानगर का पटटा संख्या 17209 दिनांक 10.11.2022 को श्री किरण कुमार अरोड़ा पुत्र श्री मुलखराज अरोड़ा के नाम से जारी किया हुआ है। उक्त भूखण्ड को श्री सौरभ गणेशगढ़िया पुत्र श्री सुरेन्द्र गणेशगढ़िया निवासी म.न. 34 विनायक विहार, श्रीगंगानगर जरिये पंजीकृत बेयनामा दिनांक 27.03.2023 के द्वारा क्रय कर अपने स्वामित्व के दस्तावेज एवं शपथ पत्र प्रस्तुत कर न्यास कार्यालय द्वारा पूर्व में जारी पटटा एवं अन्य दस्तावेजों का समर्पण कर भूखण्ड का फ्री होल्ड पटटा जारी करने हेतु आवेदन किया है। अतः उक्त के सम्बन्ध में किसी को कोई आपत्ति हो तो अपनी आपत्ति मय सबूत छाया दिनांक से 7 दिवस के अन्दर-अन्दर न्यास कार्यालय के कमरा नं. 17 में प्रस्तुत करें, अन्यथा बाद मियाद गुजरने के उपरान्त आवेदकों द्वारा प्रस्तुत दस्तावेजों एवं शपथ पत्र के आधार पर राजस्थान नगरीय क्षेत्र (कृषि भूमि का गैर कृषि प्रयोजन के लिए उपयोग की अनुज्ञा एवं आवटन) नियम 2012 के नियम 20, 25 एवं 27 की अनुपालना में कार्यवाही करते हुए फ्री होल्ड पटटा जारी कर दिया जावेगा। इस सम्बन्ध में न्यास किसी भी विवाद के लिए जिम्मेवार नहीं होगा। RajKaj Ref No.: 20166476 -सचिव,नगर विकास न्यास, श्रीगंगानगर।

राजस्थान सरकार, कार्यालय नगर विकास न्यास, श्रीगंगानगर (राज.)

क्रमांक : नियमन/2026/ **सार्वजनिक आपत्ति सूचना** दिनांक : 28-1-2026

सर्व साधारण को सूचनार्थ प्रकाशित किया जाता है कि कृषि भूमि क्षेत्र में रिहायशी भूखण्ड वाके चक 6 ई छोटी मुरब्बा नं. 14 के किला नं. 6 में भूखण्ड संख्या का माप 18'-0'' गुणा 15'-0'' फीट के नियमन/पट्टा हेतु आवेदक श्री तरसेम सिंह पुत्र श्री कृपाल सिंह निवासी गणपति नगर, श्रीगंगानगर द्वारा प्रस्तुत दस्तावेजों के आधार पर इनके भूखण्ड का नियमन किया जाना है। अतः उपरोक्त वर्णित भूखण्ड के आवेदक के द्वारा प्रस्तुत दस्तावेजों/रकबे के संबंध में किसी को कोई आपत्ति हो तो वह अपनी आपत्ति मय सबूत आपत्ति सूचना के प्रकाशन की तिथि से 07 दिवस के अन्दर-अन्दर न्यास कार्यालय में कमरा नं. 17 में प्रस्तुत कर सकता है अन्यथा बाद मियाद गुजरने अवधि के उपरान्त आवेदक श्री तरसेम सिंह पुत्र श्री कृपाल सिंह निवासी गणपति नगर, श्रीगंगानगर द्वारा प्रस्तुत दस्तावेजों के आधार पर चक 6 ई छोटी मुरब्बा नं. 14 के किला नं. 6 में भूखण्ड संख्या का माप 18'-0'' गुणा 15'-0'' फीट का नियमन/पट्टा जारी कर दिया जावेगा। यदि उक्त वर्णित क्षेत्र का पूर्व में नियमन/ पट्टा जारी होना पाया गया तो वर्तमान पट्टा स्वतः ही निरस्त माना जावेगा। न्यास किसी भी विवाद के लिए जिम्मेवार नहीं होगा। RajKaj Ref No.: 19764309 -सचिव,नगर विकास न्यास, श्रीगंगानगर।

राजस्थान सरकार, कार्यालय नगर विकास न्यास, श्रीगंगानगर (राज.)

क्रमांक : नियमन/2026/ **सार्वजनिक आपत्ति सूचना** दिनांक : 24-1-2026

सर्व साधारण को सूचनार्थ प्रकाशित किया जाता है कि कृषि भूमि क्षेत्रों में कृषि से अकृषि प्रयोजनार्थ रूपान्तरित योजना में नगर विकास न्यास, श्रीगंगानगर द्वारा चक 2 एमएल मुरब्बा नं. 52 के किला नं. 22, 23 में माप 40 इन्टू 60 फीट, भूखण्ड संख्या एसटी-12, रिद्धि-सिद्धि एन्कलेव श्रीगंगानगर का पटटा संख्या 8562 दिनांक 08.03.2010 को सोनिका जैन पुत्री श्री जैन प्रकाश जैन के नाम से जारी किया हुआ है। उक्त भूखण्ड को श्री सारिका छाबड़ा पत्नी तुलेष छाबड़ा निवासी 477 विनोबा बस्ती, श्रीगंगानगर द्वारा उक्त भूखण्ड को जरिये पंजीकृत बेयनामा दिनांक 02.06.2025 के द्वारा क्रय कर अपने स्वामित्व के दस्तावेज एवं शपथ पत्र प्रस्तुत कर न्यास कार्यालय द्वारा पूर्व में जारी पटटा एवं अन्य दस्तावेजों का समर्पण कर भूखण्ड का फ्री होल्ड पटटा जारी करने हेतु आवेदन किया है। अतः उक्त के सम्बन्ध में किसी को कोई आपत्ति हो तो अपनी आपत्ति मय सबूत छाया दिनांक से 7 दिवस के अन्दर-अन्दर न्यास कार्यालय के कमरा नं. 17 में प्रस्तुत करें, अन्यथा बाद मियाद गुजरने के उपरान्त आवेदकों द्वारा प्रस्तुत दस्तावेजों एवं शपथ पत्र के आधार पर राजस्थान नगरीय क्षेत्र (कृषि भूमि का गैर कृषि प्रयोजन के लिए उपयोग की अनुज्ञा एवं आवटन) नियम 2012 के नियम 20, 25 एवं 27 की अनुपालना में कार्यवाही करते हुए फ्री होल्ड पटटा जारी कर दिया जावेगा। इस सम्बन्ध में न्यास किसी भी विवाद के लिए जिम्मेवार नहीं होगा। RajKaj Ref No.19732624 -सचिव,नगर विकास न्यास, श्रीगंगानगर।

राजस्थान सरकार, कार्यालय नगर विकास न्यास, श्रीगंगानगर (राज.)

क्रमांक : नियमन/2026/ **सार्वजनिक आपत्ति सूचना** दिनांक : 28-1-2026

सर्व साधारण को सूचनार्थ प्रकाशित किया जाता है कि कृषि भूमि क्षेत्रों में कृषि से अकृषि प्रयोजनार्थ रूपान्तरित योजना में नगर विकास न्यास, श्रीगंगानगर द्वारा चक 6 ई छोटी मुरब्बा नं. 17 के किला नं. 20 में माप 82.6 इन्टू 82.6 फीट श्रीगंगानगर का पटटा संख्या 3531 दिनांक 16.04.2005 को श्री देवकी नन्दन गोल्याण पुत्र श्री लीलाधर गोल्याण के नाम से जारी किया हुआ है। उक्त भूखण्ड को श्री रवि गोल्यान पुत्र श्री देवीनंदन गोल्यान निवासी म.नं. 3-ए-7, जवाहरनगर, श्रीगंगानगर द्वारा पंजीकृत उपहार पत्र दिनांक 24.06.2025 के द्वारा क्रय कर अपने स्वामित्व के दस्तावेज एवं शपथ पत्र प्रस्तुत कर न्यास कार्यालय द्वारा पूर्व में जारी पटटा एवं अन्य दस्तावेजों का समर्पण करभूखण्ड का फ्री होल्ड पटटा जारी करने हेतु आवेदन किया है। अतः उक्त के सम्बन्ध में किसी को कोई आपत्ति हो तो अपनी आपत्ति मय सबूत छाया दिनांक से 7 दिवस के अन्दर-अन्दर न्यास कार्यालय के कमरा नं. 17 में प्रस्तुत करें, अन्यथा बाद मियाद गुजरने के उपरान्त आवेदकों द्वारा प्रस्तुत दस्तावेजों एवं शपथ पत्र के आधार पर राजस्थान नगरीय क्षेत्र (कृषि भूमि का गैर कृषि प्रयोजन के लिए उपयोग की अनुज्ञा एवं आवटन) नियम 2012 के नियम 20, 25 एवं 27 की अनुपालना में कार्यवाही करते हुए फ्री होल्ड पटटा जारी कर दिया जावेगा। इस सम्बन्ध में न्यास किसी भी विवाद के लिए जिम्मेवार नहीं होगा। RajKaj Ref No.: 20056497 -सचिव,नगर विकास न्यास, श्रीगंगानगर।

राजस्थान सरकार, कार्यालय नगर विकास न्यास, श्रीगंगानगर (राज.)

क्रमांक : नियमन/2026 **सार्वजनिक आपत्ति सूचना** दिनांक : 18-1-2026

सर्व साधारण को सूचनार्थ प्रकाशित किया जाता है कि कृषि भूमि क्षेत्र में व्यवसायिक भूखण्ड वाके चक 1 ए छोटी मुरब्बा नं. 58/62 के किला नं. 4-7 में दुकान संख्या 115 ता 134 का क्षेत्रफल 416.6 वर्गगज के नियमन/पटटा हेतु आवेदक श्री प्रवीण कुमार पुत्र श्री जगदीश राय निवासी श्रीगंगानगर द्वारा प्रस्तुत दस्तावेजों के आधार पर इनके भूखण्ड का नियमन/पट्टा सं. 7767 दिनांक 12.02.2018 के द्वारा जारी किया गया था। आवेदक/पट्टाधारक द्वारा उक्त जारी पट्टे को निर्धारित समयावधि में उपपंजीयन कार्यालय से पंजीकृत नहीं करवाया गया। आवेदक द्वारा जरिये प्रार्थना पत्र उक्त भूखण्ड के जारी पट्टे को नवीनीकरण हेतु निवेदन किया गया है। विभागीय आदेशानुसार 3 वर्ष अवधि के पश्चात पट्टा नवीनीकरण नहीं किया जाकर पुनः नया पट्टा जारी किया जाना है। अतः उपरोक्त वर्णित भूखण्ड के आवेदक के द्वारा प्रस्तुत दस्तावेजों/ पट्टे के आधार पर नया पट्टा जारी करने के संबंध में किसी को कोई आपत्ति हो तो वह अपनी आपत्ति मय सबूत आपत्ति सूचना के प्रकाशन की तिथि से 07 दिवस के अन्दर-अन्दर न्यास कार्यालय में कमरा नं. 17 में प्रस्तुत कर सकता है अन्यथा बाद मियाद गुजरने अवधि के उपरान्त आवेदक श्री प्रवीण कुमार पुत्र श्री जगदीश राय निवासी श्रीगंगानगर द्वारा प्रस्तुत दस्तावेजों/ जारी पट्टे के आधार पर चक 1 ए छोटी मुरब्बा नं. 52/58 के किला नं. 4-7 में दुकान संख्या 115 ता 134 का क्षेत्रफल 416.6 वर्गगज का नियमन/पटटा जारी कर दिया जावेगा। यदि उक्त वर्णित क्षेत्र का पूर्व में नियमन/ पट्टा जारी होना पाया गया तो वर्तमान पट्टा स्वतः ही निरस्त माना जावेगा। न्यास किसी भी विवाद के लिए जिम्मेवार नहीं होगा। RajKaj Ref No.19843467 -सचिव,नगर विकास न्यास, श्रीगंगानगर।

राजस्थान सरकार, कार्यालय नगर विकास न्यास, श्रीगंगानगर (राज.)

क्रमांक : नियमन/2026/ **सार्वजनिक आपत्ति सूचना** दिनांक : 29-1-2026

सर्व साधारण को सूचनार्थ प्रकाशित किया जाता है कि कृषि भूमि क्षेत्रों में कृषि से अकृषि प्रयोजनार्थ रूपान्तरित योजना में नगर विकास न्यास, श्रीगंगानगर द्वारा चक 6 जैड मुरब्बा नं. 32 के किला नं. 19, 20 में माप 38.6 इन्टू 49 फीट, श्रीगंगानगर का पटटा संख्या 1296 दिनांक 23.07.2013 को श्रीमती कैलाश कामरा पत्नी श्री गुरचरण सिंह कामरा के नाम से जारी किया हुआ है। श्री हरजिन्द्र सिंह पुत्र श्री पूर्ण सिंह निवासी भरतनगर, पुरानी आबादी, श्रीगंगानगर द्वारा जरिये पंजीकृत उपहार दिनांक 26.11.2013 के द्वारा उक्त भूखण्ड में से माप 14.6 इन्टू 38.6 फीट क्रय कर अपने स्वामित्व के दस्तावेज एवं शपथ पत्र प्रस्तुत कर न्यास कार्यालय द्वारा पूर्व में जारी पटटा एवं अन्य दस्तावेजों का समर्पण कर भूखण्ड का फ्री होल्ड पटटा जारी करने हेतु आवेदन किया है। अतः उक्त के सम्बन्ध में किसी को कोई आपत्ति हो तो अपनी आपत्ति मय सबूत छाया दिनांक से 7 दिवस के अन्दर-अन्दर न्यास कार्यालय के कमरा नं. 17 में प्रस्तुत करें, अन्यथा बाद मियाद गुजरने के उपरान्त आवेदकों द्वारा प्रस्तुत दस्तावेजों एवं शपथ पत्र के आधार पर राजस्थान नगरीय क्षेत्र (कृषि भूमि का गैर कृषि प्रयोजन के लिए उपयोग की अनुज्ञा एवं आवटन) नियम 2012 के नियम 20, 25 एवं 27 की अनुपालना में कार्यवाही करते हुए फ्री होल्ड पटटा जारी कर दिया जावेगा। इस सम्बन्ध में न्यास किसी भी विवाद के लिए जिम्मेवार नहीं होगा। RajKaj Ref No.19732882 -सचिव,नगर विकास न्यास, श्रीगंगानगर।

राजस्थान सरकार, कार्यालय नगर विकास न्यास, श्रीगंगानगर (राज.)

Telefax No. 0154-2466652, Email :- uit_sgnr@yahoo.com Off. Add:- UIT Office, Model Town, Sri Ganganagar (Raj.) 335001

क्र. :- नियमन/2026/ RajKaj Ref. No. 20177568 **सार्वजनिक आपत्ति सूचना** दिनांक : 29.01.2026

[illegible]

राजस्थान सरकार, कार्यालय नगर विकास न्यास, श्रीगंगानगर (राज.)

क्रमांक : नियमन/2026/5124 **सार्वजनिक आपत्ति सूचना** दिनांक :29-1-26

[illegible]

-सचिव, नगर विकास न्यास, श्रीगंगानगर

कथा वाचक साध्वी प्रेम बाईसा की मौत के मामले में कम्पाउण्डर हिरासत में

पुलिस ने इंजेक्शन के खोल सहित संबंधित मेडिकल सामग्री को कब्जे में लिया

- **जोधपुर में बुधवार रात कथा वाचक साध्वी प्रेम बाईसा की संदिग्ध हालात में मौत हो गई थी, तीन डॉक्टरों की मेडिकल टीम ने शव का पोस्टमार्टम किया**
- **पिता ने बताया कि साध्वी के कहने पर ही किसी साथी गुरु महाराज द्वारा उनके मोबाइल से मैसेज डाला गया, बताया गया है कि साध्वी ने अंतिम समय में न्याय दिलाने की बात कही थी**

जोधपुर, (कासं)। शहर में बुधवार की रात कथा वाचक साध्वी प्रेम बाईसा की संदिग्ध हालात में मौत हो गई। साध्वी प्रेम बाईसा की मौत की खबर से शहर में सनसनी फ़ैल गई। गुरुवार को तीन डॉक्टरों की मेडिकल टीम द्वारा शव का पोस्टमार्टम किया गया। अब पोस्टमार्टम रिपोर्ट से ही मृत्यु के कारण पता लग पाएगा। पोस्टमॉर्टम के दौरान अस्पताल में तनाव के हालत बन गए। इस दौरान मोर्चरी में कई साधु-संत मौजूद थे। पुलिस का पहरा भी मोर्चरी के बाहर देखा गया। वहीं समझाइश के बाद मामला शांत हुआ। इसके बाद शव को रवाना किया गया। इससे पहले बुधवार रात को उनकी मौत की जानकारी सामने आने के बाद से सैकड़ों की संख्या में भक्त अस्पताल पहुंच गए थे। कई भक्तों ने उनके पिता और आश्रम पर भी साध्वी की मौत को लेकर सवाल उठाए। वहीं, उनके पिता ने मौत का कारण गलत इंजेक्शन को बताया है।

मामले में पुलिस प्रशासन ने जांच तेज कर दी है। पुलिस कमिश्नर ओमप्रकाश के निर्देशन में मामले की गहन जांच की जा रही है। पुलिस ने तत्परता दिखाते हुए साध्वी को इंजेक्शन लगाने वाले कंपाउंडर को दस्तयाब कर लिया है। पुलिस द्वारा आवश्यक पूछताछ के साथ-साथ इंजेक्शन के खोल सहित संबंधित मेडिकल सामग्री को कब्जे में लिया गया है। इसके अलावा आश्रम को सील कर दिया गया है और मोबाइल फोन समेत अन्य इलेक्ट्रॉनिक उपकरण भी जब्त किए गए हैं। गुरुवार सुबह पोस्टमार्टम के दौरान महात्मा गांधी अस्पताल की मोर्चरी में एसीपी छवी शर्मा के नेतृत्व में पुलिस प्रशासन मुस्तैद रहा। इस दौरान पुलिस इंस्पेक्टर जुल्फिकार अली और राजीव भादू भी जाब्ते के साथ मौके पर मौजूद रहे। मोर्चरी में मीडिया से बातचीत करते हुए साध्वी के पिता ब्रह्मनाथ ने कई अहम तथ्य सामने रखे। उन्होंने बताया कि खांसी-जुकाम की शिकायत के चलते आश्रम में कंपाउंडर को बुलाया गया था। इंजेक्शन लगाए जाने के महज पांच मिनट बाद ही साध्वी प्रेम बाईसा ने दम तोड़ दिया। पिता ने यह भी स्वीकार किया कि साध्वी के मोबाइल फोन से संदेश भेजा गया था। उन्होंने बताया कि साध्वी के कहने पर ही किसी साथी गुरु महाराज द्वारा उनके मोबाइल से मैसेज डाला गया। बताया गया है कि साध्वी ने अंतिम समय में न्याय दिलाने की बात कही थी। पिता ब्रह्मनाथ ने पूरे मामले की निष्पक्ष जांच की मांग की है। पुलिस का कहना है कि कंपाउंडर को हिरासत में लेकर पूछताछ की जा रही है और सभी पहलुओं पर गंभीरता से जांच जारी है।

एसीपी (वेस्ट) छवि शर्मा ने बताया कि परिजनों की ओर से दी गई रिपोर्ट के मुताबिक, साध्वी की तबीयत पिछले दो दिनों से नासाज थी। बुधवार को उन्होंने किसी से एक इंजेक्शन लगवाया था। इंजेक्शन लगने के तुरंत बाद उनकी तबीयत अचानक और ज्यादा बिगड़ गई। परिजन उन्हें लेकर पाल रोड स्थित एक प्राइवेट हॉस्पिटल (प्रेक्षा हॉस्पिटल) पहुंचे, जहां डॉक्टरों ने जांच के बाद उन्हें मृत घोषित कर दिया। इसके बाद शव को एमजीएच मोर्चरी में लाया गया।

वहीं 13 जुलाई 2025 को सोशल मीडिया पर साध्वी का एक वीडियो वायरल हुआ था। इस वीडियो में वे एक व्यक्ति के गले मिलते नजर आ रही थी। इसे अश्लील बताकर प्रचारित किया गया था। साध्वी ने 16 जुलाई को बोरानाडा थाने में इस मामले में रिपोर्ट दर्ज कराई थी। उन्होंने अपनी एफआईआर में बताया था कि वीडियो में दिखने वाला व्यक्ति उनके पिता वीरमनाथ (गुरुजी) हैं। यह वीडियो 2021 का था, जब वे अवसाद में थी और पिता ने उन्हें ढांढस बंधाया था।

पुलिस जांच और साध्वी की शिकायत के अनुसार, इस साजिश के पीछे उनके ही पूर्व स्टाफ सदस्य थे। इनमें साउंड सिस्टम लगाने का काम करने वाला जोगेंद्र उर्फ जोगाराम (29), पूर्व ड्राइवर रमेश, कृष्णा (जोगेंद्र की पत्नी) और दो अन्य लोग शामिल थे। साध्वी ने आरोप लगाया था कि जोगेंद्र ने घर में लगे सीसीटीवी कैमरे से इसे निकाला था। इसके बाद उसने और उसके साथियों ने वीडियो वायरल करने की धमकी देकर 20 लाख रुपये की मांग की। जब साध्वी ने पैसे देने से इनकार किया, तो उन्होंने 13 जुलाई 2025 को वीडियो को एडिट करके सोशल मीडिया पर पोस्ट कर दिया। वह वीडियो भी उन दिनों काफी चर्चा में रहा था।

युवक ने आत्महत्या की

उदयपुर, (निसं)। शहर के सुखेर थाना क्षेत्र में विषाक्त वस्तु सेवन कर युवक ने आत्महत्या कर ली।

जानकारी के अनुसार गांव गुडा मंदारियों की भागल खमनोर राजसमंद हाल सुखेर निवासी अमरसिंह (34) पुत्र डालूसिंह चदाणा की विषाक्त वस्तु सेवन करने से मौत हो गई। कैलाशपुरी पोटिया मगरी पर अचेत अवस्था में अज्ञात युवक के होने की सूचना मिली। सुखेर थाना एएसआई हिम्मतनाथ ने मौके पर पहुंच मृत हालत में मिले युवक को एमबी चिकित्सालय मोर्चरी में रखवा आधार कार्ड के आधार पर परिजनों को सूचना दी। गुरूवार को आए परिजनों को मृतक का पोस्टमार्टम करवा शव परिजनों को सौंप दिया। अमरसिंह दो वर्ष से अपने गांव नहीं गया था जो इधर-उधर घूमता रहता था।

जेवर व नकदी चोरी

उदयपुर, (निसं)। गोवर्धन विलास थाना क्षेत्र में सूने मकान का ताला तोड़ कर चोर जेवरात व नकदी चुरा ले गए। पीड़ित दिनेश गमेती निवासी धोली मगरी ने पुलिस थाने में प्रकरण दर्ज करवाया। उसने बताया कि 27 जनवरी को मैं व मेरा भाई जगदीश गमेती दोनों परिचित के वहां पर जागरण में गए थे। वापस लौटते तो मेरा व भाई के कमरे का ताला टूटा हुआ एवं सामान बिखरा पड़ा था। इस पर पडताल की तो मेरे कमरे से सोने के एक जोड़ी टॉप्स, आधा किलो चांदी के जेवर, दो लाख रूपये नकदी एवं भाई जगदीश के कमरे से 50 हजार नकदी व आधा किलो चांदी के जेवर गायब थे।

कार्यालय जिला रसद अधिकारी, धौलपुर

क्रमांक:- रसद/लेखा/2026/38 दिनांक:- 08.01.2026

Notice Inviting Bid 01/2026-27

e-Bids for selection of Handing and Transportation of Food grains under PDS from FCI Depots to fair price shops in District Dholpur are invited from interested bidders up to date from 13.01.2026 to 02.02.2026 Other particulars of the bid may be visited & viewed on the procurement portal (http://eproc.rajasthan.gov.in or http://sppp.rajasthan.gov.in/ www.food.rajasthan.gov.in) of the state, The approximate value of the procurement is 2.80 cr for one year.

UBN NO-FCC2526SLRC00194
NIB NO-FCC2526A0160 DIPR/C/1541/2026
जिला रसद अधिकारी धौलपुर

राजस्थान सरकार
निदेशालय खान एवं भूविज्ञान विभाग, राजस्थान, उदयपुर

क्रमांक निदे/अ.ख.अ. नीलामी / निलामी (ERCC/RCC 01)/2026/ई-14128

ई-नीलामी विज्ञप्ति संख्या (ERCC/RCC 01)/2026

सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है कि राजस्थान अप्रधान खनिज रियायत नियमावली, 2017 के नियम-36 व 37 के तहत विभाग द्वारा इस विज्ञप्ति से अप्रधान खनिजों के प्रभावशील खनन पट्टों / क्वारीं लाईसेंसों व परमिट क्षेत्रों से निर्गमित होने वाले खनिजों पर अधिशुल्क /अधिक अधिशुल्क, परमिट शुल्क, प्रिमीयम शुल्क, डी.एम.एफ.टी., आर.एस.एम.ई.टी. एवं अन्य शुल्क संग्रहण के कुल 88 ठेके खुली ई-नीलामी के माध्यम से दिये जाने हेतु इलेक्ट्रोनिक प्लेटफार्म पर इच्छुक बोलीदाताओं से बोली आमंत्रित की जाती है। ठेकों से संबंधित विस्तृत विवरण जैसे-ठेका क्षेत्र, खनिज, अमानत राशि, बोली प्रस्तुत करने की तिथि व समय इत्यादि का विवरण व ई-ऑक्शन की प्रक्रिया एवं मुख्य शर्तें विभागीय वेबसाइट www.mines.rajasthan.gov.in एवं इलेक्ट्रोनिक प्लेटफार्म प्रदाता कंपनी MSTC की वेबसाइट www.mstcecommerce.com पर उपलब्ध हैं।

(महावीर प्रसाद मीणा)
निदेशक
DIPR/C/1615/2026

राजस्थान सरकार
कार्यालय अधीक्षण अभियन्ता जलग्रहण विकास एवं भू-संरक्षण विभाग जालोर

क्रमांक: एफ ()/ निविदा/2025-26/4153-4179 दिनांक: 21.01.2026

NOTCE INVITING BID
NIT NO 50-59/2025-26

Bids for NRM Works Under PMKSY-2.0 project area in Jaswantpura, Sanchore, Ahore and Chitalwana, estimated Value INR 283.08 Lacs are invited from interested bidders Up to 3.00 PM 30-01-2026, Other particulars of the bid may be visited on the procurement portal (https//eproc.rajasthan.gov.in or https://Sppp. rajasthan.gov.in/) of the state.

NIT NO.	Work Name & Block	NIB NO.	UBN NO.
NIT-50/2025-26 PMKSY 2.0	SUPPLY OF GOATRY UNIT AS PER DETAILED SPECIFICATION BLOCK JASWANTPURA	WSC2526A1402	WSC2526GLO B02441
NIT-51/2025-26 PMKSY 2.0	SUPPLY AND INSTALLATION OF EQUIPMENTA FOR MINI SPRINKLER SET UNDER PMKSY BLOCK JASWANTPURA	WSC2526A1403	WSC2526GLO B02442
NIT-52/2025-26 PMKSY 2.0	SUPPLY OF BATTERY OPERATED KNAPSACK SPRAYERS (CAPACITY 16 LITRE) BLOCK JASWANTPURA	WSC2526A1404	WSC2526GSO B02443
NIT-53/2025-26 PMKSY 2.0	SUPPLY OF BATTERY OPERATED KNAPSACK SPRAYERS (CAPACITY 16 LITRE) BLOCK SANCHORE	WSC2526A1433	WSC2526GSO B02486
NIT-54/2025-26 PMKSY 2.0	SUPPLY AND INSTALLATION OF EQUIPMENTS FOR MINI SPRINKLER SET UNDER PMKSY BLCOK SANCHORE	WSC2526A1434	WSC2526GLO B02487
NIT-55/2025-26 PMKSY 2.0	SUPPLY OF GOATRY UNIT AS PER DETAILED SPECIFICATION BLOCK SANCHORE	WSC2526A1435	WSC2526GLO B02488
NIT-56/2025-26 PMKSY 2.0	SUPPLY OF BATTERY OPERATED KNAPSACK SPRAYERS (CAPACITY 16 LITRE) BLOCK AHORE	WSC2526A1405	WSC2526GLO B02444
NIT-57/2025-26 PMKSY 2.0	SUPPLY OF GOATRY UNIT AS PER DETAILED SPECIFICATION BLOCK AHORE	WSC2526A1406	WSC2526GLO B02445
NIT-58/2025-26 PMKSY 2.0	SUPPLY AND INSTALLATION OF EQUIPMENTS FOR MINI SPRINKLER SET UNDER PMKSY BLOCK CHITALWANA	WSC2526A1436	WSC2526GLO B02489
NIT-59/2025-26 PMKSY 2.0	SUPPLY OF GOATRY UNIT AS PER DETAILED SPECIFICATION BLOCK CHITALWANA	WSC2526A1437	WSC2526GLO B02490

Laxman Singh Sandu)
SE & PM WD & SC, JALORE
DDO CODE NO. 28606
DIPR/C/1645/2026

सर्दी से कांपी लेकसिटी, तापमान में गिरावट जारी

उदयपुर, (निसं)। लेकसिटी में तापमान में फिर गिरावट के साथ बढ़ी ठंड से कंपकंपी छूट रही है। गुरूवार को दिनभर चली सर्द हवाओं के थपेड़ों ने लोगों को दिन में भी ऊनी वस्त्रों ने ढके रखा। आगामी दिनों में बारिश की संभावना भी जताई जा रही है।

लेकसिटी में बीते दो दिनों में दिन व रात के तापमान में बात की जाएं तो इसमें करीब 13 डिग्री की गिरावट हुई है जिसमें दिन का तापमान 8 डिग्री तो रात के तापमान में करीब पांच डिग्री की गिरावट हुई है। सर्द हवाओं ने दिन के तापमान को अधिक गिराया है। नश्तर सी चुभती हवाओं के सामने धूप भी राहत नहीं दे पा रही है। मंगलवार को शहर का तापमान 27 डिग्री व 12.9 डिग्री था जो दो दिन में गिरकर 19 डिग्री व 8 डिग्री पर जा पहुंचा। इधर, इस सप्ताह सर्दी से राहत की उम्मीद कम है वहीं बारिश की संभावना भी बन रही है। इस बार की सर्दी कुछ अलग रूप में दिखाई दे रही है। तापमान में आर्द्रता (नमी) अधिक होने से कई बार तापमान अधिक होने पर भी तेज सर्दी का अहसास होते हुए ऐसा लग रहा है जैसे तापमान 3 से 4 डिग्री के करीब पहुंच गया हो।

जोधपुर : कहासुनी में पति ने पत्नी की हत्या की, बेटी पर भी वार किया

- **आरोपी घटना के बाद भाग गया था, पुलिस ने डेढ़ घंटे में गिरफ्तार कर लिया**

जोधपुर, (कासं)। शहर के निकटवर्ती विवेक विहार स्थित बालाजी नगर में गुरूवार की तड़के पति ने अपनी पत्नी की लोहे की एंगल से वार कर हत्या कर दी। बीच-बचाव में आई बेटी पर भी वार किए। बेटी भी बुरी तरह घायल हो गई। उसे उपचार के लिए अस्पताल में भर्ती कराया गया है। शव का एम्स चिकित्सालय में मेडिकल बोर्ड से पोस्टमार्टम करवाया गया।

विवेक विहार थानाधिकारी दिलीप खदाव ने बताया कि घटना गुढ़ा विश्नोइयान के निकटवर्ती मोगा की ढाणी बालाजी नगर की है। यहां गुरुवार अलसुबह करीब तीन बजे बीरबल मोगा ने अपनी पत्नी गुड्डी धत्तरवाल (35) पर जानलेवा हमला किया। घटना के वक्त पति-पत्नी अपने कमरे में थे और तीनों बच्चे दूसरे कमरे में सो रहे थे। मां की चीख सुनकर सबसे बड़ी बेटी निकिता (15) जागी और दौड़ते हुए माता-पिता के कमरे में पहुंची। वहां पिता बीरबल अपनी पत्नी पर लाठी और लोहे की एंगल से वार कर रहा था। उसकी मां जमीन पर निढाल पड़ी नजर आई। निकिता ने बीच-बचाव की कोशिश की तो आरोपी पिता ने उस पर भी हमला कर दिया। हमले में निकिता का एक हाथ फ्रैक्चर हो गया और सिर व शरीर के अन्य हिस्सों पर भी चोटें आईं। घायल होने के बावजूद निकिता हिम्मत दिखाकर वहां से भागी और करीब 150 मीटर दूर रहने वाले अपने चाचा और दादा-दादी के पास पहुंची। उसने उन्हें पूरी बात बताई। जानकारी मिलते ही दोनों चाचा दौड़कर मौके पर पहुंचे। उन्होंने देखा कि गुड्डी सिर पर चोट लगने से निढाल पड़ी थी और पूरे कमरे में खून फैला हुआ था। वे उसे तुरंत कार से एम्स लेकर गए, जहां डॉक्टरों ने जांच के बाद उसे मृत घोषित कर दिया। वहीं, निकिता के घायल होने का पता चलने पर पड़ोसियों ने उसे एम्स में भर्ती करवाया।

थानाधिकारी खदाव ने बताया कि एफएसएल, एमओबी और डॉग स्क्वायड की टीम ने मौके से साक्ष्य जुटाए हैं। मौके पर डीसीपी पश्चिम विनीत कुमार बंसल भी पहुंचे। आरोपी बीरबल घटना के बाद भाग गया था, लेकिन पुलिस ने उसे डेढ़ घंटे के भीतर घटनास्थल से 3-4 किलोमीटर दूर ढाणियों से गिरफ्तार कर लिया। आरोपी पति खेती बाड़ी का ही काम करता है।

कार्यालय नगर निगम जोधपुर
पोलोटेक्निक कॉलेज, रेजीडेन्सी रोड,जोधपुर
ceo_nnj@rediffmail.com"tel 02912651464 fax 2651466

Sr.No- 4894 Date- 21.01.2026

Notice Inviting Tender
(UBN No. DLB2526WLOB32176)

Nagar Nigam Jodhpur invites proposals from the interested parties/bidders for development of Electric Vehicle Charging station on DBFOT basis at various sites in accordance with terms and conditions set forth in the Request For Proposal and Draft Concession Agreement (RFP).Detailed information about the works related to RFP, Concession Agreement, e-tender, tender details etc. can be seen on http://eproc.rajasthan.gov.in, www.sppp.rajasthan.gov.in & https://lsg.rajasthan.gov.in/mcjs.

Raj.Samwad/C/25/18701 Commissioner

कार्यालय नगर परिषद टोंक

क्रमांक :-न.प.टोंक / निर्माण / 2025-26 / 13458 दिनांक :- 23.01.2026

NOTICE INVITING TENDERS THROUGH
NIT No. 81/ 2025-26

Bids are invited from interested bidders from 26.01.2026 (10.00AM) to 16.02.2026 (6.00PM) as per following details. Other particulars of he bid may be visited on procurement portal (www.Sppp.Rajasthan.gov.in) of the state
NIB No. DLB2526B 0752

NIT No.	Name of work	UBN No.
81/2025-26	वार्ड नं. 23 मे एनएच 52 से भरत भवन तक सीसी रोड निर्माण कार्य। (अनुमानित राशि 33.45 लाख)	DLB2526WSOB31891

Date & time of opening of tender 17.02.26 at 3.00PM

अति0 जिला कलक्टर एवं प्राधिकारी /प्रशासक न0प0टोंक
आयुक्त नगर परिषद, टोंक
राज.संवाद / सी / 25 / 18687

राजस्थान सरकार
कार्यालय सहायक निदेशक, महिला अधिकारिता विभाग, करौली
वीणा मेमोरियल पीजी कॉलेज के पास, धनलक्ष्मी केन्द्र KARAULI,WE@RAJASTHAN.GOV.IN
क्रमांक-2279 दिनांक-15.01.2026

ई-निविदा 01/2025-26

केन्द्र प्रवर्तित सखी वन स्टॉप सेन्टर योजना के लिए जिला मुख्यालय करौली में संचालित सखी केन्द्र के संचालन हेतु मानव संसाधन की सेवाऐं लिए जाने हेतु इच्छुक एवं पंजीकृत सेवाप्रदाताओं/संवेदको से दिनांक 02.02.2026 को दोपहर 01.00 बजे तक ऑनलाईन ई-निविदा आमंत्रित की जाती है। निविदा की अनुमानित लागत 22.80 लाख रूपये है। बोली फार्म दिनांक 15.01.2026 से डाउनलोड किये जा सकते हैं। शर्ते एवं निविदा संबंधित विवरण व दस्तावेज www.sppp.rajasthan.gov.in/ www.eproc.rajasthan.gov.in तथा www.wcd.rajasthan.in से डाउनलोड किया जा सकता है।

NIB NO- WMP2526A0207, UBN NO.-WMP2526SLOB00240

(अनिरूद्ध शर्मा)
सहायक निदेशक
महिला अधिकारिता विभाग, करौली
DIPR/C/1077/2026

राजस्थान सरकार
कार्यालय सहायक निदेशक, महिला अधिकारिता विभाग, करौली
वीणा मेमोरियल पीजी कॉलेज के पास, धनलक्ष्मी केन्द्र KARAULI,WE@RAJASTHAN.GOV.IN
क्रमांक-2271 दिनांक-15.01.2026

ई-निविदा 02/2025-26

इस कार्यालय के अधिन संचालित पन्नाधाय सुरक्षा एवं सम्मान केन्द्र करौली के संचालन हेतु मानव संसाधन की सेवाऐं लिए जाने हेतु इच्छुक एवं पंजीकृत सेवाप्रदाताओं/संवेदको से दिनांक 02.02.2026 को दोपहर 12.00 बजे तक ऑनलाईन ई-निविदा आमंत्रित की जाती है। निविदा की अनुमानित लागत 17.64 लाख रूपये है। बोली फार्म दिनांक 15.01.2026 से डाउनलोड किये जा सकते हैं। शर्ते एवं निविदा संबंधित विवरण व दस्तावेज www.sppp.rajasthan.gov.in/ www.eproc.rajasthan.gov.in तथा www.wcd.rajasthan.in से डाउनलोड किया जा सकता है।

NIB NO- WMP2526A0206, UBN NO.-WMP2526SLOB00239

(अनिरूद्ध शर्मा)
सहायक निदेशक
महिला अधिकारिता विभाग, करौली
DIPR/C/1076/2026

कार्यालय राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय सेरणा
ब्लॉक-भीनमाल जिला-जालौर

क्रमांक-2344 दिनांक-19.01.2026

नीलामी सूचना-01/2025-26

सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है कि स्थानीय कार्यालय के अनुपयोगी/अप्रचलित/नकारा निस्तारण योग्य भंडार (स्टोर) एवं रद्दी सामग्री जिसका अनुमानित पुस्तक मूल्य चार लाख पच्चीस हजार रूपये है की सार्वजनिक निलामी दिनांक 04.02.2026 वक्त 12 पीएम पर स्थानीय विद्यालय में रखी गई है। इच्छुक व्यक्ति/फर्म जो सार्वजनिक नीलामी प्रक्रिया में भाग लेने के इच्छुक है वे व्यक्ति या फर्म 4000/- रूपयेधरोहर राशि के रूप में जमा करवाकर सार्वजनिक नीलामी प्रक्रिया में भाग ले सकते है। नीलामी प्रक्रिया में भाग लेने के इच्छुक व्यक्ति या फर्म कार्यालय समय के दौरान उपस्थित होकर निस्तारण योग्य सामग्री का अवलोकन कर सकते है। उच्चतम बोली स्वीकार होने के 05 दिवस के भीतर शेष राशि रोकड़ जमा करवाने के पश्चात नीलामी सामान सुपुर्द किया जायेगा। सफल बोलीदाता द्वारा शेष राशि जमा नहीं करवाने की स्थिति में धरोहर राशि जब्त कर ली जायेगी। नीलामी की अन्य शर्ते नीलामी प्रारंभ होने से पूर्व बता दी जायेगी। बोली स्वीकार करना या निरस्त करने का अधिकार संस्था प्रधान/निलामी कमेटी के पास सुरक्षित रहेगा।

प्रधानाचार्य
राजकीय उ.मा.वि.सेरणा
सेरणा (जालौर)
DIPR/C/1254/2026

अनूपगढ़ में स्टोर कीपर और अकाउंटेंट 48 हजार की रिश्वत लेते गिरफ्तार

- **टेंडर का बिल पास करवाने के लिए रिश्वत मांग रहे थे**

अनूपगढ़, (निसं)। नगर पालिका में भ्रष्टाचार निरोधक ब्यूरो (एसीबी) ने कार्रवाई करते हुए स्टोरकीपर और अकाउंटेंट को 48 हजार रुपए की रिश्वत लेते हुए रंगे हाथों गिरफ्तार किया है। यह कार्रवाई श्रीगंगानगर और बीकानेर की एसीबी टीमों ने की।

जानकारी के अनुसार एक फर्म को अनूपगढ़ शहर से कचरा संग्रहण करने का 9 लाख 75 हजार रुपए का टेंडर पास हुआ था। संबंधित फर्म ने अक्टूबर महीने में कचरा संग्रहण का 4 लाख 9 हजार रुपए का बिल भुगतान के लिए नगर पालिका में दिया था। शिकायतकर्ता ने बताया कि 4 लाख 9 हजार रुपए का बिल पास करने की एवज में स्टोर कीपर सुरेश कुमार और अकाउंटेंट सुनील कुमार के द्वारा 80 हजार रुपए की रिश्वत की मांग की गई थी। शिकायतकर्ता ने कहा कि वह इतने रुपए नहीं दे सकता तो 60 हजार रुपये की रिश्वत की मांग की गई, मगर अंत में सौदा 48 हजार रुपए में तय हुआ। फर्म के मालिक ने इसकी शिकायत एसीबी को कर दी। एसीबी ने शिकायत का सत्यापन करने के बाद गुरुवार को 48 हजार रुपए की रिश्वत लेते हुए स्टोर कीपर और अकाउंटेंट और कम्प्यूटर ऑपरेटर को गिरफ्तार कर लिया है। परिवादी ने बताया कि गुरुवार को वह सबसे पहले अकाउंटेंट सुनील कुमार के पास रुपए लेकर गया था। सुनील कुमार ने ओके कहकर यह रुपए स्टोर की पर सुरेश कुमार को देने के लिए कह दिया। जब परिवादी रिश्वत की राशि को स्टोर कीपर सुरेश कुमार को देने गया तो स्टोर कीपर ने भी परिवादी को ओके कहा और परिवादी से यह रुपए कंप्यूटर ऑपरेटर भरत सोनी को देने के लिए कहा। जब भरत सोनी को रिश्वत के रुपए दे रहा था, उसी समय एसीबी की टीम में उसे रंगे हाथों पकड़ लिया। फिलहाल एसीबी की टीम सुरेश कुमार के प्रेम नगर स्थित घर पर और अकाउंटेंट सुनील कुमार के शॉर्टकट में स्थित घर पर सर्च अभियान चला रही है एसीबी की टीम के द्वारा तीनों आरोपियों से पूछताछ करते हुए कार्रवाई की जा रही है।

भारत सरकार, रेल मंत्रालय
रेलवे भर्ती बोर्ड

केंद्रीकृत रोजगार अधिसूचना (सीईएन) सं.-09 / 2025

7वें सीपीसी वेतन मैट्रिक्स के लेवल 1 में विभिन्न पद के लिए भर्ती

सांकेतिक सूचना

नीचे दी गई तालिका के अनुसार विभिन्न पदों के लिए पात्र उम्मीदवारों से आवेदन आमंत्रित किए जाते हैं। आवेदन जमा करने की अंतिम तिथि 02.03.2026 है। पूर्ण रूप से भरे हुए सभी आवेदन केवल ऑनलाइन माध्यम से (https://www.rrbapply.gov.in) ही जमा किए जाने चाहिए।

आवेदन प्रारंभ होने की तिथि : 31.01.2026
आवेदन प्रस्तुत करने की अंतिम तिथि : 02.03.2026 (23:59 बजे)

पद	प्रारंभिक वेतन (रु.)	पदानुसार शैक्षणिक योग्यता एवं चिकित्सा मानक	आयु (01.01.2026 को)	संभावित रिक्तियां (सभी आरआरबी)
7वें सीपीसी वेतन मैट्रिक्स के लेवल 1 में विभिन्न पद	18000	विस्तृत सीईएन के अनुसार	18 - 33 वर्ष	22000 (लगभग)

नोटः- 1. उम्मीदवारों को सलाह दी जाती है कि वे ऑनलाइन आवेदन भरते समय अपनी मूल जानकारी को 'आधार' से सत्यापित करें। यदि आवेदन 'आधार' से सत्यापित नहीं होगा, तो भर्ती की प्रक्रिया में हर चरण पर अतिरिक्त जांच के कारण ज्यादा समय लगेगा और असुविधा होगी।
2. 'आधार' के माध्यम से सफल सत्यापन सुनिश्चित करने हेतु, 'आधार' में अंकित नाम एवं जन्मतिथि को 10वीं कक्षा उत्तीर्ण प्रमाणपत्र में उपलब्ध पूर्ण नाम एवं जन्मतिथि से शत-प्रतिशत मेल खाना आवश्यक है। इसी प्रकार, ऑनलाइन आवेदन भरने से पूर्व 'आधार' में नवीनतम फोटो तथा नवीनतम बायोमेट्रिक्स (फिंगरप्रिंट एवं आइरिस) अद्यतन होना चाहिए।
3. यह सूचना केवल सांकेतिक स्वरूप में जारी की गई है, जिसका उद्देश्य संभावित उम्मीदवारों को आगामी केंद्रीकृत रोजगार अधिसूचना के संबंध में अवगत कराना तथा आवेदन हेतु आवश्यक प्रमाणपत्रों / दस्तावेजों के साथ तैयार रहने के लिए है। यह भी स्पष्ट किया जाता है कि भर्ती से संबंधित सभी नियम, शर्तें, पात्रता मानदंड, प्रक्रियाएँ एवं अन्य आवश्यकताएँ विस्तृत केंद्रीकृत रोजगार अधिसूचना संख्या 09 / 2025 (साथ ही समय-समय पर जारी किए जाने वाले किसी भी परिशिष्ट) के अनुसार ही होंगी, जो केवल नीचे सूचीबद्ध रेलवे भर्ती बोर्डों की आधिकारिक वेबसाइटों पर प्रकाशित की जाएंगी।

आरआरबी और रेलवे का नाम	वेबसाइट	आरआरबी और रेलवे का नाम	वेबसाइट
अहमदाबाद (डब्लू.आर.)	www.rrbahmedabad.gov.in	गोरखपुर (एन.ई.आर.)	www.rrbgkp.gov.in
अजमेर (एन.डब्ल्यू.आर.)	www.rrbajmer.gov.in	गुवाहाटी (एन.एफ.आर.)	www.rrbguwahati.gov.in
बेंगलुरु (एस.डब्ल्यू.आर)	www.rrbbnc.gov.in	कोलकाता (ई.आर.)	www.rrbkolkata.gov.in
भोपाल (डब्ल्यू.सी.आर.)	www.rrbbhopal.gov.in	मुंबई (सी.आर.)	www.rrbmumbai.gov.in
भुवनेश्वर (ई.सी.ओ.आर.)	www.rrbbbs.gov.in	पटना (ई.सी.आर)	www.rrbpatna.gov.in
बिलासपुर (एस.ई.सी.आर.)	www.rrbbilaspur.gov.in	प्रयागराज (एन.सी.आर.)	www.rrbpryj.gov.in
चंडीगढ़ (एन.आर.)	www.rrbcdg.gov.in	रांची (एस.ई.आर.)	www.rrbranchi.gov.in
चेन्नई (एस.आर.)	www.rrbchennai.gov.in	सिकंदराबाद (एस.सी.आर.)	www.rrbsecunderabad.gov.in

सं०- आरआरबी / अज / विज्ञापन / सीईएन-09 / 2025.
दिनांक: 30.01.2026
अध्यक्ष
रेलवे भर्ती बोर्ड

सावधान का दलाल, दलालों और नौकरी रैकेटियर"दलालों, नौकरी दिनाने वालों और ठगों से सावधान रहें'

खाद्य सुरक्षा टीम ने सैम्पल लिये

खैरथल, (निसं)। मुख्यमंत्री पोर्टल पर मिली शिकायत के आधार पर खाद्य सुरक्षा एवं औषधि नियंत्रण विभाग टीम ने गुरुवार को जिला मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी डॉ. अरविंद के निर्देशन में देशी घी विक्रेता की दुकान से देशी घी का नमूना लिया और मिलावट का संदेह होने पर 75 किलो घी जब्त कर दुकान से लिए घी के नमूने को जांच के लिए खाद्य सुरक्षा मानक प्रयोगशाला भेजा गया।

खाद्य सुरक्षा अधिकारी हेमंत कुमार यादव ने बताया कि जिला मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी डॉ अरविंद गेट के निर्देशन में गुरुवार को खैरथल तिजारा जिले की फर्म मैसर्स तोताराम राजीव कुमार, मालिक राजीव कुमार गुप्ता पुत्र तोताराम के यहां से देसी घी का नमूना लिया गया। नमूना लेने के पश्चात घी में मिलावट का संदेह होने पर मौके पर ही लगभग 75 किलोग्राम घी जब्त किया गया। इसके अलावा जिले के अंतर्गत किराणा एवं मिष्ठान भंडारों पर निरीक्षण कर खाद्य पदार्थों के नमूने लिए गए।

उदयपुर में अवैध डोडा-चूरा से भरी कार जब्त

उदयपुर, (निसं)। खेरोदा थाना पुलिस ने अवैध डोडा-चूरा से भरी कार जब्त की है। खेरोदा थाना अधिकारी सुरेश विश्नोई के नेतृत्व में गठित दल ने राष्ट्रीय राजमार्ग 48पर वाना चौराहे पर नाकाबंदी शुरू की। इस दौरान उदयपुर की तरफ से आ रही कार नाकाबंदी देख कर चालक गलत दिशा मंगलवाड़ की तरफ ले गया। इस पर थानाधिकारी के नेतृत्व में हेड कांस्टैबल कुलदीप ने पिछा कर स्टॉप स्टीक से कार को टायर ब्रस्ट किया। इसके बावजूद चालक कार एकांत में ले जाकर छोड़ कर फरार हो गया। तलाशी ली तो उसमें प्लास्टीक के 22 कट्टों में 468.270 किलोग्राम अवैध डोडा-चूरा, अलग अलग नंबर की पांच प्लेटें मिली।

कोहरे से कार-बस में टक्कर, पांच जने गंभीर घायल

वाहनों की स्पीड कम होने से बची जान, घायलों को ट्रोमा सेंटर रैफर किया

- **कार सवार सभी रामदेवरा से वापस पंजाब की ओर जा रहे थे**

बीकानेर, (निसं)। यहां नेशनल हाइवे संख्या 62 पर घने कोहरे के कारण सुबह एक सड़क हादसा हुआ। बीकानेर से पंजाब जा रही कार और बीकानेर की ओर आ रही लोकल बस आमने-सामने टकरा गई। हादसे में कार में सवार पांच लोग घायल हो गये, जिनमें तीन महिलाएं शामिल हैं। ये सभी रामदेवरा से वापस पंजाब की ओर जा रहे थे। सभी को पीबीएम हॉस्पिटल में भर्ती कराया गया है और उनकी स्थिति खतरे से बाहर बताई जा रही है।

लूणकरनसर थाने के एसआई अनूप कुमार ने बताया कि कोहरे की वजह से विजिबिलिटी कम थी। कार और बस की स्पीड कम होने के कारण बड़ा हादसा टल गया। कार में सवार गंगाराम (63), मंजीत (60), उषा देवी (50), महेंद्रपाल (55) और तुलछा देवी (65) घायल हुए हैं। घायलों के सिर और छाती पर चोटें नहीं आई, केवल हाथ और पैर में चोटें लगी हैं। सभी पंजाब के अमरकोट निवासी है। सभी को एंबुलेंस से पीबीएम हॉस्पिटल लाया गया। डॉक्टरों ने उनकी हालत सामान्य बताई है। हादसे में कार का आगे का हिस्सा पूरी तरह क्षतिग्रस्त हो गया। पुलिस ने बताया कि कार में प्रसाद रखा हुआ था, जिससे लगता है कि लोग किसी मंदिर से लौट रहे थे। बताया जा रहा है कि ये रामदेवरा की यात्रा करके लौट रहे थे और इस दौरान लूणकरनसर से पहले हादसे का शिकार हो गये। पुलिस ने कार और बस दोनों को कब्जे में ले लिया है। कोहरे की वजह से हुई दुर्घटना की जांच जारी है। फिलहाल सभी घायलों की हालत स्थिर है।

Abridged NIB
Office of the Executive Engineer WD&SC P.S. Rajsamand Distt. Rajsamand

File no. () पसरा / MJSA2.0 Phase-II& PMKSY 2.0 WDC 01/21-22, RAJSAMAND, BLOCK AMET / निविदा-लेखा/2025-26/639-643 Date 21/01/2026

NOTICE INVITING BID
NIB No.-(5-9)/2025-26

Bids for the execution of, mentioned as below, under MJSA 2.0, Phase-II & PMKSY 2.0 WDC 01/21-22, RAJSAMAND, BLOCK AMET projects of estimated value as mentioned below are invited from interested bidders, from 22-01-2026, 10:00 AM to 31-01-2026 upto 06:00 PM. Other particulars of the bid may be visited on the procurement portal (https://eproc.rajasthan.gov.in or https://sppp.rajasthan.gov.in) of the state and department website (https://water.rajasthan.gov.in/wdsc).

Sr. N0.	Name of work	SCHEME	Block	Extimated Cost (Rs. In Lakhs)	No of works in One packege	NIT No./ Year	NIB Code	UBN No.
1	Pacca Chekdam Work (01 work),	PMKSY 2.0 WDC 01/ 21-22, RAJSAMAND, BLOCK AMET	AMET	48.15	01	05/2025-26	WSC2526A 1409	WSC2526 WSOB02450
2	Amrit Sarowar Karya (02 work)	PMKSY 2.0 WDC 01 /21-22, RAJSAMAND, BLOCK AMET	AMET	29.48	02	06/2025-26	WSC2526A 1410	WSC2526 WSOB02451
3	MPT,CCT,ECD, SANKAN POND, FARM POND (31 WORKS)	MJSA 2.0, Phase-II (STATE FUND)	AMET	45.02	31	07/2025-26	WSC2526A 1411	WSC2526 WSOB02452
4	PCD, MPT, Sunken Pond, CCT Works (17 Work),	MJSA 2.0, Phase-II (STATE FUND)	RAJSA MAND	22.10	17	08/2025-26	WSC2526A 1412	WSC2526 WSOB02453
5	Constration of CCT (19 work)	MJSA 2.0, Phase-II (STATE FUND)	RAILMA NGRA	18.56	19	09/2025-26	WSC2526A 1413	WSC2526 WSOB02454

Vijay Bahadur Pal)
Executive Engineer
Watershed Development & Soil Conservation P.S. Rajsamand
DIPR/C/1544/2026

बीफ निर्यातक कंपनियों से चंदा लेने के कांग्रेस विधायक के आरोप पर सदन में हंगामा मचा

सत्ता पक्ष ने विधायक हरिमोहन शर्मा के आरोपों पर गहरी आपत्ति जताते हुए कहा कि, ''या तो प्रमाण पेश करें, अन्यथा माफी मांगे, नहीं तो सदन में बोलने नहीं देंगे''

-विधानसभा संवाददाता-

जयपुर। राजस्थान विधानसभा में बजट सत्र के दूसरे दिन राज्यपाल के अभिभाषण पर चर्चा के दौरान कांग्रेस विधायक हरिमोहन शर्मा के विवादास्पद बयान पर सदन में जमकर हंगामा हुआ। बूंदी से कांग्रेस विधायक ने आरोप लगाया कि भाजपा गौभक्त बनती है, लेकिन बीफ निर्यात करने वाली कंपनियों से चंदा लेकर चुनाव लड़ती है। उनके इस बयान पर सत्तापक्ष ने तत्काल गहरी नाराजगी और आपत्ति जताई। भाजपा विधायकों ने कहा कि यदि उनके पास इसका कोई प्रमाण है तो वे सदन में पेश करे, इस पर संसदीय कार्य मंत्री जोगाराम पटेल सहित कई भाजपा विधायक खड़े हो गए और कहा कि जब तक प्रमाण नहीं दिया जाता, तब तक उन्हें बोलने नहीं दिया जाएगा और उन्हें माफी मांगनी चाहिए।

इस पर हरिमोहन शर्मा ने कहा कि गौकशी करने वाली कंपनियों से चंदा लेना एक रिकॉर्डेड फैक्ट है। भाजपा सदस्यों के लगातार हंगामे के बाद सभापति संदीप शर्मा ने कांग्रेस विधायक के इस वक्तव्य को सदन की कार्यवाही से निकाल दिया। हंगामे के बीच हरिमोहन शर्मा ने कहा कि राजस्थान में 1671 पंजीकृत गौशालाएं हैं, जिनमें 7 लाख 63 हजार गोवंश हैं और गौशालाओं का सरकार पर करोड़ों रुपए बकाया है। गौवंश भूखे मर रहे हैं और सड़कों पर आ रहे हैं, लेकिन सरकार उन्हें पैसा नहीं दे रही।

■ हालांकि सभापति संदीप शर्मा ने इस आरोप को सदन की कार्यवाही से बाहर निकालकर मामले को शांत कराया

यूडीएच मंत्री से भी हुई तीखी नोंकझोंक

इससे पहले कांग्रेस विधायक हरिमोहन शर्मा और यूडीएच मंत्री झाबर सिंह खर्रा के बीच भी तीखी नोंकझोंक हुई। दरअसल हरिमोहन शर्मा ने कहा कि, भाजपा दावा कर रही है कि उसने अपने घोषणापत्र के 70 फीसदी वादे पूरे कर दिए हैं और बाकी 30 फीसदी अगले साल पूरे हो जाएंगे, लेकिन जनता ने भाजपा को अंता उपचुनाव में आईना दिखाया है। उन्होंने आरोप लगाया कि भाजपा हार के डर से निकाय व पंचायत चुनाव नहीं करा रही है। इस पर संसदीय कार्य मंत्री जोगाराम पटेल ने कहा कि कांग्रेस को अपने गिरेबान में झांकना चाहिए। विधायक शर्मा ने नगर पालिका सभापति को 8 बार हटाए जाने का मामला उठाया, जिस पर यूडीएच मंत्री झाबर सिंह खर्रा ने जवाबी हमला बोलते हुए कहा कि, क्या कांग्रेस चाहती है कि भ्रष्ट सभापति पर कार्रवाई न हो? जब तक ओबीसी आयोग की रिपोर्ट नहीं आती, तब तक चुनाव नहीं हो सकते।

इससे पहले हरिमोहन शर्मा ने मनरेगा का मामला उठाते हुए आरोप लगाया कि राज्यपाल से सरकार ने असत्य बुलवाया। महात्मा गांधी विश्वभर में पूजे जाते हैं, लेकिन वैचारिक दृष्टि से भाजपा का शीर्ष नेतृत्व नाथूराम गोडसे की विचारधारा से प्रभावित है, इसलिए महात्मा गांधी का नाम हटाकर राम का नाम लिया गया। इस पर भाजपा सदस्यों ने कहा कि महात्मा गांधी का जितना सम्मान भाजपा ने किया, उतना कांग्रेस ने नहीं किया।

मुख्यमंत्री भजनलाल ने किया अच्छे वक्ताओं का सम्मान

विधानसभा में भाजपा विधायकों की हौसला-अफजाई की, लड्डू खिलाए

-विधानसभा संवाददाता-

जयपुर। राजस्थान विधानसभा में गुरुवार को दिनभर चली कार्यवाही के बाद देर शाम एक अलग ही दृश्य देखने को मिला, जब मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा स्वयं विधानसभा परिसर पहुंचे और सक्रिय व प्रभावी ढंग से अपनी बात रखने वाले भाजपा विधायकों का उत्साहवर्धन किया। मुख्यमंत्री ने अच्छा बोलने वाले विधायकों को लड्डू खिलाकर न सिर्फ उनका सम्मान किया, बल्कि सकारात्मक संसदीय व्यवहार को प्रोत्साहित करने का संदेश भी दिया।

इस अवसर पर मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा के साथ उप मुख्यमंत्री डॉ. प्रेमचंद बैरवा, संसदीय कार्य मंत्री जोगाराम पटेल, खाद्य एवं नागरिक आपूर्ति मंत्री सुमित गोदारा, पंचायतीराज राज्यमंत्री ओटाराम देवासी, गृह राज्य मंत्री जवाहर सिंह बेढम, उद्योग एवं वाणिज्य राज्यमंत्री के.के. विश्नोई सहित कई मंत्री और विधायक मौजूद रहे। मुख्यमंत्री से मिलने वालों में विधायक चंद्रभान सिंह, बाबूसिंह राठौड़, छगन सिंह राजपुरोहित, गुरवीर सिंह बराड़, सुभाष मील, कुलदीप धनकड़, अतुल भंसाली, उदयलाल भडाणा सहित अन्य भाजपा विधायक शामिल रहे। सभी ने विधानसभा की कार्यवाही, जनहित के मुद्दों और सरकार की नीतियों को प्रभावी रूप से सदन में रखने पर चर्चा की।

दिलचस्प बात यह रही कि इस दौरान कांग्रेस के विधायक ललित यादव, जाकिर हुसैन और डूंगरराम गेदर ने भी मुख्यमंत्री से मुलाकात की। इसे सदन के भीतर सौहार्दपूर्ण और सकारात्मक राजनीतिक माहौल के संकेत के रूप में देखा जा रहा है।

मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने विधायकों से संवाद करते हुए कहा कि लोकतंत्र की मजबूती के लिए सदन में सार्थक, तथ्यपरक और जनहित से जुड़ी चर्चा बेहद जरूरी है। उन्होंने कहा कि जो विधायक जनता की आवाज को मजबूती से सदन में रखते हैं, उनका प्रोत्साहन किया जाना चाहिए। मुख्यमंत्री की इस पहल को भाजपा विधायकों के मनोबल को बढ़ाने और विधानसभा की कार्यवाही को और अधिक प्रभावी बनाने की दिशा में एक सकारात्मक कदम माना जा रहा है।

अशोक गहलोत पर 25 करोड़ के घोटाले का आरोप

जयपुर (विसं)। विधानसभा में राज्यपाल के अभिभाषण पर बहस के दौरान भाजपा विधायक अतुल भंसाली ने पूर्व मुख्यमंत्री अशोक गहलोत पर 25 करोड़ रुपए का घोटाला करने का आरोप लगाया। उन्होंने कहा कि कांग्रेस राज में खूब भ्रष्टाचार हुआ, इनके मंत्री तक जेल गए।

भंसाली ने कहा कि, पूर्ववर्ती कांग्रेस सरकार के घोटाले अब खुल रहे हैं, इनके मंत्री तक जेल गए। मेरे खुद के जोधपुर शहर में आरयूआईडीपी के काम में 25 करोड़ रुपए का घोटाला पूर्व मुख्यमंत्री अशोक गहलोत ने अपने विधानसभा क्षेत्र में कर लिया। इससे बड़ी शर्मनाक बात नहीं हो सकती।

उन्होंने कहा कि, पूर्ववर्ती कांग्रेस सरकार के राज में जमकर भर्ती परीक्षाओं के पेपरलीक हुए। जबकि हमारी भाजपा सरकार ने बीते 2 सालों में पेपरलीक करने वाले और नकल करके नौकरियां पाने वालों को जेल भेजा। हमारी सरकार ने भ्रष्टाचार पर जीरो टॉलरेंस का वादा किया था, जिसे पूरा किया।

इससे पहले कांग्रेस विधायक एवं उपनेता प्रतिपक्ष रामकेश मीणा ने भाजपा पर एस.आई.आर. (विशेष पुनरीक्षण अभियान) की आड़ में फर्जीवाडा करने का आरोप लगाया। रामकेश मीणा ने कहा कि एस.आई.आर. में भाजपा कार्यकर्ताओं ने फर्जीवाड़ा किया है। एक-एक कार्यकर्ता ने फर्जी हस्ताक्षर करके 500-500 फॉर्म जमा करवा दिए हैं। जिसने भी फर्जी हस्ताक्षर किए हैं, उसमें एक फॉर्म पर एक साल की सजा है। आप लोगों को 500 साल की जेल होगी। 500 साल तक जेल में रहना चाहते हो क्या। इसकी जांच होगी और हम जांच करवाएंगे।

राहुल गांधी को ''पप्पू'' कहने पर कांग्रेस का हंगामा

जयपुर (विसं)। विधानसभा में गुरुवार को राज्यपाल के अभिभाषण पर बहस के दौरान ब्यावर से भाजपा विधायक शंकर सिंह रावत ने राहुल गांधी के लिए पप्पू शब्द का इस्तेमाल किया। इस पर कांग्रेस विधायकों ने हंगामा और नारेबाजी की।शंकर सिंह रावत ने कहा कि, राहुल गांधी विदेश में जाकर देश की बुराई करते हैं। कांग्रेस नेता ध्यान दें वो अब पप्पू नहीं रहे। आपको उसकी सगाई करनी चाहिए,उसके हाथ पीले करने हैं। हमारा समय खराब नहीं करें। इस पर सभापति ने रावत को उचित शब्दों का प्रयोग करने की सलाह दी।मंत्री अविनाश गहलोत ने भी विधायक रावत का पक्ष लेते हुए कहा कि हमारे शंकर सिंह गलत कहां बोल रहे हैं, आप गूगल सर्च करोगे तो वही बात आएगी जो शंकर सिंह बता रहे हैं। इसके थोड़ी देर बाद सदन की कार्यवाही स्थगित कर दी गई।

घोघरा ने कमीशनखोरी का आरोप लगाया तो जनजाति मंत्री ने जताई कड़ी नाराजगी

जयपुर (विसं)। विधानसभा में राज्यपाल के अभिभाषण पर बहस के दौरान कांग्रेस विधायक गणेश घोघरा के आरोपों पर हंगामा हो गया।

गणेश घोघरा ने जनजाति विकास मंत्री पर कमीशनखोरी के आरोप लगाए। इस पर सभी मंत्रियों ने कड़ी आपत्ति की और बिना सबूत आरोपों को सदन की कार्यवाही से निकलने की मांग की। इसके बाद सभापति ने आरोपों को कार्यवाही से हटाने का आश्वासन दिया। जनजाति विकास मंत्री बाबूलाल खराड़ी ने गणेश घोघरा पर गहरी नाराजगी जताते हुए कहा कि, ''एक पैसे का आरोप साबित कर दे तो राजनीति छोड़ दूंगा।''

इससे पूर्व गोघरा ने आरोप लगाते हुए कहा था कि, ''मां-बाड़ी केंद्र शुरू करने के लिए मंत्री के पास कितना कमीशन आया? मैं जनजाति मंत्री से पूछना चाहता हूं, आपके पास कितना कमीशन आया? यह जनजाति का पैसा है, लेकिन समन्वयक गैर जनजाति के लोग लगाए, कौन से कानून के अंतर्गत लगाए?

■ मंत्री खराड़ी ने कहा ''एक पैसे का आरोप साबित कर दें तो राजनीति छोड़ दूंगा''

घोघरा ने कहा कि सरकार झूठे दावे कर रही है। पेंशन नहीं मिल रही। पीएम आवास देने के दावे कर रहे हैं, लेकिन पीएम आवास की किश्त समय पर नहीं मिल रही है। लोगों के मकान अधूरे पड़े हैं। साल भर से पैसा नहीं मिल रहा।

मेट और कारीगर का भुगतान नहीं हुआ है। डबल इंजन की सरकार कच्चे काम भी नहीं निकल रही है।

धर्मस्थलों पर लाउडस्पीकर का मुद्दा विधानसभा में गूंजा

विधायक बालमुकुंदाचार्य ने कहा ''ध्वनि प्रदूषण से लोग परेशान, विद्यार्थियों की पढ़ाई हो रही बाधित''

विधायक बालमुकंदाचार्य

जयपुर (विसं)। हवामहल विधायक बालमुकुंदाचार्य ने गुरूवार को विधानसभा में धर्मस्थलों पर लाउड स्पीकर का मुद्दा उठाया। शून्यकाल में बोलते हुए विधायक बालमुकुंदाचार्य ने कहा कि कई धर्म स्थलों, विशेषकर मीनारों की ऊंचाई पर लगे लाउड स्पीकरों से अत्यधिक तेज आवाज में प्रसारण किया जाता है। सुबह करीब 4 बजे से ही लाउड स्पीकर बजने लगते हैं, जिससे आमजन की नींद में खलल पड़ता है। यह न केवल लोगों की दिनचर्या को प्रभावित कर रहा है, बल्कि उनके मौलिक अधिकारों का भी हनन है।

उन्होंने कहा कि कि स्थानीय लोगों द्वारा मस्जिदों में लाउड स्पीकर की आवाज कम करने का आग्रह करने पर कई बार विवाद की स्थिति बन जाती है और धर्म विशेष के कुछ लोग झगड़े पर उतर आते हैं, जिससे क्षेत्र में तनाव का माहौल पैदा हो जाता है।

रमजान के दौरान अतिरिक्त लाउड स्पीकर लगाए जाते हैं और आवाज और अधिक तेज कर दी जाती है, जिससे बीमार लोगों, बुजुर्गों और छोटे बच्चों को गंभीर परेशानी का सामना करना पड़ता है।

विधायक बालमुकंदाचार्य ने कहा कि इस समस्या को लेकर कई बार संबंधित विभागों में शिकायतें दर्ज कराई गईं, लेकिन अब तक कोई ठोस कार्रवाई नहीं हुई है। तेज आवाज के कारण विद्यार्थियों की पढ़ाई प्रभावित हो रही है और ध्वनि प्रदूषण लगातार बढ़ता जा रहा है, जो बुजुर्गों के स्वास्थ्य के लिए भी बेहद हानिकारक है। उन्होंने सरकार से मांग की कि लाउड स्पीकरों के उपयोग को लेकर स्पष्ट नियम बनाए जाएं और उनकी आवाज की तीव्रता तय की जाए, ताकि आमजन को राहत मिल सके और साथ ही सांप्रदायिक सौहार्द भी बना रहे।

विधानसभा में गूंजा जयपुर में लेपर्ड के बढ़ते मूवमेंट का मुद्दा

जयपुर (विसं)। राजधानी जयपुर के आबादी इलाकों में लेपर्ड के मूवमेंट का मामला गुरूवार को विधानसभा में गूंजा। मालवीय नगर से भाजपा विधायक कालीचरण सराफ के सवाल के जवाब में वन राज्य मंत्री संजय शर्मा ने कहा कि आबादी इलाकों में लेपर्ड सहित वन्यजीवों के मूवमेंट पर नजर रखने के लिए एक हैल्पलाइन बनेगी। एक महीने में यह 1926 हेल्पलाइन शुरू हो जाएगी। इस हेल्पलाइन पर आबादी इलाकों में लेपर्ड सहित वन्यजीवों के मूवमेंट की जानकारी दी जा सकेगी।

कालीचरण सराफ ने पूरक सवाल पूछते हुए महाराष्ट्र की तर्ज पर सिक्योरिटी प्रोटोकॉल लागू करने का सुझाव दिया, जिस पर वन मंत्री ने पूरा करने का आश्वासन दिया। वन मंत्री से अपने सवालों के बीच एक और पूरक प्रश्न में विधायक कालीचरण सराफ ने पूछा कि क्या सरकारी यह मानती है कि जयपुर के झालाना, आमागढ़ और बीड पीपाड़ इलाकों में बढ़ रही लेपर्ड की संख्या के बीच वनों का क्षेत्र काम हो रहा है।

■ राज्य सरकार अगले एक माह में हैल्पलाइन नंबर 1926 शुरू करेगी

महाराष्ट्र की तर्ज पर सिक्योरिटी प्रोटोकॉल लागू करने का सुझाव देते हुए कहा कि, इस व्यवस्था के तहत सूचना मिलने के तत्काल बाद 5 किलोमीटर का क्षेत्र सील कर दिया जाता है, ताकि लोगों के साथ-साथ वन्य जीव को भी सुरक्षा दी जा सके। जिस पर वन मंत्री ने भरोसा दिलाया कि अन्य राज्यों में इस तरह की हालत सामने आने पर की जाने वाली व्यवस्था का राज्य सरकार परीक्षण करवाएगी और इसी वित्तीय वर्ष में प्रयास होगा कि इसे राजस्थान में भी लागू किया जा सके।

मासूम से दुष्कर्म के मुद्दे पर गर्माया सदन

जयपुर (विसं)। विधानसभा में शून्यकाल समाप्त होने से ठीक पहले सीकर से विधायक राजेंद्र पारीक द्वारा जिले में 8 वर्षीय मासूम के साथ हुए दुष्कर्म के मामले को उठाए जाने पर सदन का माहौल गरमा गया। मुद्दा उठते ही विपक्ष के विधायकों ने सरकार के खिलाफ विरोध जताते हुए पोस्टर दिखाने शुरू कर दिए, जिससे सदन में हंगामे की स्थिति बन गई।

विधायक राजेंद्र पारीक ने कहा कि प्रदेश में आए दिन मासूम बच्चियों के साथ दुष्कर्म की घटनाएं सामने आ रही हैं।

सरकार ने इस तरह की घटनाओं को रोकने के लिए कई व्यवस्थाएं की हैं, लेकिन अब उन व्यवस्थाओं की प्रभावशीलता का परीक्षण किया जाना आवश्यक है। उन्होंने कहा कि जब तक व्यवस्था की जमीनी हकीकत नहीं परखी जाएगी, तब तक ऐसी घटनाओं पर रोक लगाना मुश्किल होगा।

कांग्रेस के 5 साल से ज्यादा सड़कें हमने 2 साल में बनाईं : दिया कुमारी

विधानसभा में उपमुख्यमंत्री ने कांग्रेस विधायकों को उनके सवालों पर घेरा

जयपुर (विसं)। उपमुख्यमंत्री दिया कुमारी ने गुरूवार को विधानसभा में कहा कि, पूर्ववर्ती कांग्रेस सरकार ने पिछले 5 सालों में जितनी दूरी में सड़कें बनाई, हमने उससे ज्यादा तो बीते 2 सालों में बना दी है। इस दौरान हंगामे की कोशिश करने वाले कांग्रेस विधायकों को भी उपमुख्यमंत्री दिया कुमारी ने जमकर आड़े हाथों लिया। उन्होंने कहा कि, सवाल का जवाब देने से पहले ही अग्रेसिव क्यों हो रहे हो? सवाल पूछा है तो उसका जवाब सुनो।

कांग्रेस विधायक चेतन पटेल के सवाल के जवाब में डिप्टी सीएम दीया कुमारी ने कहा कि ''पिछली सरकार में 5 साल में 13 हजार किलोमीटर नई सड़कें बनाई गईं। जबकि हमने दो साल में ही 16 हजार 864 किलोमीटर की नई सड़कें बना दीं।

■ 'कांग्रेस ने 13 हजार किमी.बनाई थी, हमने 16864 किमी सड़के मात्र 2 साल में बना दी'

दीया कुमारी ने कांग्रेस विधायकों पर पलटवार करते हुए कहा कि पांच साल आपके, दो साल हमारे काम की तुलना सुन लीजिए। पिछली सरकार में 1104 गांव सड़कों से जुड़े। हमने दो साल में 1700 गांव सड़कों से जोड़ दिए हैं। सड़कों के नवीनीकरण पर कांग्रेस के 5 साल में 12300 करोड़ खर्च किए जबकि हम दो साल में नवीनीकरण पर 8450 करोड़ खर्च कर चुके हैं।

दीया कुमारी ने कहा कि आपकी सरकार में 2022-23 में सड़कों के चयन में हमारे विधायकों की सिफारिश पर कोई स्वीकृति जारी नहीं की। परंतु हमारी सरकार ने बिना भेदभाव सभी विधायकों से उनके क्षेत्रों से अनुशंसा लेने के प्रयास किए। जिन विधायकों की सिफारिश मिली, उनकी मंजूरियां जारी हो चुकी हैं।

इससे पहले कांग्रेस विधायक चेतन पटेल ने प्रश्न करते हुए कहा कि, उनके क्षेत्र में मंजूर सड़कों में सीएम की बजट घोषणा की पालना नहीं हो रही।

डीआरआई ने 17.6 किलो हाइड्रोपोनिक वीड पकड़ा

जयपुर (कासं)। राजस्व खुफिया निदेशालय (डीआरआई) की टीम ने 17.6 किलो हाइड्रोपोनिक वीड (गाँजा) के साथ जयपुर एयरपोर्ट पर एक यात्री को गिरफ्तार किया। डीआरआई अधिकारियों ने यह कार्रवाई खुफिया सूचना के आधार पर की। बताया जा रहा है कि 29 जनवरी को आबू धाबी से जयपुर पहुंची फ्लाइट में एक यात्री के पास यह हाइड्रोपोनिक वीड (गाँजा) मिला। हैदराबाद निवासी यह यात्री बैंकॉक से आबू धाबी होते हुए जयपुर आया था। अधिकारियों को यात्री के ट्रॉली बैग से 17.6 किलो हाइड्रोपोनिक वीड मिला, जिसकी अंतरराष्ट्रीय बाजार में कीमत लगभग 6.5 करोड़ रुपये है। यह जयपुर एयरपोर्ट पर डीआरआई की सबसे बड़ी कार्यवाही है। राजस्व खुफिया निदेशालय (डीआरआई) जयपुर ने नशे की तस्करी सिंडिकेट से जुड़े हैदराबाद निवासी एक युवक को गिरफ्तार करके न्यायालय के समक्ष प्रस्तुत किया, जहां से न्यायालय के आदेश के बाद आरोपी को जेल भेज दिया गया।

■ जयपुर एयरपोर्ट पर आबू धाबी से आया यात्री गिरफ्तार

■ आरोपी के कब्जे से जब्त गांजे की कीमत 6.5 करोड़ रु. है

मुख्यमंत्री के नेतृत्व में अग्रणी बन रहा राजस्थान : लालाराम बैरवा

भीलवाड़ा/शाहपुरा (कासं)। सोलहवीं विधानसभा के पंचम सत्र के दूसरे दिन गुरुवार को शाहपुरा (भीलवाड़ा) से विधायक लालाराम बैरवा ने प्रश्नकाल के बाद पत्रकारों से बातचीत करते हुए कहा कि मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा के नेतृत्व में राजस्थान में अनेक क्षेत्रों में उल्लेखनीय कार्य हुए हैं और प्रदेश को अग्रणी राजस्थान बनाने की दिशा में ठोस कदम उठाए गए हैं।

विधायक बैरवा ने कहा कि पिछले दो वर्षों में एक भी पेपर लीक नहीं होने से युवाओं का भरोसा व्यवस्था पर बढ़ा है। राज्य सरकार ने महिलाओं को सुरक्षित वातावरण देने के साथ-साथ उन्हें आत्मनिर्भर बनाने पर भी विशेष ध्यान दिया है। किसानों को उनकी फसल का पूरा भुगतान समय पर मिल रहा है तथा प्राकृतिक आपदा या खराबे की स्थिति में पूर्ण मुआवजा दिया जा रहा है।

आदिवासी क्षेत्र में ''ग्लोबल गुरूकुलम'' के लिए भूमि पूजन

जयपुर (कासं)। भारतीय शिक्षा बोर्ड के अध्यक्ष एवं रिटायर्ड आईएएस एन. पी. सिंह तथा अनुसूचित जनजाति आयोग के पूर्व अध्यक्ष जी. आर. राणा की उपस्थिति में बालोद जिले के गुरूर विकासखंड अंतर्गत सुदूर आदिवासी ग्राम भेजा जंगली में तथागत ''ग्लोबल गुरुकुलम'' का विधिवत भूमि पूजन संपन्न हुआ। यह आयोजन जनजातीय विकास के उद्देश्य से जकवार फाउंडेशन और तथागत ट्रस्ट के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित किया गया, जिसमें सैकड़ों आदिवासी ग्रामीण शामिल हुए।

भूमि पूजन से पूर्व राजा राव बाबा और कंकालीन माता की पूजा-अर्चना की गई। इसके पश्चात शहीद वीर नारायण सिंह के तैलीय चित्र पर माल्यार्पण किया गया। कार्यक्रम में उपस्थित जनसमूह को संबोधित करते हुए एन. पी. सिंह ने कहा कि इस गुरुकुलम की स्थापना का उद्देश्य समाज की अंतिम पंक्ति में खड़े आदिवासी और ग्रामीण बच्चों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा से जोड़कर उनका भविष्य सुरक्षित करना है। उन्होंने कहा कि जब तक सुदूर ग्रामीण क्षेत्रों के बच्चों को शहरों जैसी शिक्षा नहीं मिलेगी, तब तक विकसित भारत का सपना अधूरा ही रहेगा।उन्होंने स्पष्ट किया कि भेजा जंगली में स्थापित होने वाला यह विद्यालय शिक्षा के स्तर पर दिल्ली और अन्य बड़े शहरों के प्रतिष्ठित स्कूलों के समान होगा। यहां बच्चों को केवल अकादमिक शिक्षा ही नहीं, बल्कि जीवन मूल्यों और संस्कारों की भी शिक्षा दी जाएगी।

रिटायर्ड आईएएस एन. पी. सिंह तथा अनुसूचित जनजाति आयोग के पूर्व अध्यक्ष जी. आर. राणा ने ''ग्लोबल गुरुकुलम'' का भूमि पूजन किया।

इस विद्यालय का निर्माण कार्य फरवरी माह से प्रारंभ किया जाएगा। इस गुरुकुलम से भेजा जंगली सहित आसपास के 10 से 12 गांवों के आदिवासी और ग्रामीण बालक-बालिकाओं को प्रत्यक्ष लाभ मिलेगा। भूमि पूजन की इस ऐतिहासिक पहल से पूरे वनांचल क्षेत्र में खुशी की लहर देखने को मिली।

कार्यक्रम में ग्राम पंचायत की सरपंच शीला यादव, पंच नागेश्वर सलाम, दिनेश यादव, बलराम गोटी स हित अनेक जनप्रतिनिधि और गणमान्य नागरिक उपस्थित रहे।

सुनील शर्मा बने कांग्रेस के जयपुर शहर जिलाध्यक्ष

जयपुर । कांग्रेस पार्टी ने राजस्थान के 4 जिलाध्यक्ष गुरूवार देर रात घोषित कर दिए। इनमें सुनील शर्मा को जयपुर शहर जिलाध्यक्ष बनाया गया है। इसी प्रकार प्रतापगढ़ से दिग्विजय सिंह, झालावाड़ से वीरेन्द्र सिंह गुर्जर और बारां से हंसराज मीणा को पार्टी जिला अध्यक्ष की कमान सौंपी गई है।

इस संबंध में के.सी. वेणुगोपाल ने नियुक्ति आदेश जारी किए। बीते लंबे समय से कांग्रेस में जिलाध्यक्षों की नियुक्तियां लंबित चल रही थी, परंतु पिछले दिनों कांग्रेस ने इन चार जिलों को छोड़कर अन्य जगहों की नियुक्तियां कर दी थीं।

जोधपुर ने रचा पर्यटन क्षेत्र में नया इतिहास

वर्ष 2025 में आए 38 लाख से अधिक पर्यटक

जयपुर (कासं)। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने जोधपुर में वर्ष 2025 में रिकॉर्ड 38 लाख से अधिक पर्यटकों के आगमन पर प्रसन्नता व्यक्त की है। उन्होंने कहा कि यह अभूतपूर्व उपलब्धि जोधपुर की वैश्विक स्तर पर एक 'कम्प्लीट टूरिस्ट डेस्टिनेशन' के रूप में नई पहचान का सशक्त प्रमाण है। मुख्यमंत्री ने कहा कि यह कीर्तिमान प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के दूरदर्शी नेतृत्व में हमारी डबल इंजन की सरकार के ''विकास भी-विरासत भी'' के संकल्प का सुपरिणाम है। उन्होंने कहा कि केंद्र एवं राज्य सरकार के समन्वित प्रयासों से पर्यटन अवसंरचना के सुदृढ़ीकरण, ऐतिहासिक स्थलों के संरक्षण, बेहतर कनेक्टिविटी, स्वच्छता, सुरक्षा तथा पर्यटक-सुविधाओं के विस्तार से जोधपुर अंतरराष्ट्रीय मानकों के अनुरूप विकसित हुआ है। शर्मा ने कहा कि जोधपुर की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत, ऐतिहासिक धरोहरें, लोककला और पारंपरिक हस्तशिल्पदेश-विदेश के पर्यटकों को निरंतर आकर्षित कर रही हैं, जिसके परिणामस्वरूप पर्यटन क्षेत्र में सतत वृद्धि दर्ज की जा रही है। उल्लेखनीय है कि मुख्यमंत्री की पहल पर गत वर्ष स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर राज्य स्तरीय समारोह का आयोजन जोधपुर में किया गया, जिससे राष्ट्रीय स्तर पर शहर की पहचान और अधिक सुदृढ़ हुई तथा पर्यटन को नई दिशा मिली।

■ मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने प्रसन्नता जताते हुए कहा ''जोधपुर बना कम्प्लीट टूरिस्ट डेस्टिनेशन''

साहित्याकार व कवियित्री को तथागत सम्मान

नई दिल्ली (कासं)। नई दिल्ली के साहित्य आकादमी सभागार में आयोजित गरिमामय समारोह में केरल के वरिष्ठ हिन्दी साहित्यकार ए. अरविंदाक्षन और अरुणाचल प्रदेश की युवा कवयित्री जमुना बीनी को 'तथागत साहित्य सम्मान' से सम्मानित किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ महाकवि निराला की सरस्वती वंदना पर आधारित कथक प्रस्तुति से हुआ। तथागत ट्रस्ट के संरक्षक डॉ. एन. पी. सिंह (पूर्व आईएएस) ने ट्रस्ट की परिकल्पना, सामाजिक-शैक्षिणक कार्यों और उत्तर-दक्षिण भारत के बीच भाषा-संस्कृति संवाद के लक्ष्य को रेखांकित किया। यह सम्मान प्रख्यात साहित्यकार रामदरश मिश्र की स्मृति में प्रदान किया गया। समारोह में वरिष्ठ साहित्यकारों अनामिका, ओम निश्चल, अशोक वाजपेयी, चंद्रकांता सहित अनेक विद्वानों ने दोनों रचनाकारों के साहित्यिक योगदान पर विचार साझा किए। ए. अरविंदाक्षन की कृति 'धड़कनों के भीतर जाकर' और जमुना बीनी के संग्रह 'जब आदिवासी गाता है' के माध्यम से भाषाई संवेदनाओं, आदिवासी चेतना और मानवीय मूल्यों की सशक्त अभिव्यक्ति सामने आई। यह आयोजन न केवल हिन्दी साहित्य, बल्कि समूचे भारतीय साहित्य में संवाद, संवेदना और मानवीयता को सुदृढ़ करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम रहा।

वरिष्ठ हिन्दी साहित्यकार ए. अरविंदाक्षन और अरुणाचल की युवा कवयित्री जमुना बीनी को 'तथागत साहित्य सम्मान' से नवाजा गया।

भिवाड़ी की फैक्टरियों से निकलने वाले गंदे पानी से मटीला गांव में जमीन धंसी

सड़क किनारे बह रहे दूषित पानी से दो भूमिगत गैस पाइपलाइन सड़क की सतह पर आ गई

अलवर, (निसं)। प्रदेश के औद्योगिक केंद्र भिवाड़ी की फैक्टरियों से निकलने वाले अनट्रीटेड गंदे पानी के कारण मटीला गांव में जमीन धंस गई। सड़क किनारे लगातार बह रहे इस दूषित पानी से दो भूमिगत गैस पाइपलाइन सतह पर आ गई। इससे क्षेत्र में सुरक्षा संबंधी चिंताएं बढ़ गई हैं।

पार्षद सब्बीर खान ने बताया कि जमीन धंसने के कारण सड़क के पास लगा एक बिजली का खंभा भी झुक गया है। उन्होंने आशंका जताई कि खंभा गिरने से उसके नीचे से गुजर रही गैस पाइपलाइन क्षतिग्रस्त हो सकती है, जिससे आग लगने या विस्फोट का खतरा पैदा हो सकता है। सड़क धंसने के बाद मौके पर आसपास के लोगों की भीड़ जमा हो गई। लोगों का कहना है कि शुक्र है अभी बिजली का खंभा नहीं गिरा गैस पाइपलाइन में विस्फोट हो सकता था।

ग्रामीणों ने बताया कि यह समस्या लंबे समय से बनी हुई है। भिवाड़ी की औद्योगिक इकाइयों से निकलने वाला

मटीला गांव में जमीन धंसने से दो भूमिगत गैस पाइपलाइन सतह पर आ गई।

रासायनिक युक्त औद्योगिक अपशिष्ट जल (इंडस्ट्रियल इफ्लुएंट) बिना किसी उपचार के इस रास्ते पर बह रहा है। ग्रामीणों ने कई बार प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड, रीको और अन्य संबंधित विभागों से शिकायतें कीं, लेकिन कोई ठोस कार्रवाई नहीं हुई। लगातार पानी के बहाव से मिट्टी कमजोर हुई, जिसके परिणामस्वरूप सड़क पटरी के पास जमीन धंस गई। चाय के खोके के

- **ग्रामीणों ने बताया कि भिवाड़ी की औद्योगिक इकाइयों से निकलने वाला रासायनिक युक्त औद्योगिक अपशिष्ट जल इस रास्ते पर बह रहा है**
- **ग्रामीणों ने तत्काल प्रभावित क्षेत्र को बैरिकेडिंग कर बंद करने, औद्योगिक इकाइयों से निकलने वाले दूषित पानी पर रोक लगाने की मांग की**

बिल्कुल साथ ही ये सड़क धंसी है, जिससे टीनशेड आधा गिर गया। गनिमत रही कि उस वक्त वहां कोई मौजूद नहीं था, वरना किसी को चोट भी पहुंच सकती थी।

जानकारी के अनुसार यह रास्ता अलवर-भिवाड़ी मेगा हाईवे का हिस्सा है, जहां सुबह-शाम पैदल यात्री, दुपहिया वाहन और भारी ट्रक बड़ी संख्या में आवागमन करते हैं। ग्रामीणों ने तत्काल प्रभावित क्षेत्र को बैरिकेडिंग कर बंद करने की मांग की है। उन्होंने यह भी मांग की है कि औद्योगिक इकाइयों से निकलने वाले दूषित पानी पर सख्त रोक लगाई जाए। साथ ही, गैस पाइपलाइन और बिजली विभाग के अधिकारी मौके पर पहुंचकर आपातकालीन सुरक्षा उपाय करें और मरम्मत कार्य तत्काल शुरू करें।

इस बीच, हरियाणा सिटी गैस के डिप्टी मैनेजर रोहित नैन भी मौके पर पहुंचे। उनकी टीम गैस पाइपलाइन को किसी भी संभावित नुकसान से बचाने के लिए सुरक्षा उपाय कर रही है। एहतियात के तौर पर ऊपर से गुजर रही बिजली की लाइन को कटवा दिया गया है ताकि खंभा गिरने की स्थिति में गैस लाइन पर कोई विस्फोट जैसी घटना न हो। रिको अधिकारियों को भी सूचना दी गई है लेकिन अभी तक कोई अधिकारी मौके पर नहीं पहुंचे हैं।

भीलवाड़ा में युवक की हत्या का आरोपी गिरफ्तार

- **26 जनवरी को जंगल में युवक का शव मिला था, जिसकी पिटाई कर हत्या की थी**

भीलवाड़ा, (निसं)। जिले की फूलियाकलां पुलिस ने एक ब्लाइंड मर्डर का पर्दाफाश करते हुए दो आरोपियों को गिरफ्तार किया है। 26 जनवरी को जंगल में एक युवक का शव मिला था, जिसकी बेरहमी से पिटाई कर हत्या की गई थी। पुलिस ने तत्परता दिखाते हुए महज कुछ ही दिनों में आरोपियों को गिरफ्तार कर लिया है।

मामला फूलियाकलां थाना क्षेत्र के कल्याणपुरा खामोर का है। बीती 26 जनवरी की सुबह करीब नौ बजे मुरली बावरी ने पुलिस को सूचना दी थी कि उसके भाई राधेश्याम का शव जंगल में बबूलों के बीच पड़ा है। मौके पर पहुंची पुलिस और एफएसएल टीम ने जब जांच की, तो सामने आया कि मृतक की गंभीर चोटों के कारण मौत हुई है। पुलिस जांच में सामने आया कि घटना वाली सुबह आरोपी रामपाल बावरी ने ही मृतक के भाई को फोन कर शव पड़े होने की जानकारी दी थी। शक के आधार पर पुलिस ने कड़ी से कड़ी जोड़ी।

जांच में पता चला कि रामपाल, उसके मामा और परिवार वालों ने मिलकर राधेश्याम के साथ गंभीर मारपीट की थी, जिससे उसकी जान चली गई। एसपी धर्मेंद्र सिंह के आदेश और एएसपी राजेश आर्य के निर्देशन में थानाधिकारी राजेंद्र सिंह की टीम ने दबिश देकर मुख्य आरोपी रामपाल (33) और नरेश बावरी (22) को गिरफ्तार कर लिया है। पुलिस अब इनसे पूछताछ कर घटना की पूरी कड़ियां जोड़ रही है।

दुष्कर्म से परेशान नाबालिग ने जहर खाया, मौत

पुलिस ने एक युवक को हिरासत में लिया, दूसरे की तलाश जारी

बीकानेर, (निसं)। जिले में 9वीं क्लास में पढ़ने वाली एक नाबालिग लड़की के साथ दुष्कर्म की घटना हो गई, जिसके बाद लड़की ने जहर पीकर अपनी जान दे दी।

जानकारी के अनुसार दुष्कर्म 22 जनवरी को हुआ था, जिसके बाद लड़की ने पेस्टीसाइड्स पी लिया, जिससे उसकी बुधवार शाम इलाज के दौरान अस्पताल में मौत हो गई। पुलिस ने इस मामले में एक युवक को हिरासत में लिया है, जबकि दूसरे की तलाश जारी है। दो युवकों ने 9वीं कक्षा में पढ़ने वाली छात्रा को कार में अगवा किया और सुनसान जगह ले जाकर उसके साथ दुष्कर्म किया था। इससे आहत छात्रा ने जहर पीकर जान दे दी। छात्रा का मेडिकल बोर्ड से पोस्टमार्टम कराया गया है। उसके भाई की ओर से पुलिस को दी गई रिपोर्ट दी है। मामले की जांच कर रहे सीओ अमरजीत चावला ने बताया कि पुलिस को मामले की जानकारी मिलने पर छात्रा का मेडिकल मुआयना कराया गया था। उसे अस्पताल में भर्ती किया गया और इलाज के दौरान उसने दम तोड़ दिया। आरोपी को डिटेन कर उससे पूछताछ की जा रही है। उसका साथी के बारे में पता लगाया जा रहा है।

अलवर के आलमपुर गांव में अवैध खनन और ब्लास्टिंग से ग्रामीण परेशान

- **लगातार हो रही तेज़ ब्लास्टिंग से गांव के कई मकानों में गहरी दरारें पड़ गई हैं, कुछ घर तो पूरी तरह क्षतिग्रस्त हो चुके हैं**
- **ग्रामीणों ने बताया कि ब्लास्टिंग से इतनी धूल उड़ती है कि सांस लेना मुश्किल हो गया है और लोगों का जीना दूभर हो गया है**

अलवर, (निसं)। अलवर जिले के नौगांवा थाना क्षेत्र के आलमपुर गांव में हो रहे अवैध खनन और बेकाबू ब्लास्टिंग ने ग्रामीणों का जीवन संकट में डाल दिया है। लगातार हो रही तेज़ ब्लास्टिंग से गांव के कई मकानों में गहरी दरारें पड़ गई हैं, कुछ घर तो पूरी तरह क्षतिग्रस्त हो चुके हैं। हालात से नाराज़ सैकड़ों ग्रामीणों ने गुरुवार को अलवर जिला कलेक्टर से मुलाकात कर ज्ञापन सौंपा और अवैध खनन व ब्लास्टिंग पर तत्काल रोक लगाने की मांग की।

ग्रामीणों ने आरोप लगाया कि आबादी क्षेत्र के खसरा नंबर 77 को गलत तरीके से 92 दिखाया गया है, जो पूरी तरह गैरकानूनी है। उनका कहना है कि अधिकारियों ने अवैध खननकर्ताओं से मिलकर नक्शे में हेरफेर की है। ग्रामीण सरदार सुरजन सिंह ने बताया कि आलमपुर गांव में जबरदस्त तरीके से अवैध खनन किया जा रहा है। ब्लास्टिंग खसरा नंबर एक में हो रही है, जबकि गांव की आबादी खसरा नंबर दो में है। इससे ग्रामीणों की जान को हमेशा खतरा बना रहता है। उन्होंने आरोप लगाया कि नाहरपुर खुर्द के नाम पर खनन की लीज दी गई है, लेकिन अधिकारियों ने लीज का नक्शा ही बदल दिया, जिससे पूरी ब्लास्टिंग आलमपुर गांव में की जा रही है। इसका असर यह है कि गांव के मकानों में दरारें आ गई हैं और कई मकान गिरने की स्थिति में पहुंच चुके हैं। दिन-रात ब्लास्टिंग की जा रही है। सरदार सुरजन सिंह ने खनन करने वालों के नाम गिनाते हुए सुमन मति, वेदपाल, विजय, सुरेंद्र और इकबाल सहित कई लोगों पर अवैध ब्लास्टिंग करने का आरोप लगाया। उन्होंने बताया कि ब्लास्टिंग से इतनी धूल उड़ती है कि सांस लेना मुश्किल हो गया है और लोगों का जीना दूभर हो गया है।

ग्रामीण नरेंद्र सिंह ने बताया कि पहाड़ खसरा नंबर एक में है और आबादी खसरा नंबर दो में, जबकि नाहरपुर में खसरा नंबर तीन में लीज दी गई है, लेकिन उसका नक्शा भी बदल दिया गया है। नाहरपुर क्षेत्र अरावली पर्वतमाला में आता है, जहां ब्लास्टिंग पूरी तरह प्रतिबंधित है। इसके बावजूद आबादी क्षेत्र से महज 125 मीटर दूर ब्लास्टिंग की जा रही है, जिससे भारी प्रदूषण फैल रहा है। ग्रामीणों ने यह भी आरोप लगाया कि जब वे इस मामले की शिकायत लेकर नौगांवा पुलिस थाने जाते हैं, तो उन्हें भगा दिया जाता है और धमकी दी जाती है कि अगर खनन माफिया के खिलाफ आवाज उठाई तो जेल में डाल दिया जाएगा। अब ग्रामीणों ने जिला प्रशासन को इस पूरे मामले की शिकायत की है।

स्लीपर बस हाइवे पर खड़े ट्रेलर में घुसी, चार की मौत, पांच गंभीर घायल

आगरा-जयपुर राष्ट्रीय राजमार्ग पर लुधावई पुलिया के पास हुआ हादसा

भरतपुर, (निसं)। आगरा-जयपुर राष्ट्रीय राजमार्ग पर गुरुवार अलसुबह एक सड़क हादसा हो गया। सेवर थाना क्षेत्र में लुधावई पुलिया के पास कासगंज से जयपुर जा रही एक स्लीपर बस बीच हाइवे पर खड़े ट्रेलर में पीछे से जा घुसी। हादसा इतना भीषण था कि बस के अगले हिस्से के परखच्चे उड़ गए। इस दुर्घटना में चार लोगों की मौके पर ही मौत हो गई, जबकि पांच यात्री गंभीर रूप से घायल हो गए। बताया जा रहा है कि ट्रेलर खराब था जो बीच हाइवे पर खड़ा था। ट्रेलर चालक ने कोई खराब का संकेत नहीं लगा रखा था। बस चालक को लगा ट्रेलर चल रहा है, इसी के चलते हादसा हुआ। मौके पर जिला कलैक्टर कमर चौधरी, एसपी दिगंत आनन्द मौके पर पहुंचे। वहीं एसडीएम भारती गुप्ता आरबीएम अस्पताल पहुंची जहां घायलों से बीतचीत की।

- **घना कोहरा हादसे की वजह माना जा रहा है, टक्कर के बाद बस में फंसे यात्रियों में चीख-पुकार मच गई**

हादसे के बाद मौके पर पहुंची पुलिस ने जांच की।

सेवर थाना प्रभारी सतीश शर्मा ने बताया कि सूचना मिलते ही पुलिस टीम मौके पर पहुंची। सभी घायलों को तत्काल जिला आरबीएम अस्पताल भिजवाया गया, जहां उनका इलाज जारी है। वहीं, चारों मृतकों के शव पोस्टमार्टम के लिए आरबीएम अस्पताल की मोर्चरी में रखवाए गए हैं। मृतकों के परिजनों को सूचित कर दिया गया है, उनके पहुंचने के बाद पोस्टमार्टम की कार्रवाई कराई जाएगी। हादसा गुरुवार तड़के करीब 2.30 से 3 बजे के बीच हुआ। घना कोहरा हादसे की बड़ी वजह माना जा रहा है। टक्कर के बाद बस में फंसे यात्रियों में चीख-पुकार मच गई। आवाज सुनकर आसपास के लोग मौके पर पहुंचे और पुलिस को सूचना दी। स्थानीय लोगों की मदद से घायलों को बस से बाहर निकाला गया और अस्पताल में भर्ती करवाया गया। फिलहाल उनका इलाज चल रहा है। इस हादसे में कान्हा (8) पुत्र रामवीर, निवासी सतोवा, मथुरा (उत्तर प्रदेश), गीता (38) पत्नी रामवीर, निवासी सतोवा, मथुरा (उत्तर प्रदेश), मुक्खन सिंह (28) पुत्र खेम सिंह निवासी कठूमर अलवर और मुस्लिम (40) पुत्र इस्माइल निवासी कासगंज (उत्तर प्रदेश) के रूप में हुई है।

रामवीर अपनी पत्नी गीता और 8 वर्षीय बेटे कान्हा के साथ खाटूश्याम जी के दर्शन के लिए जा रहे थे। रामवीर भगवान की मूर्तियों के लिए कागज की पगड़ियां बनाते हैं और हर महीने माल सप्लाई करने खाटूश्याम जी जाते थे। इस बार वो पत्नी और बेटे को भी साथ लेकर गए थे। हादसे में रामवीर की पत्नी और बेटे की मौत हो गई, जबकि रामवीर खुद गंभीर रूप से घायल हो गए।

बीकानेर जिले में सर्दी का असर बरकरार

बीकानेर, (निसं)। जिले में सर्दी का असर फिलहाल बरकरार है। गुरुवार की सुबह बीकानेर शहर में तो धूप खिल गई लेकिन ग्रामीण क्षेत्रों में घना कोहरा रहा। नौ बजे बाद कोहरा कुछ कम हुआ लेकिन तेज हवाओं ने सर्दी का एहसास बढ़ा दिया। न्यूनतम तापमान में भी बीकानेर शहर और ग्रामीण क्षेत्रों में अंतर देखा गया। बीकानेर शहर में जहां न्यूनतम तापमान सात डिग्री सेल्सियस के पार रहा, वहीं लूणकरनसर में न्यूनतम पारा 6 डिग्री सेल्सियस के आसपास रहा। आने वाले दिनों में भी सर्दी से राहत मिलने की उम्मीद नहीं है।

लूणकरनसर में सुबह से ही घना कोहरा रहा, जिससे नेशनल हाइवे पर वाहनों की गति प्रभावित हुई। कस्बे के आसपास के क्षेत्रों में विजिबिलिटी महज पांच-दस मीटर के आसपास रही। मौसम विभाग की मानें तो आने वाले कुछ दिनों तक ठिठुरन बनी रहेगी। कश्मीर और हिमाचल में बर्फबारी का असर राजस्थान के पश्चिमी हिस्सों में देखने को मिल रहा है। बीकानेर शहर से ज्यादा तापमान में गिरावट लूणकरनसर में हुई है, वहीं इससे ज्यादा गिरावट श्रीगंगानगर में है।

अलग-अलग मामलों में दो तस्कर गिरफ्तार

भीलवाड़ा, (निसं)। पुर थाना पुलिस और डीएसटी टीम ने दो अलग-अलग कार्रवाई करते हुए नशे के नेटवर्क पर कार्रवाई की है। पुलिस ने जहां एक तरफ 15 हजार के इनामी वांटेड तस्कर को दबोचा है, वहीं दूसरी तरफ एमडीएमए ड्रग्स सप्लाई करने वाले आरोपी को उदयपुर से गिरफ्तार किया है।

जानकारी के अनुसार भीलवाड़ा की पुर थाना पुलिस और डीएसटी टीम ने 15 हजार रुपये के इनामी अपराधी दिनेश खटीक (जटिया) को गिरफ्तार किया है। आरोपी दिनेश, चित्तौड़गढ़ के भादसोड़ा का रहने वाला है। मार्च 2025 में पुलिस ने एक ट्रक कंटेनर से 5 क्विंटल 64 किलो से ज्यादा डोडा-चूरा जब्त किया था। इस मामले में दिनेश लगातार फरार चल रहा था। पुलिस के मुताबिक, दिनेश एक शातिर तस्कर है, जो चूरू और तारानगर में भी हज़ारों किलो डोडा-चूरा तस्करी के मामलों में वांटेड है। डीएसटी टीम के कॉन्स्टेबल अमृत सिंह और राकेश भंडारी के विशेष तकनीकी सहयोग से पुलिस ने इसे धर दबोचा। वहीं, दूसरी कार्रवाई में पुलिस ने सिंथेटिक ड्रग्स के नेटवर्क को तोड़ा है। पुर थाना प्रभारी कन्हैया लाल की टीम ने उदयपुर से इसराइल उर्फ एसराइल मंसूरी को गिरफ्तार किया है। कुछ समय पहले मांडल पुलिस ने दो युवकों को खतरनाक मेथिलीन डाईऑक्सी एम्फेटामाइन ड्रग्स के साथ पकड़ा था। पूछताछ में सामने आया कि यह ड्रग्स मांडल निवासी इसराइल ने ही सप्लाई की थी। पुलिस ने जाल बिछाकर उसे उदयपुर से अरेस्ट कर लिया।

किराणा व्यापारी की मौत : उदयपुर शहर के सविना थाना क्षेत्र में किराणा व्यापारी की अकाल मौत हो गई। पुलिस से प्राप्त जानकारी के अनुसार दादिया सलूम्बर हॉल हिरणमगरी सेक्टर 11 निवासी शंभूसिंह (53)पुत्र देवीसिंह की अकाल मौत हो गई। शंभूसिंह की टोल नाका के समीप किराणा दुकान थी। बुधवार को वह अचानक नीचे गिर पड़ा था। जिसे परिजनों ने उसे चिकित्सालय पहुंचाया। जहां उसकी मौत हो गई। एएसआई अरविन्द ने मृतक का पोस्टमार्टम करवा शव परिजनों को सौंपा।

पिकअप पलटने से युवक की मौत

बीकानेर, (निसं)। जिले में एक सड़क हादसे में युवक की मौत हो गई, जबकि पिकअप सवार एक युवक घायल हो गया। हादसे में ड्राइव की मौके पर ही मौत हो गई। हादसा अरजनसर-पलू मेगा हाइवे पर पिकअप पलटने से हुआ। हादसे के बाद मौके पर लोगों की भीड़ जमा हो गई और घायल को महाजन हॉस्पिटल लेकर आए।

महाजन पुलिस के अनुसार रानीसर के पास देर रात एक पिकअप वाहन पलटने से ये हादसा हुआ। पल्लू से अरजनसर की ओर आ रही पिकअप बीच रास्ते में दुर्घटनाग्रस्त हो गई। अनियंत्रित होकर पिकअप हाइवे पर पलट गई। इस हादसे में कालूराम पुत्र ओमप्रकाश जाट निवासी रतनीसर की मौके पर ही मौत हो गई, वहीं पिकअप में सवार जीतराम पुत्र हरिराम जाट घायल हो गया। राहगीरों ने ही उन्हें संभाला। घायल को तुरंत महाजन अस्पताल पहुंचाया गया। दुर्घटना की सूचना पर महाजन पुलिस थाने से एएसआई ईश्वर सिंह मौके पर पहुंचे। शव का महाजन अस्पताल में पोस्टमॉर्टम किया गया, जबकि घायल की जीतराम जाट की हालत फिलहाल खतरे से बाहर बताई जा रही है।

पैंथर की मौत, आरोपी हिरासत में

अलवर, (निसं)। अलवर जिले के वन नाका प्रतापगढ़ क्षेत्र के अंतर्गत झिरी गांव की शाखा का गुवाड़ा में दो वर्षीय पैंथर मृत अवस्था में पेड़ पर लटका मिला। प्रारंभिक जांच में पैंथर के पेट पर रस्सी का फंदा मिलने से मामला संदिग्ध प्रतीत हुआ। सूचना मिलने पर वनपाल रामवतार मीना टीम के साथ मौके पर पहुंचे और स्थिति का जायजा लिया। जांच में एक ग्रामीण पर संदेह गहराया। सख्त पूछताछ में आरोपी प्रभुदयाल मीना ने पैंथर के शिकार की बात स्वीकार की। आरोपी को हिरासत में ले लिया।

जोधपुर में कार सवार बदमाशों ने युवक का अपहरण किया

- **महाराष्ट्र नंबर की पासिंग कार में हथियारों से लैस होकर आए थे बदमाश**

जोधपुर, (कासं)। शहर में गुरुवार सुबह एक फ्लैश पेंटिंग कारीगर का अपहरण हो गया। वह अपने एक दोस्त के साथ चाय पीने जा रहा था। घटना सिवांची गेट रोड स्थित सुमेर पुष्टिकर कॉलेज के पास गली की है। एक कार में हथियारों से लैस होकर कुछ युवक उसे जबरन उठा ले गए। पुलिस को सूचना मिलने पर मौके पर पहुंची। कार महाराष्ट्र पासिंग नंबर की है, जिसके लिए शहरभर में नाकाबंदी करवाई गई। देर शाम तक बदमाशों का उसका पता नहीं चला। आशंका है किसी विवाद के चलते यह अपहरण हुआ है।

खांडा फलसा थानाधिकारी बलवंतराम ने बताया कि मेड़ती गेट के बाहर रहने वाले मनन नाम के युवक का अपहरण किया गया है। वह फ्लैश पेंटिंग का काम करता है। सुबह वह अपने एक साथी संग सुमेर पुष्टिकर कॉलेज के सामने एक फर्नीचर की दुकान के पास गली में चाय पीने जा रहा था। तब सड़क पर ही एक सफेद रंग की कार में कुछ युवक आए और उसे कार में डालकर अपने साथ ले गए। घटना सीसीटीवी फुटेज में क़ैद हो गई है। इधर सूचना के साथ ही एसीपी सेंट्रल मंगलेश चूण्डावत, खुद थानाधिकारी बलवंतराम आदि मौके पर पहुंचे। बाद में कार की तलाश में नाकाबंदी करवाई गई। युवक के अपहरण का कारण आरंभिक तौर पर पता नहीं लगा है।

पोकरण : मरु महोत्सव में भव्य शोभायात्रा निकाली

पोकरण, (निसं)। पोकरण में लोक परंपराओं, रंगीन संस्कृति और मरुधरा की आत्मा को जीवंत करने वाले विश्वविख्यात मरु महोत्सव-2026 का गुरुवार को परमाणु नगरी पोकरण में शुभारंभ हुआ। मरुभूमि की रेत पर लोक संगीत, नृत्य और परंपराओं का अदभूत संगम देखने को मिला।

चार दिवसीय सांस्कृतिक महाकुंभ की शुरुआत जिला कलैक्टर प्रताप सिंह, पुलिस अधीक्षक अभिषेक शिवहरे एवं नगर पालिका अध्यक्ष मनीष पुरोहित द्वारा सालमसर सरोवर स्थित नेपालेश्वर महादेव मंदिर में विधिवत पूजा-अर्चना एवं आरती के साथ की गई। वैदिक मंत्रोच्चार, शंखनाद और लोक वाद्यों की गूंज के बीच महोत्सव का आधिकारिक शुभारंभ हुआ। वहीं महोत्सव के शुभारंभ अवसर पर पोकरण फोर्ट से निकली भव्य शोभायात्रा आकर्षण का केंद्र रही। लोक कलाकारों की प्रस्तुतियां, पारंपरिक वेशभूषा, सजे-धजे ऊंट, बीएसएफ का ऊंट दस्ता, सांस्कृतिक दल तथा मिस्टर-मिस पोकरण प्रतियोगिता के प्रतिभागियों की

पोकरण में मरु महोत्सव के तहत निकाली शोभायात्रा में कलाकारों ने नृत्य पेश किये।

उपस्थिति ने शोभायात्रा को चलता-फिरता सांस्कृतिक उत्सव बना दिया। शहर के प्रमुख मार्गो से गुजरती यह शोभायात्रा राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, पोकरण परिसर पहुंची, जहां नगरवासियों ने पुष्पवर्षा और जयकारों के साथ स्वागत किया।

मुख्य मंच पर भगवान श्रीगणेश की प्रतिमा पर दीप प्रज्ज्वलन कर कार्यक्रम का शुभारंभ किया गया। इसके पश्चात घूमर, भवाई, लेजियम, गैर नृत्य एवं पारंपरिक लोकगीतों की प्रस्तुतियों ने दर्शकों को मंत्रमुग्ध किया। तगाराम एंड पार्टी, रेंवताराम भील एवं अणदाराम समदडी एंड पार्टी की प्रस्तुतियों के साथ छात्र-छात्राओं के कार्यक्रम विशेष आकर्षण रहे। महोत्सव के दौरान आयोजित मिस्टर पोकरण एवं मिस पोकरण प्रतियोगिता में मनीष कुमार सैन को मिस्टर पोकरण तथा लौहारकी की वर्षा भाटी को मिस पोकरण-2026 के खिताब से नवाजा गया। वही मटकी दौड, साफा बांधो एवं रस्साकशी जैसी ग्रामीण खेल प्रतियोगिताओं में प्रतिभागियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। विजेताओं को अतिथियों द्वारा सम्मानित किया गया।

- **मटकी दौड़, साफा बांधो एवं रस्साकशी जैसी ग्रामीण खेल प्रतियोगिताओं का आयोजन हुआ**
- **महोत्सव में आयोजित प्रतियोगिता में मनीष कुमार सैन को मिस्टर पोकरण तथा लौहारकी की वर्षा भाटी को मिस पोकरण-2026 के खिताब से नवाजा**

हैड कांस्टेबल व कांस्टेबल ने डेढ़ लाख की रिश्वत ली

जयपुर/डूंगरपुर। एसीबी की डूंगरपुर टीम ने गुरुवार को पुलिस थाना दोवड़ा, जिला डूंगरपुर में तैनात हेड कांस्टेबल अशोक कुमार पाटीदार और कांस्टेबल प्रकाश चन्द्र पटेल को 1 लाख 50 हजार रुपये की रिश्वत लेते हुए रंगे हाथों गिरफ्तार किया है।

एसीबी के पुलिस महानिदेशक गोविन्द गुप्ता ने बताया कि ब्यूरो को शिकायत प्राप्त हुई थी कि परिवादी को ऑनलाइन गेमिंग के नाम पर झूठे मुकदमे में फंसाने की धमकी देकर रिश्वत की मांग की जा रही है। शिकायत के अनुसार 18 जनवरी को परिवादी को पुलिस वाहन में बैठा कर थाना दोवड़ा ले जाया गया, जहां उसके मोबाइल की जांच कर उस पर ठगी का आरोप लगाया गया। आरोपियों ने मुकदमा दर्ज नहीं करने और मोबाइल वापस देने की एवज में 2 लाख रुपये की मांग की। बाद में बातचीत के दौरान आरोपी 1.50 लाख रुपये लेने पर सहमत हो गए। 28 जनवरी 2026 को रिश्वत मांग का सत्यापन किया गया, जिसमें आरोप सही पाए गए। एसीबी डूंगरपुर टीम ने ट्रैप कार्रवाई करते हुए दोनों आरोपियों को रिश्वत की राशि लेते हुए गिरफ्तार कर लिया।

ग्राम विकास अधिकारी को रिश्वत लेते पकड़ा : एसीबी ने जोधपुर जिले में कार्रवाई करते हुए ग्राम पंचायत केतु मदा, पंचायत समिति सेखाला के ग्राम विकास अधिकारी राजेन्द्र को 15 हजार रुपये की रिश्वत लेते हुए रंगे हाथों गिरफ्तार किया है। एसीबी मुख्यालय के निर्देश पर एसीबी चौकी जोधपुर ग्रामीण द्वारा कार्रवाई की गई। एसीबी महानिदेशक गोविन्द गुप्ता ने बताया कि ब्यूरो को शिकायत प्राप्त हुई थी कि ग्राम विकास अधिकारी द्वारा परिवादी की फर्म, जिसका ग्राम पंचायत केतू मदा में निर्माण कार्यों के लिए मटेरियल सप्लाई का टेंडर स्वीकृत है, से भुगतान की एवज में 6 प्रतिशत कमीशन की मांग कर परेशान किया जा रहा है। शिकायत के सत्यापन के दौरान आरोपी द्वारा परिवादी से 15 हजार रुपये रिश्वत के रूप में पहले ही प्राप्त कर लिए गए थे। इसके बाद एसीबी ने ट्रैप कार्रवाई की योजना बनाई। एसीबी टीम ने ट्रैप कार्रवाई करते हुए आरोपी राजेन्द्र को रिश्वत की राशि लेते हुए मौके पर गिरफ्तार कर लिया।

मुझे खेल में मजा नहीं आ रहा था। मुझे लग रहा था कि जब मुझे क्रिकेट खेलने में मजा ही नहीं आ रहा तो मैं क्यों खेल रहा हूँ? और इससे मुझे तकलीफ हो रही थी। और जिस दिन मैंने खेलना बंद किया, मैं फिर से पहले जैसा हो गया। - युवराज सिंह

पूर्व भारतीय क्रिकेटर, अपने संन्यास को लेकर बोलते हुए।

खेल जगत

आज का खिलाड़ी

पवन रत्नायके

पवन रत्नायके को दो रात पहले तीसरे वनडे में 115 गेंदों पर 121 रन बनाने के बाद इंग्लैंड के खिलाफ तीन मैचों की सीरीज के लिए श्रीलंका की टी-20 टीम में शामिल किया गया है। 23 साल के इस खिलाड़ी ने आखिरी बार नवंबर में पाकिस्तान के खिलाफ टी-20 खेला था और वर्ल्ड कप से पहले इंग्लैंड के खिलाफ तीन टी-20 मैचों के लिए टीम से बाहर कर दिया गया था। लेकिन उनकी पारी, भले ही हार का कारण बनी, ने एक बार फिर सिलेक्शन के दरवाजे खोल दिए हैं। वर्ल्ड कप को-होस्ट करने से पहले श्रीलंका की आखिरी सीरीज से पहले टीम में कुछ खास खिलाड़ी नहीं हैं।

क्या आप जानते हैं ?... क्रिकेट में कई वर्ल्ड रिकॉर्ड हैं, लेकिन सचिन तेंदुलकर के नाम सबसे ज़्यादा अंतरराष्ट्रीय रन (34,357) और 100 शतक (टेस्ट और वनडे मिलाकर) का रिकॉर्ड है।

सनत सांगवान का शतक, दिल्ली ने बनाये 221 रन

मुंबई, 29 जनवरी। सनत सांगवान (118) और वैभव कांडपाल की उनके साथ शतकीय साझेदारी की बदौलत दिल्ली ने गुरुवार को रणजी ट्रॉफी एलीट ग्रुप डी मुकाबले में मुंबई के खिलाफ 221 का स्कोर बनाया और उसके बाद बल्लेबाजी करने उतरी मुंबई का दिन का खेल समाप्त होने के समय 13 रन पर एक विकेट झटक लिया। आज यहां टॉस जीतकर मुंबई ने पहले गेंदबाजी करने का फैसला लिया। बल्लेबाजी करने उतरी दिल्ली की शुरुआत अच्छी नहीं हुई और उसने अपना पहला विकेट ध्रुव कौशिक (सात) के रूप में गंवा दिया। उन्हें तुषार देशपांडे ने बोल्ड आउट किया। इसके बाद बल्लेबाजी करने आये वैभव कांडपाल ने सनत सांगवान के साथ पारी को संभाला। दोनों बल्लेबाजों के बीच दूसरे विकेट के लिय 100 रनों की साझेदारी हुई। 38वें ओवर में शम्स मुलानी ने वैभव कांडपाल (32) को आउट कर इस साझेदारी को तोड़ा। इसके बाद मोहित अवस्थी ने तीन विकेट झटक कर दिल्ली को झकझोर दिया। आर्यन राणा (10), कप्तान आयुष डोसेजा (शून्य) और सुमित माथुर (दो) रन बनाकर आउट हुये। 70वें ओवर में शम्स मुलानी ने सनत सांगवान को आउटकर दिल्ली के बड़े स्कोर की उम्मीद को तोड़ दिया। सनत सांगवान ने 218 गेंदों में 11 चौके और दो छक्के उड़ाते हुए 118 रनों की पारी खेली। प्रणव राजवंशी (39) ने कुछ देर संघर्ष किया। वह नौवें विकेट के रूप में आउट हुए। 77वें ओवर में मोहित अवस्थी ने मनी ग्रेवाल (शून्य) को आउट कर दिल्ली की पारी को 221 पर समेट दिया। मुंबई के लिए मोहित अवस्थी ने पांच विकेट लिये। तुषार देशपांडे और शम्स मुलानी को दो-दो विकेट मिले।

हर्ष दुबे का कमाल, विदर्भ ने यूपी को 237 पर रोका

नागपुर, 29 जनवरी। हर्ष दुबे (छह विकेट) की अगुवाई में गेंदबाजों के बेहतरीन प्रदर्शन की बदौलत विदर्भ ने गुरुवार को रणजी ट्रॉफी एलीट ग्रुप ए मुकाबले के पहले दिन उत्तर प्रदेश को 237 रनों के स्कोर पर रोकने के बाद स्टंप्स तक बिना कोई विकेट खोए 33 रन बना लिये। आज यहां टॉस जीतकर पहले बल्लेबाजी करने उतरी उत्तर प्रदेश की शुरुआत अच्छी नहीं रही और उसने 109 के स्कोर तक अपने छह विकेट गंवा दिये थे। माधव कौशिक (चार), अभिषेक गोस्वामी (14), कप्तान आर्यन जुयाल (12), आदित्य शर्मा (18), सिद्धार्थ यादव (19) और शिवम शर्मा एक रन बनाकर आउट हुये। ऐसे संकट के समय ध्रुव जुरेल और शिवम मावी की जोड़ी ने पारी को संभाला और सातवें विकेट के लिए 92 रन जोड़कर टीम को सम्मानजनक स्कोर की ओर ले गये। 59वें ओवर में यश कदम ने शिवम मावी 57 गेंदों में (47) को आउटकर इस साझेदारी को तोड़ा। 63वें ओवर में हर्ष दुबे ने शतक की ओर बढ़ रहे ध्रुव जुरेल को आउटकर उत्तर प्रदेश को बड़ा झटका दिया। ध्रुव जुरेल ने 122 गेंदों में 11 चौकों की मदद से 96 रनों की पारी खेली। इसके बाद उत्तर प्रदेश की पारी 68.5 ओवरो में 237 के स्कोर पर सिमट गई। कार्तिक यादव 17 रन बनाकर नाबाद रहे। विदर्भ के लिए हर्ष दुबे ने छह विकेट लिये। प्रफुल हिंगे, नचिकेत भूटे, पार्थ रेखड़े और यश कदम ने एक-एक बल्लेबाज को आउट किया।

राज्य स्तरीय अंडर-23 वीमेन चैलेंजर ट्रॉफी कंचन हुड्डा, अनाया गर्ग के आतिशी शतक, नव्या, वृंदा शर्मा के अर्द्धशतक

जयपुर, 29 जनवरी। आज से राजस्थान क्रिकेट संघ के तत्वाधान में खेली जा रही राज्य स्तरीय अंडर 23 वीमेन चैलेंजर ट्रॉफी के दूसरे दिन कंचन हुड्डा, अनायागर्ग के आतिशी शतक, नव्या, वृंदा शर्मा के अर्धशतक। **पहला मैच टीम सी - टीम ऐ** (टीम ऐ जीती), टीम ऐ पारी 241 / 3, टीम के लिए अनाया गर्ग 137, माहि सेठ 46 व अक्षिता24 रन। टीम सी की गेंदबाज उषा, तम्मना, ढुडी1-1 विकेट। टीम सी पारी 119 आल आउट। टीम के लिए तंशिका34 व प्रिया 22 रन। टीम ऐ की गेंदबाज यशस्वी कट्टा 15 / 2 व अंकिता मेहला 38 / 2 विकेट।

दूसरा मैच टीम बी - टीम डी (टीम डी जीती) टीम बी पारी 229 / 6, टीम के लिए कंचन हुड्डा नाबाद 151 व प्रतीक्षा 34 रन। टीम डीकी गेंदबाज अंजलि, याना, मनस्वी, ज्योति व नेहा 1 - 1 विकेट। टीम डी पारी 233 / 7, टीम के लिए नव्या 81 व वृंदा शर्मा 67 रन। टीम बी की गेंदबाज निशा, दर्ष्टिव निकिता1 - 1 विकेट।

राजस्थान-पॉन्डिचेरी रणजी : राजस्थान पहली पारी में 168 ऑल आउट

ज़यपुर, 29 जनवरी। पॉन्डिचेरी में आज से शुरू हुए राजस्थान - पॉन्डिचेरी रणजी मैच के पहले दिन का स्कोर :-राजस्थान पहली पारी 168 आल आउट।टीम के लिए दीपक चौधरी 64, दीपक हुड्डा 36, रामनिवास गोलाडा 31 रन। पॉन्डिचेरी के गेंदबाज करं 37/5 व सागर 54/3, पॉन्डिचेरी पहली पारी 77/2,राजस्थान के गेंदबाज दीपक चौधरी, मोहित छांगरा1-1 विकेट। इंदौर में खेली जा रही राज सिंह डूंगरपुर अंडर 14 ट्रॉफी के राजस्थान - यूपीसीएफाइनल मैच के दूसरे दिन का स्कोर :-राजस्थान पहली पारी 218 आल आउट।टीम के लिए पुनीत यादव 71, मुकुल कौशिक 33, गौरव पुनिया 29, आयुष रविंद्र 22, अनमोल शर्मा 20, नलिन दुल्लर 19 रन। यूपीसीए के गेंदबाज अर्णव 40 / 3 विकेट। यूपीसीए पहली पारी 546/7, दूसरे दिन का खेल समाप्त होने तक यूपीसीएटीम के लिए हर्ष 188, आयुष्मान 157 रनो की सहायता से 7 विकेट के नुकसान पर 546 रन बना लिए थे। राजस्थान के गेंदबाज अभिमन्यु चौधरी 99/3, अनमोल शर्मा 88/2 व भावेश बघेल 80/1 विकेट।

मैं अपनी भूमिका को लेकर स्पष्ट हूं : शिवम दुबे

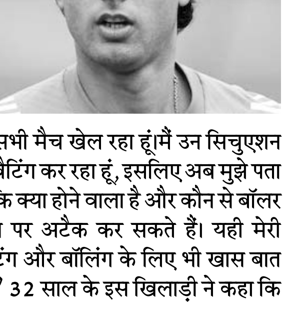

विजाग, 29 जनवरी। भारत के ऑलराउंडर शिवम दुबे ने बुधवार को चौथे टी20 में न्यूज़ीलैंड के खिलाफ भारत की हार में जबरदस्त हाफ सेंचुरी बनाने के बाद कहा कि वह आईसीसी पुरुष टी20 विश्व कप में अपनी भूमिका को लेकर स्पष्ट हैं।

इंटरनेशनल क्रिकेट काउंसिल (आईसीसी) की वेबसाइट के मुताबिक, दुबे ने 15 गेंदों में फिफ्टी लगाई, जो पुरुष टी20 में किसी भारतीय की तीसरी सबसे तेज फिफ्टी है, उन्होंने नंबर 6 पर आने के बाद 65 रन बनाए, जो ब्लैक कैप्स से 50 रन से हारने के बावजूद मेजबान टीम के लिए सबसे शानदार परफॉर्मेंस थी।

खेल के बाद दुबे ने कहा, ''मैं अपनी सोच को बेहतर बना रहा हूं क्योंकि मैं अब ये सभी मैच खेल रहा हूं।मैं उन सिचुएशन में बैटिंग कर रहा हूं, इसलिए अब मुझे पता है कि क्या होने वाला है और कौन से बॉलर मुझ पर अटैक कर सकते हैं। यही मेरी बैटिंग और बॉलिंग के लिए भी खास बात है।'' 32 साल के इस खिलाड़ी ने कहा कि मैच के हालात में मिले अनुभव ने उन्हें अपने काम को बेहतर बनाने में मदद की है। उन्होंने कहा, ''जब आप नेट्स में सच में बहुत मेहनत करते हैं तो एक बात होती है, लेकिन आपको इसे मैच में भी इस्तेमाल करना होता है। अनुभव मेरे पास आया है, और यह सही दिशा में जा रहा है।'' इंडिया के कप्तान सूर्यकुमार यादव ने कहा कि टीम कॉम्बिनेशन 7 फरवरी से शुरू होने वाले टी20 विश्व कप को ध्यान में रखकर चुना गया था।

सूर्यकुमार ने कहा, ''हमने आज जानबूझकर छह बैटर खिलाए। हम पांच सही बॉलर चाहते थे और खुद को चैलेंज करना चाहते थे।अगर हम 180 या 200 रन का पीछा कर रहे हैं और हम दो या तीन विकेट खो चुके हैं, तो हम देखना चाहते थे कि यह कैसा दिखता है। हम वर्ल्ड कप टीम के सभी खिलाड़ियों को खेलने का समय भी देना चाहते थे।''

यह जीत न्यूजीलैंड की पांच मैचों की सीरीज में पहली जीत थी, और कप्तान मिशेल सेंटनर ने कहा कि यह दौरा ग्लोबल इवेंट के लिए आइडियल तैयारी साबित हो रहा है। सेंटनर ने कहा, ''वर्ल्ड कप के लिए भारत में भारत के खिलाफ खेलने से बेहतर कोई तैयारी नहीं है।यह हमारे प्लान को सही करने और कप से पहले अपनी भूमिकाएं तय करने के बारे में है।'' भारत और न्यूज़ीलैंड के बीच पांचवां और आखिरी टी20 शनिवार को तिरुवनंतपुरम में खेला जाएगा।

बांग्लादेश को यू टर्न : क्रिकेट टीम को 'नो' के बाद अब शूटिंग टीम को दी इंडिया टूर की इजाजत

नई दिल्ली, 29 जनवरी। आगामी एशियाई एयर गन चैंपियनशिप में भाग लेने के लिए बांग्लादेश का एक शूटिंग प्रतिनिधिमंडल भारत जा रहा है। बांग्लादेश शूटिंग फेडरेशन के एक अधिकारी ने गुरुवार को बताया कि यह प्रतिनिधिमंडल बांग्लादेश का प्रतिनिधित्व करने वाला एक छोटा समूह है। बांग्लादेश शूटिंग फेडरेशन की महासचिव अलेया फरदौसी ने बताया कि बांग्लादेशी प्रतिनिधिमंडल में एक शूटर और एक कोच शामिल हैं। शूटर का नाम रोबिउल इस्लाम और कोच का नाम शर्मिन अख्तर है। बांग्लादेश की अंतरिम सरकार ने उन्हें भारत जाने और प्रतियोगिता में भाग लेने की अनुमति दे दी है। फरदौसी ने आगे बताया कि बांग्लादेशी शूटिंग प्रतिनिधिमंडल 31 जनवरी को भारत के लिए रवाना होगा। इससे पहले, बांग्लादेश की अंतरिम सरकार ने सुरक्षा चिंताओं के कारण राष्ट्रीय क्रिकेट टीम को टी20 विश्व कप के लिए भारत जाने की अनुमति देने से इनकार कर दिया था। हालांकि, अब प्रोफेसर मुहम्मद यूनुस के नेतृत्व में अंतरिम सरकार ने शिकार प्रतिनिधिमंडल को भारत जाने की अनुमति दे दी है।बांग्लादेश क्रिकेट बोर्ड (बीसीबी) द्वारा सुरक्षा चिंताओं के कारण अपनी टीम को भारत भेजने से इनकार करने के बाद आईसीसी ने बांग्लादेश की जगह स्कॉटलैंड को टी20 विश्व कप में शामिल किया।

महिला ताज के लिए भिडेंगी आर्यना सबालेंका और एलेना रायबाकिना

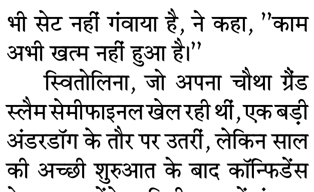

मेलबर्न, 29 जनवरी। गुरुवार को 12वीं सीड एलिना स्वितोलिना पर ऑस्ट्रेलियन ओपन सेमीफाइनल में आसान जीत के बाद दुनिया की नंबर एक आर्यना सबालेंका की मेलबर्न में वापसी की तलाश लगभग पूरी हो गई है।

सबालेंका का 76 मिनट में 6-2, 6-3 का मास्टरक्लास, रॉड लेवर एरिना में उनके पिछले 27 मैचों में से 26वीं जीत थी, जिससे वह पांचवें ग्रैंड स्लैम टाइटल के करीब पहुंच गईं। 27 साल की सबालेंका की इन चार सालों में एकमात्र हार पिछले साल के फाइनल में मैडिसन कीज से तीन सेट में चौंकाने वाली हार थी, जिससे उनका लगातार तीसरा ऑस्ट्रेलियन ओपन टाइटल जीतने का सपना टूट गया।

सबालेंका का ताज फिर से जीतने का मौका पूर्व विंबलडन चैंपियन एलेना रायबाकिना के खिलाफ होगा,जिन्होंने दूसरे सेमीफाइनल में जेसिका पेगुला को हराया। सबालेंका, जिन्होंने टूर्नामेंट में एक भी सेट नहीं गंवाया है, ने कहा, ''काम अभी खत्म नहीं हुआ है।''

स्वितोलिना, जो अपना चौथा ग्रैंड स्लैम सेमीफाइनल खेल रही थीं, एक बड़ी अंडरडॉग के तौर पर उतरीं, लेकिन साल की अच्छी शुरुआत के बाद कॉन्फिडेंस के साथ उन्होंने आखिरी आठ में नंबर 3 कोको गॉफ को हराकर नई ऊंचाइयों को छुआ। लेकिन सबालेंका के जबरदस्त ग्राउंडस्ट्रोक्स के सामने उनका कोई चांस नहीं था, शायद उनका सबसे अच्छा बैकहैंड क्रॉसकोर्ट बुलेट था जिसने 41 मिनट का पहला सेट जीत लिया। इस बीच रायबाकिना ने पेगुला को हराकर 2023 ऑस्ट्रेलियन ओपन के फाइनल का रीमैच तय किया। नंबर 5 सीड एलेना रायबाकिना ने नंबर 6 सीड जेसिका पेगुला को 6-3, 7-6(7) से हराकर अपने करियर के तीसरे ग्रैंड स्लैम फाइनल में जगह बनाई, और तीन साल में पहली बार फाइनल में पहुंचीं। उन्होंने दूसरे सेट के टाईब्रेक में दो सेट पॉइंट बचाए।

रायबाकिना को पेगुला की आखिरी स्टेज में जबरदस्त वापसी की कोशिश को रोकना पड़ा, जो 30 साल की होने के बाद ओपन एरा में अपने पहले दो बड़े फाइनल में पहुँचने वाली पहली महिला बनने की कोशिश कर रही थीं। 2024 यूएस ओपन की रनर-अप ने दूसरे सेट में 5-3 से पिछड़ने पर तीन मैच पॉइंट बचाए, फिर कज़ाकिस्तान की खिलाड़ी ने 5-4 और 6-5 पर मैच के लिए सर्विस करते हुए दो बार रायबाकिना की सर्विस तोड़ी। हालाँकि, रायबाकिना ने क्लच टेनिस के साथ एक ज़बरदस्त टाईब्रेक जीता, और दिन के अपने छठे ऐस के साथ मैच के आखिरी दो पॉइंट जीते, फिर दिन का अपना छठा रिटर्न विनर।

भारत खिताब का सबसे बड़ा दावेदार : शास्त्री

नई दिल्ली, 29 जनवरी। 20 विश्व कप 2026 के लिए भारतीय टीम के पूर्व मुख्य कोच रवि शास्त्री का मानना है कि मौजूदा चैंपियन भारत इस बार इतिहास रच सकता है और लगातार दो बार ख़िताब जीतने वाली पहली टीम बन सकता है। भारतीय टीम का मौजूदा प्रदर्शन बेहद ज़बरदस्त रहा है। 2024 में टी 20 विश्व कप का ख़िताब जीतने के बाद से टीम इंडिया ने कोई भी द्विपक्षीय सीरीज या टूर्नामेंट नहीं गंवाया है। आंकड़ों पर नज़र डालें तो भारत का जीत-हार का रिकॉर्ड 32-5 का है, जो किसी भी विरोधी टीम के लिए खतरे की घंटी है। टी 20 रैंकिंग में नंबर 1 पर काबिज़ भारतीय टीम के पास इस वक्त दुनिया का सबसे बेहतरीन दल है। टीम में नंबर 1 टी 20 बल्लेबाज़ अभिषेक शर्मा और नंबर 1 टी 20 गेंदबाज़ वरुण चक्रवर्ती शामिल हैं, जो विरोधियों पर भारी पड़ रहे हैं। शास्त्री ने टीम की मजबूती पर बात करते हुए कहा, ''मुझे लगता है कि डिफेंडिंग चैंपियंस स्पष्ट रूप से जीत के प्रबल दावेदार के तौर पर शुरुआत करेंगे। अगर आप एक-एक खिलाड़ी को देखें, उनकी मौजूदा फ़ॉर्म, मैच फ़िटनेस और हाल के दिनों में उन्होंने जितना क्रिकेट खेला है।

भारत ने सात विकेट से जीता पहला मुकाबला

ग्रेटर नोएडा (उत्तर प्रदेश), 29 जनवरी। आज से ग्रेटर नोएडा के शहीद विजय सिंह पथिक स्टेडियम में शुरू हुई ऐतिहासिक पांच मैचों की भारत बनाम इंग्लैंड मिक्स्ड डिसेबिलिटी टी20 अंतरराष्ट्रीय श्रृंखला में भारत ने शानदार शुरुआत करते हुए पहले मुकाबले में इंग्लैंड को 7 विकेट से पराजित किया। टॉस हारकर पहले बल्लेबाज़ी करने उतरी इंग्लैंड की टीम ने निर्धारित 20 ओवरों में 5 विकेट के नुकसान पर 173 रन का प्रतिस्पर्धी स्कोर खड़ा किया। इंग्लैंड के कप्तान कैलम फ्लिन ने 16 गेंदों में 26 रन बनाकर तेज शुरुआत दिलाई, जबकि लियान ओ ब्रायन ने 41 गेंदों में 55 रनों की संयमित पारी खेलते हुए टीम को संभाला। उनकी पारी में चार चौके और तीन छक्के शामिल रहे। विकेटकीपर बल्लेबाज एंगस ग्रांट ब्राउन ने अंतिम ओवरों में उपयोगी योगदान देते हुए 34 गेंदों में 53 रन बनाए, जिससे इंग्लैंड 170 रन के पार पहुंचने में सफल रहा। भारत की ओर से गेंदबाज़ों आकाश सिंह और विवेक कुमार ने महत्वपूर्ण विकेट झटकते हुए इंग्लैंड को बड़ी साझेदारियां बनाने से रोका और लक्ष्य को काबू में रखा। जवाब में भारत संयमित बल्लेबाजी करते हुए 18.5 ओवरों में 3 विकेट खोकर लक्ष्य हासिल कर लिया। भारत की जीत के नायक विकेटकीपर बल्लेबाज योगेंद्र भडोरिया रहे, उन्होंने 59 गेंदों में शानदार 94 रनों की पारी खेली। उनकी पारी में छह चौके और पांच छक्के शामिल थे, जिसने रनचेज को मजबूती और गति प्रदान की। योगेंद्र भडोरिया को उनके उत्कृष्ट प्रदर्शन के लिए 'प्लेयर ऑफ द मैच' चुना गया। योगेंद्र को आकाश सिंह का भरपूर साथ मिला, जिन्होंने मात्र 15 गेंदों में तेजतर्रार 36 रन बनाते हुए इंग्लैंड के गेंदबाज़ों पर दबाव बनाया। अर्जुन गावरे ने 13 रन जोड़े, जबकि माजिद (12 नाबाद) और कप्तान रविंद्र सांते (11 नाबाद) ने बिना किसी और नुकसान के भारत को जीत दिलाई। इस जीत के साथ भारत ने श्रृंखला में 1-0 की बढ़त बना ली है। यह श्रृंखला शारीरिक, श्रवण और बौद्धिक दिव्यांग खिलाड़ियों को एक साथ एक अंतरराष्ट्रीय प्रारूप में लाकर समावेशन को बढ़ावा देने के उद्देश्य से खेली जा रही है।

भारत की सीमित ओवरों की टीम में जगह बनाने के लक्ष्य के साथ मेहनत कर रहा हूं : सरफराज

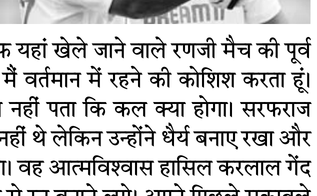

नई दिल्ली, 29 जनवरी। भारतीय बल्लेबाज सरफराज को टेस्ट क्रिकेट में खुद को साबित करने के लिए ज्यादा मौके नहीं मिले लेकिन उनका लक्ष्य वर्तमान में रहते हुए मेहनत कर सीमित ओवरों के क्रिकेट की राष्ट्रीय टीम में वापसी करने का है। सरफराज दिल्ली के खिलाफ यहां खेले जाने वाले रणजी मैच की पूर्व संध्या पर बुधवार को मीडिया से कहा, मैं वर्तमान में रहने की कोशिश करता हूं। मैं अतीत में कुछ नहीं कर सकता। मुझे नहीं पता कि कल क्या होगा। सरफराज घरेलू क्रिकेट में कुछ समय तक लय में नहीं थे लेकिन उन्होंने धैर्य बनाए रखा और अपनी फिटनेस तथा।खेल पर काम किया। वह आत्मविश्वास हासिल करलाल गेंद के साथ सफेद गेंद के प्रारूपों में भी फिर से रन बनाने लगे। अपने पिछले मुकाबले में सरफराज ने हैदराबाद के खिलाफ रणजी ट्रॉफी मैच में अपना पांचवां दोहरा शतक जड़ा और साथ ही प्रथम श्रेणी क्रिकेट में 5,000 रन पूरे किए। टीम के अभ्यास सत्र के दौरान उन्होंने कहा, मुझे बस इतना पता है कि मैं घर जाऊंगा, घर पर बल्लेबाजी करूंगा, अपने पिता के साथ समय बिताऊंगा, होटल में सोऊंगा।

सैम अयूब का ऑलराउंड प्रदर्शन, पाक ने ऑस्ट्रेलिया को 22 रनों से दी शिकस्त

लाहौर, 29 जनवरी। प्लेयर ऑफ द मैच सैम अयूब (40 रन और दो विकेट) के ऑलराउंड प्रदर्शन की बदौलत पाकिस्तान ने पहले टी-20 मुकाबले पर ऑस्ट्रेलिया पर 22 रन से जीत दर्ज की। इसी के साथ पाकिस्तान ने तीन मैचों की सीरीज में 1-0 से बढ़त बना ली है। आज यहां पाकिस्तान ने टॉस जीतकर पहले बल्लेबाजी करने का फैसला लिया। साहिबजादा फरहान का पहला विकेट जल्द गिरने के बाद अयूब ने सलमान आगा के साथ मिलकर 74 रन की साझेदारी की, जिससे पाकिस्तान पहले खेलते हुए निर्धारित 20 ओवरों में आठ विकेट पर 168 रनों का बड़ा सम्मानजक स्कोर बनाने में कामयाब रहा। फखर जमान और बाबर आजम को अपनी पारी शुरू करने में काफी संघर्ष करना पड़ा, बाबर ने 20 गेंदों में 24 रन बनाकर आउट हो गए। जमान 10 रन बनाएउस्मान खान (18) रन बनाकर आउट हुये। मोहम्मद नवाज 15 रन बनाकर नाबाद रहे। ऑस्ट्रेलिया की ओर से एडम जम्पा ने चार विकेट लिये। महली बियर्डमैन और जेवियर बार्टलेट को दो-दो विकेट मिले। एक नई ऑस्ट्रेलियाई टीम के लिए, कप्तान ट्रैविस हेड का प्रदर्शन हमेशा अंतिम नतीजे में एक बड़ी भूमिका निभाने वाला था। उन्होंने पहले ओवर में छक्का लगाकर अच्छी शुरुआत की, लेकिन एक छोटी, मनोरंजक पारी 23 रन पर खत्म हो गई जब अयूब ने उन्हें बाबर के हाथों कैच आउट करवाया। अयूब ने पहले ही मैट शॉर्ट को आउट कर दिया था, पाकिस्तान को सिर्फ मैट रेनशॉ और कैमरन ठीन की 40 रन की साझेदारी के तूफान को झेलना था, जिसके खत्म होने के साथ ही ऑस्ट्रेलिया की सबसे बड़ी चुनौतियां भी प्रभावी रूप से खत्म हो गईं।

राजस्थान के उत्कर्ष की संघर्षपूर्ण जीत

जयपुर, 29 जनवरी। राजस्थान के उत्कर्ष सिंह राठौड ने संघर्षणूपर्ण जीत दर्ज कर यहां सवाई मानसिंह स्टेडियम में चली रही योनेक्स सनराईज अखिल भारतीय सबजूनियर प्रतियोगिता के तीसरे दोर में प्रवेष किया। अंडर-15 बालक वर्ग के 40 मिनट तक चले मुकाबले में उत्कर्ष सिंह राठौड ने झारखण्ड के सुदीप कुमार को 15-7, 11-15, 15-11 से षिकस्त दी। अंडर-17 बालक वर्ग में देवाषीष प्रजापत ने दिल्ली के लक्ष्य चौधरी को तीन गेमों में 15-10, 10-15, 15-9 से हराया। राजस्थान के हर्षवर्धन ने हरियाणा के भरत कृष्णा को 15-5, 15-7 से हराया तथा निष्चित अग्रवाल ने कर्नाटक के फुरहान सय्यद से वॉक ओवर मिला।

कन्दर्प शर्मा ने केरल के आरिफ मोहम्मद को 15-10, 15-9 से चंडीगढ के अनुभव त्यागी को 15-9, 13-15, 15-8 से, जतिन ने तेलंगाना के निखिल वर्मा को 10-15, 15-5, 15-12 से, रूद्र देवंदा ने मध्यप्रदेष के अभ्यांष जैन को 15-5, 17-15, मानस गहलोत ने तेलंगाना के विहान प्रथम को 10-15, 17-15, 15-13 से, गर्वित बरवार ने तेलंगाना के विहान रेड्डी को 15-3, 15-5 से, दिव्यांष तोमर ने हरियाणा के आर्यन को 10-15, 15-11, 15-11 से, मयंक स्वामी ने मध्यप्रदेष के साकड दुबे को 15-11, 15-12 से, भव्य बंसल हरियाणा के मोक्ष भाटिया को 16-18, 15-5, 15-12 से, माधव शर्मा ने हरियाणा के हिमांषु को 15-7, 15-1 से, अक्षत शेखावत ने उत्तराखंड के क्षितिज कुषवाह को 15-6, 15-7 से, मानवेन्द्र चौधरी ने तमिलनाडु के के. सेलवामधन को हराकर अगले दोर मे प्रवेष किया।

राजस्थान बैडमिंटन संघ के उपाध्यक्ष मनोज दासोत के अनुसार 450 मुकाबले होंगे। मैच सुबह 9 बजे से शुरू होंगे। अंडर-17 मिश्रित युगल में राजस्थान की गर्वित बरवार व देषना जैन की जोड़ी ने आंध्रप्रदेष के कार्तिक व सुषमा की जोड़ी को 15-2, 15-8 से परास्त किया। मिश्रित युगल अंडर-15 में श्रेयांष चौधरी व पदमजा सिंह की जोड़ी ने हरियाणा के विराज सिंह व कनिष्का सिंह की जोड़ी को 15-5, 15-6 से, लोकेष गुर्जर व मिराया फगेरिया की जोडी ने महाराष्ट्र की पृथ्वी जनवाड व धानी की जोड़ी को 15-7, 15-13 से, वाय शेखावत व के. शर्मा की जोडी ने उत्तरप्रदेष के सुषागर व अरनवी पाठक की जोड़ी को 16-14, 15-9 से हराया।

जूनियर नेशनल इक्वेस्ट्रियन चैम्पियनशिप जयपुर में

जयपुर, 29 जनवरी। नेशनल इक्वेस्ट्रियन फेडरेशन ऑफ़ इंडिया द्वारा आयोजित जूनियर नेशनल इक्वेस्ट्रियन प्रतियोगिता (एंडोरेंस 40 किलोमीटर) 2025-26 का आयोजन 31 जनवरी से 1 फरवरी 2026 को सागर इक्वेस्ट्रियन स्पोर्ट्स अकैडमी, गजाधरपुर, कालवाड़ रोड, जयपुर में किया जा रहा है। जयपुर जिला घुड़सवारी संघ के सचिव कैप्टन भागीरथ ने बताया कि 31 जनवरी को सभी घोड़ों की चिकित्सीय जांच होगी। जांच में फिट पाए गए घोड़े और राइडर 1 फरवरी को प्रात: 7:00 बजे से 40 किलोमीटर की दौड़ शुरू करेंगे।

कैंडलविक क्रिकेट अकादमी जीती

जयपुर, 29 जनवरी। वनडे कप सीजन -1 में कैंडलविक क्रिकेट अकादमी ने पहले बल्लेबाजी करते हुए 40 ओवर में 410 रन 9 विकेट के नुकसान पर बनाएं । ओशनिक ग्रोवर ने 121, अली हसन ने 54, अनिकेत श्रीवास्तव ने 51 रनों का योगदान दिया। आरसीसी क्रिकेट अकादमी की ओर से जय कुमार और यश कुमावत ने 3-3 विकेट लिए। लक्ष्य का पीछा करने उतरी आरसीसी क्रिकेट एकेडमी 27 ओवर में 68 रन पर ऑल आउट हो गई।

राजस्थान पुलिस की माउंटेड टीम को मिले थौरो ब्रेड के दो घोड़े

जयपुर, 29 जनवरी। आर्मी से सेवानिवृत्त कर्नल कुलदीप सिंह गर्चा की से राजस्थान पुलिस को थौरो ब्रेड नस्ल के दो उत्कृष्ट घोड़े उपहार स्वरूप प्रदान किए जाने पर राजस्थान पुलिस महानिदेशक (डीजीपी) राजीव शर्मा ने उनका आभार व्यक्त किया। यह घोड़े 14 जनवरी 2026 को लगभग 11 लाख रुपये की लागत से राजस्थान पुलिस को भेंट किए गए। जिन्हें राजस्थान पुलिस की माउंटेड टीम में शामिल किया गया है। आरएसी के अतिरिक्त पुलिस महानिदेशक रुपिंदर सिंह ने बताया कि 29 जनवरी 2026 को पुलिस मुख्यालय स्थित डीजीपी कार्यालय में आयोजित कार्यक्रम में डीजीपी राजीव शर्मा ने कर्नल गर्चा के इस योगदान की सराहना की। उन्होंने कहा कि इस प्रकार के सहयोग से राजस्थान पुलिस की माउंटेड यूनिट को नई मजबूती मिलेगी तथा प्रशिक्षण व अनुशासन को और अधिक प्रभावी बनाया जा सकेगा। इस अवसर पर राजस्थान पुलिस की पोलो टीम के गठन एवं उसके भविष्य के विकास को लेकर भी विचार-विमर्श किया गया। अतिरिक्त पुलिय महानिदेशक रुपिंदर सिंह ने कहा कि माउंटेड पुलिस बल एवं खेल गतिविधियां राजस्थान पुलिस की गौरवशाली परंपरा का अभिन्न अंग हैं। जिन्हें आगे बढ़ाया जाना आवश्यक है।

बॉटल फॉर चेंज की पहल के तहत 1175 किलोग्राम के प्लास्टिक का उपयोग कर बनाई 15 बेंचेज

जयपुर, 29 जनवरी। जयपुर में 24 नवम्बर से 5 दिसम्बर तक सवाई मानसिंह स्टेडियम में आयोजित हुए खेलों इंडिया यूनिवर्सिटी गेम्स के दौरान बिसलेरी टीम की ओर से 1175 किलोग्राम के प्लास्टिक की बोतलों को एकत्रित कर रिसाईकिलिंग के माध्यम से 15 बेंचेंज का निर्माण कर राजस्थान राज्य क्रीड़ा परिषद की सुर्पुद की गई। शासन सचिव-युवा मामले एवं खेल विभाग तथा अध्यक्ष, राजस्थान राज्य क्रीड़ा परिषद डॉ. नीरज कुमार पवन ने बिसलरी टीम की सराहना करते हुए कहा कि यह हरित खेलों को बढ़ावा देने की दिशा में हमारी जिम्मेदारी और प्रतिबद्धता को दर्शाती है। इसके अलावा यह कोशिश बेंच ऑफ ड्रीम्स कार्यक्रम को आगे बढ़ाने में मदद करते हुए पुनर्चक्रमण और सतत् जीवनशैली की संस्कृति को प्रेरित करेगा। इस मौके पर सीएसआर एक्जीक्यूटिव वीनी भारद्धाज को राजस्थान राज्य क्रीड़ा परिषद के द्वारा इस पहल की सराहना करते हुए प्रशंसा प्रमाण पत्र प्रदान कर सम्मानित किया गया।

5वीं सॉफ्ट हॉकी नेशनल चैम्पियनशिप 2025-26 का भव्य उद्घाटन

जयपुर, 29 जनवरी। एस्ट्रो टर्फ हॉकी ग्राउंड, सवाई मानसिंह स्टेडियम में 29 जनवरी 2026 को 5वीं सॉफ्ट हॉकी नेशनल चैंपियनशिप 2025-26 का भव्य उद्घाटन समारोह गरिमामय वातावरण में आयोजित किया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि राजस्थान सरकार के खेल राज्य मंत्री के.के. विश्नोई रहे। समारोह की अध्यक्षता डॉ. अशुतोष पंत ने की। इस अवसर पर विशिष्ट अतिथि के रूप में आईजी संदीप सिंह चौहान, शिखा पंत एवं डॉ. आदित्य नाग उपस्थित रहे। साथ ही अनेक गणमान्य व्यक्तियों की गरिमामयी उपस्थिति ने कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई। मुख्य अतिथि के. के. विश्नोई ने स्वयं सॉफ्ट हॉकी खेलकर प्रतियोगिता का शुभारंभ किया और सॉफ्ट हॉकी खेल की सराहना करते हुए इसके उज्ज्वल भविष्य की कामना की।

जयपुर पोलो सीजन 2026 : टीम जिंदल बेदला, वी पोलो और जयपुर ने जीते मैच

जयपुर, 29 जनवरी। जयपुर पोलो सीजन 2026 के अंतर्गत आयोजित हो रहे पोलो कप के लिए गुरुवार को तीन रोमांचक मुकाबले खेले गए। पहला मैच पीपीसी ग्राउंड पर टीम जिंदल बेदला और थंडरबोल्ट के बीच आयोजित हुआ। इसके पश्चात, दूसरा मुकाबला पीपीसी ग्राउंड पर टीम वी पोलो और टीम अरावली के बीच खेला गया। वहीं, दिन का तीसरा मैच राजस्थान पोलो क्लब ग्राउंड पर टीम जयपुर और चांदना पोलो के बीच आयोजित हुआ।

टीम जिंदल बेदला और थंडरबोल्ट के बीच मुकाबला - इस मैच के दौरान टीम जिंदल बेदला ने शानदार जीत दर्ज की। जिंदल बेदला ने 11-2.5 के स्कोर के साथ थंडरबोल्ट की शिकस्त देकर मैच जीत लिया। विजेता टीम जिंदल बेदला से सिद्धांत शर्मा ने जबरदस्त प्रदर्शन करते हुए अकेले 8 गोल किए। वहीं, सिमरन शेरगिल ने 2 गोल और वैंकटेश जिंदल ने 1 गोल किया। टीम से राव हिम्मत सिंह बेदला भी खेले। टीम थंडरबोल्ट की ओर से कर्नल विशाल

सिंह ने चौहान ने 1 गोल किया। टीम को 1.5 गोल का एडवांटेज मिला। टीम से अन्य खिलाड़ियों में रविंद्र मांग, मृत्युंजय सिंह चौहान और समीर सुहाग शामिल थे।

टीम वी पोलो और टीम अरावली के बीच टक्कर - यह मैच वी पोलो ने 7.5-6 के स्कोर से टीम अरावली को हराकर अपने नाम कर लिया। वी पोलो से सैंटियागो मारम्बियो ने 5 गोल किए। वहीं, मुकेश सिंह और सलीम आजमी प्रत्येक ने 1-1 गोल हासिल किया। टीम से विवान मेहता भी खेले। यहां टीम वी पोलो को आधे गोल का एडवांटेज प्राप्त हुआ। दूसरी ओर टीम अरावली से मैनुअल फर्नांडीज लोरेंटे ने 4 गोल और कुलदीप सिंह राठौड़ ने 2 गोल किए। टीम से देवेंद्र सिंह और रघुराम हरि भी खेले।

टीम जयपुर और चांदना पोलो के बीच टक्कर - दिन के आखिरी मैच में टीम जयपुर ने 9.5-5 के स्कोर से चांदना पोलो को पराजित किया। टीम जयपुर से हिज हाइनेस महाराजा सवाई पद्मनाभ सिंह ने 4 गोल हासिल किए। वहीं, भवानी सिंह कालवी ने 3 गोल और लांस वॉटसन ने 2 गोल किए। टीम से मिर्जा मोहम्मद बेग भी खेले। इस मुकाबले में टीम जयपुर को आधे गोल का एडवांटेज भी मिला। टीम चांदना पोलो से अलेजो अरामबुरु ने 2 गोल किए। अशोक चांदना और डीनो धनखड़ ने 1-1 गोल हासिल किया। टीम में आरके धनंजय सिंह भी शामिल थे।

मुख्यमंत्री भजनलाल ने केन्द्रीय कृषि मंत्री का आभार जताया

ग्रामीण विकास मंत्रालय ने राजस्थान को मटीरियल कंपोनेंट के तहत 825 करोड़ रूपए की राशि जारी की थी

नई दिल्ली/जयपुर, 29 जनवरी। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने बुधवार देर रात को नई दिल्ली में केन्द्रीय कृषि एवं ग्रामीण विकास मंत्री शिवराज सिंह चौहान से मुलाकात की। इस अवसर पर शर्मा ने राजस्थान के लिए मटेरियल कंपोनेंट के अंतर्गत 825 करोड़ रुपये से अधिक की राशि जारी किए जाने पर

- शिवराज सिंह चौहान ने मुख्यमंत्री को इस मद में अग्रिम राशि जारी करने का भी आश्वासन दिया है।

केन्द्रीय ग्रामीण विकास मंत्री का आभार व्यक्त किया। चौहान ने मुख्यमंत्री को इस संबंध में अग्रिम किश्त का शीघ्र भुगतान करने के लिए आश्वासन भी दिया। इस दौरान, प्रदेश में कृषि एवं ग्रामीण विकास से संबंधित विभिन्न विषयों और कृषक कल्याण को समर्पित विभिन्न योजनाओं की प्रगति के संबंध में विस्तृत चर्चा की गई।

मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने बुधवार को नई दिल्ली में केंद्रीय कृषि एवं ग्रामीण विकास मंत्री शिवराज सिंह चौहान से मुलाकात की और विभिन्न योजनाओं की प्रगति के बारे में विस्तृत चर्चा की।

समीर वानखेडे का मुकदमा खारिज

नयी दिल्ली, 29 जनवरी। दिल्ली उच्च न्यायालय ने भारतीय राजस्व सेवा (आईआरएस) अधिकारी समीर वानखेड़े द्वारा नेटफ्लिक्स सीरीज द बैड्स ऑफ बॉलीवुड में कथित रूप से चित्रित किए जाने के संबंध में दायर

- भारतीय राजस्व सेवा के अधिकारी समीर वानखेड़े ने नैटफिलक्स सीरीज़ ''द बैड्स ऑफ बॉलीवुड'' के खिलाफ दिल्ली हाई कोर्ट में अपील की थी। जिसे कोर्ट ने क्षेत्राधिकार का अभाव बताकर खारिज कर दिया।

मानहानि के मुकदमे को क्षेत्राधिकार के अभाव का हवाला देते हुए खारिज कर दिया है। न्यायमूर्ति पुरुषेंद्र कुमार कौरव ने फैसला सुनाया कि उच्च न्यायालय इस मामले का निर्णय करने के लिए उपयुक्त मंच नहीं है और वानखेड़े को सक्षम क्षेत्राधिकार वाले न्यायालय में जाने की स्वतंत्रता दी।

पुनः आयोजित जेई भर्ती 2021 का पेपर भी लीक हुआ था

जाँच में सामने आया कि निरस्त परीक्षा के सफल अभ्यर्थी पुनः आयोजित परीक्षा में भी संदिग्ध रूप से सफल हुए

जयपुर, 29 जनवरी। कनिष्ठ अभियंता (जेई) संयुक्त भर्ती परीक्षा-2020 के पेपर लीक होने के बाद निरस्त की गई परीक्षा के पुनः आयोजन में भी गंभीर अनियमितता सामने आई हैं। राजस्थान पुलिस की स्पेशल ऑपरेशन ग्रुप (एसओजी) की जांच में यह खुलासा हुआ है कि 12 सितंबर 2021 को पुनः आयोजित कनिष्ठ अभियंता (सिविल) भर्ती परीक्षा-2021 का पेपर भी लीक कर दिया गया था।

एसओजी के अतिरिक्त महानिदेशक पुलिस विशाल बंसल ने बताया कि दिसंबर 2020 में आयोजित कनिष्ठ अभियंता भर्ती परीक्षा-2020 को पेपर लीक होने के कारण निरस्त किया गया था, जिस संबंध में सांगानेर थाने में केस दर्ज किया गया था। उसी केस की जांच के दौरान यह तथ्य सामने आया कि निरस्त परीक्षा में सफल अभ्यर्थी पुनः आयोजित परीक्षा में भी

- एसओजी की जाँच में उजागर हुआ कि पुनः आयोजित परीक्षा में भी संगठित पेपर माफिया सक्रिय था तथा उसने परीक्षा से पहले प्रश्न पत्र अभ्यर्थियों को उपलब्ध करा दिया था।

संदिग्ध रूप से सफल हुए।

जांच में यह उजागर हुआ कि पुनः आयोजित परीक्षा में भी पेपर माफिया सक्रिय था और पेपर लीक हुआ था। इस संबंध में 19 जनवरी 2026 को थाना एसओजी में नया केस दर्ज किया गया।

एसओजी ने इस मामले में जगदीश विश्नोई निवासी सांचौर जिला जालौर को गिरफ्तार किया है। पूछताछ में सामने आया कि आरोपी ने अपने साथियों के साथ मिलकर परीक्षा से पहले पेपर लीक किया। जांच में यह भी सामने आया कि गणपतलाल बिश्नोई निवासी सांचौर जिला जालौर, जो वर्तमान में सार्वजनिक निर्माण विभाग में सहायक अभियंता के पद पर कार्यरत है, को भी अवैध तरीके से परीक्षा उत्तीर्ण कराई गई। वह इस भर्ती में मेरिट क्रमांक 12 पर चयनित हुआ तथा बाद में उसे पदोन्नत भी किया गया।

एसओजी ने बताया कि इससे पहले सब-इंस्पेक्टर भर्ती परीक्षा-2021 के पेपर लीक होने के तथ्य भी सामने आ चुके हैं, जिससे यह स्पष्ट होता है कि भर्ती परीक्षाओं की शुचिता को प्रभावित करने वाला एक संगठित गिरोह सक्रिय है। गिरफ्तार आरोपियों को न्यायालय में पेश कर पुलिस रिमांड लिया गया है। एसओजी द्वारा पूरे नेटवर्क की पहचान, अन्य संलिप्त आरोपियों की गिरफ्तारी तथा अवैध रूप से अर्जित लाभ को निरस्त कराने की कार्रवाई जारी है।

एसआईआर की वैधता पर सुप्रीम कोर्ट ने फैसला सुरक्षित रखा

सुप्रीम कोर्ट इस बात की जांच कर रहा है कि क्या चुनाव आयोग के पास संविधान के तहत एसआईआर आयोजित करने का अधिकार है

नयी दिल्ली, 29 जनवरी। उच्चतम न्यायालय ने गुरुवार को उन याचिकाओं के समूह पर अपना फैसला सुरक्षित रख लिया, जिनमें चुनाव आयोग (ईसीआई) के कई राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों में मतदाता सूचियों के विशेष गहन पुनरीक्षण (एसआईआर) की वैधता को चुनौती दी गई थी।

न्यायालय इस बात की जांच कर रहा है कि क्या चुनाव आयोग के पास संविधान के अनुच्छेद 326, लोक प्रतिनिधित्व अधिनियम, 1950 के तहत यह अधिकार है कि वह एसआईआर को वर्तमान स्वरूप में संचालित कर सके।

मुख्य न्यायाधीश सूर्य कांत और न्यायमूर्ति जॉयमाल्या बागची की पीठ

- इस मामले में नवम्बर 2025 से ही सुप्रीम कोर्ट में सुनवाई चल रही है।

ने नवंबर 2025 से चल रही व्यापक सुनवाई के बाद मामले पर अपना फैसला सुरक्षित रख लिया।

अधिकांश याचिकायें पिछले वर्ष जून में तब दायर की गयी थीं, जब चुनाव आयोग ने बिहार में एसआईआर की प्रक्रिया आरंभ करने का निर्णय किया था। गैर-सरकारी संगठनों, राजनीतिक नेताओं और व्यक्तिगत कार्यकर्ताओं सहित 13 से अधिक याचिकाकर्ताओं ने न्यायालय का रुख किया है। इनमें मुख्य याचिकाकर्ता के रूप में एसोसिएशन फॉर डेमोक्रेटिक रिफॉर्म्स (एडीआर), पीयूसीएल, योगेंद्र यादव, महुआ मोइत्रा (तृणमूल कांग्रेस सांसद), मनोज झा (आरजेडी सांसद), के.सी. वेणुगोपाल (कांग्रेस सांसद) और सुप्रिया सुले (एनसीपी-एसपी) आदि शामिल हैं। याचिकाकर्ताओं का तर्क है कि एसआईआर एक अप्रत्यक्ष ''एनआरसी जैसी प्रक्रिया'' है, जो प्रभावी रूप से चुनाव आयोग को नागरिकता सत्यापन के लिए एक वास्तविक प्राधिकरण में बदल देती है। उन्होंने तर्क दिया कि मतदाता पात्रता संबंधी शंकाओं का समाधान लोक प्रतिनिधित्व अधिनियम, 1950 की धारा 16 के अनुसार ही किया जाना चाहिए, जिसमें मतदाता सूची से अयोग्य घोषित किए जाने के विशिष्ट आधार बताए गये हैं।

वरिष्ठ अधिवक्ता कपिल सिबल, डॉ. ए.एम. सिंघवी, गोपाल शंकरनारायणन, शादान फरासत, पी.सी. सेन और राजू रामचंद्रन, साथ ही अधिवक्ता प्रशांत भूषण, वृंदा ग्रोवर, निज़ाम पाशा और शाहरुख आलम विभिन्न याचिकाकर्ताओं की ओर से पेश हुये। याचिकाओं का विरोध करते हुये, चुनाव आयोग ने कहा कि सत्यापन प्रक्रिया को केवल चुनावी उद्देश्यों के लिए ही देखा जाना चाहिये, न कि निर्वासन या अन्य परिणामों के लिए नागरिकता निर्धारित करने की प्रक्रिया के रूप में। आयोग ने एसआईआर को एक ''उदार, सौम्य'' प्रक्रिया बताया, जिसमें किसी भी प्रकार की कठोर या दबावपूर्ण जांच शामिल नहीं है।

'अमेरिका और नाटो के बीच ग्रीनलैंड को लेकर कोई समझौता नहीं हुआ'

डेनमार्क की प्र.मंत्री मेटे फ्रैडरिकसेन ने फ्रांस के टीवी चैनल से वार्ता के दौरान दावा किया

पेरिस, 29 जनवरी। डेनमार्क की प्रधानमंत्री मेटे फ्रेडरिकसेन ने बुधवार को इस बात से इनकार किया कि नॉर्थ अटलांटिक ट्रीटी ऑर्गनाइजेशन (नाटो) और अमेरिका के बीच ग्रीनलैंड मुद्दे पर कोई समझौता हुआ है।

अमेरिका के राष्ट्रपति डॉनाल्ड ट्रंप ने दावोस में विश्व आर्थिक मंच (डब्ल्यूईएफ) में दावा किया था कि उन्होंने ग्रीनलैंड पर नाटो के साथ एक समझौता किया है। जब फ्रांस-2 टीवी चैनल के साथ साक्षात्कार में फ्रेडरिकसेन से इस संबंध में सवाल किया गया, तो उन्होंने कहा, ''यह कोई

- फ्रैडरिकसेन ग्रीनलैंड के प्रधानमंत्री जेन्स फ्रैडरिक नील्सन के साथ फ्रांस की यात्रा पर आयी हैं।

समझौता नहीं है।'' फ्रेडरिकसेन ने साक्षात्कार में कहा कि असल में एक राज्य संप्रभु होता है। उसकी सीमाओं का सम्मान किया जाना चाहिए और दूसरे लोगों के आत्मनिर्णय के अधिकार का सम्मान किया जाना चाहिए। फ्रेडरिकसेन ने कहा कि अगर ग्रीनलैंड में सैन्य साधनों का इस्तेमाल किया जाता है, तो सब कुछ रुक जाएगा। उन्होंने कहा कि ''यह उन सभी चीज़ों के खिलाफ होगा जो हम दूसरे विश्व युद्ध के खत्म होने के बाद से बना रहे हैं।'' फ्रेडरिकसेन बुधवार को ग्रीनलैंड के प्रधानमंत्री जेन्स-फ्रेडरिक नील्सन के साथ फ्रांस पहुंचीं।

फ्रांस के राष्ट्रपति इमैनुएल मैक्रों ने एक संयुक्त प्रेस कॉन्फ्रेंस में कहा कि ग्रीनलैंड को लेकर अमेरिका के साथ बढ़ता तनाव पूरे यूरोप के लिये एक रणनीतिक चेतावनी है। साथ ही उन्होंने डेनमार्क और ग्रीनलैंड के साथ फ्रांस की एकजुटता की बात दोहराई।

बब्बर खालसा के दो आतंकवादी गिरफ्तार

चंडीगढ़ 29 जनवरी। पंजाब पुलिस ने हिमाचल प्रदेश की पुलिस के साथ एक बड़ी कार्रवाई में हिमाचल प्रदेश के नालागढ़ पुलिस स्टेशन धमाके के सिलसिले में बब्बर खालसा इंटरनेशनल (बीकेआई) के ऑपरेटिव हरविंदर रिंडा और पाकिस्तान की आईएसआई द्वारा समर्थित एक नार्को-टेरर मॉड्यूल का भंडाफोड़ किया है। पुलिस महानिदेशक गौरव यादव ने गुरुवार को बताया कि मॉडयूल के दो आरोपियों को गिरफ्तार किया गया है और उनके पास से एक आइईडी बरामद किया गया है। यह ऑपरेशन हिमाचल प्रदेश की पुलिस और केंद्रीय एजेंसियों के साथ मिलकर किया गया। उन्होंने बताया कि गिरफ्तार आरोपियों की पहचान शमशेर सिंह उर्फ शेरू और प्रदीप सिंह उर्फ दीपू, दोनों निवासी राहों, के तौर पर हुई है।

राजस्थान ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

वास्तव में एक स्वतंत्र व्यक्ति राज्यसभा सांसद बने, जो किसी भी गुट, समूह या नेता से जुड़ा न हो।

क्या उनका इशारा पवन खेड़ा की ओर था, जो राज्यसभा जाने की कोशिश कर रहे हैं और अशोक गहलोत के क़रीबी माने जाते हैं, हालाँकि स्वयं गहलोत भी राज्यसभा नामांकन के लिए प्रयासरत हैं?

आख़िरकार, राज्यसभा के लिए चयन का फ़ैसला पार्टी नेतृत्व के हाथ में है और यह उसका विशेषाधिकार है।

पार्टी जल्द ही नगर निकाय और स्थानीय निकाय चुनावों का सामना करने जा रही है और राज्य नेतृत्व का कहना है कि वे इन चुनावों में जीत को लेकर पूरी तरह आश्वस्त हैं।

इकोनॉमिक सर्वे ने भी ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

नियंत्रण रखना चाहिए।

अर्थशास्त्र की भाषा में इसका मतलब है कि बेहतर भविष्य और आगे चलकर अधिक उपभोग के लिए आज की खपत को कम कर बचत बढ़ाई जाए।

अगर इस तरह के सुझाव को अमल में लाया जाता है, और जब मुख्य आर्थिक सलाहकार खुद ऐसा कह रहे हैं तो ऐसा क्यों न हो, लेकिन इसका नतीजा विकास नहीं, बल्कि मौजूदा समय में मंदी होगा।

खुद सीईए ने दिखाया है कि भारतीय अर्थव्यवस्था बढ़ती घरेलू खपत के सहारे आगे बढ़ रही है, जो मांग और आर्थिक गतिविधियों को गति दे रही है। उस पर ब्रेक लगाना विनाश और मंदी को बुलावा देना होगा।

अगर कुछ करना ही है तो घरेलू खपत को बनाए रखा जाना चाहिए, ताकि निर्यात में होने वाली किसी भी कमी की भरपाई की जा सके। बेशक, सीईए के तर्क के पीछे की सोच साफ है। विकास के लिए निवेश चाहिए और निवेश बचत से ही आ सकता है।

लेकिन मौजूदा परिस्थितियों में घरेलू बचत की कमी को विदेशी बचत से पूरा करने की कोशिश करनी चाहिए। यानी, ज्यादा फॉरेन डायरैक्ट इन्वैस्टमैंट, घरेलू कैपिटल, मार्केट में ज्यादा फंड का फ्लो, विदेशी इन्वैस्टर्स के लिए सरकारी ट्रैज़री मार्केट खोलना, ये सब घरेलू बचत की कमी को पूरा कर सकते हैं।

इसके अलावा, अर्थव्यवस्था के मजबूत प्रदर्शन और कम महंगाई दर को देखते हुए सरकार के पास विस्तारवादी नीतियां अपनाने की गुंजाइश है। यह बड़े इन्फ्रास्ट्रक्चर प्रोग्राम और इन क्षेत्रों में सार्वजनिक निवेश के जरिए होना चाहिए।

इस तरह के कदम से न केवल कुल डिमांड बढ़ेगी, बल्कि जमीनी स्तर पर ज्यादा रोजगार पैदा होने से ग्रोथ और इन्कम जैनरेशन का मल्टीप्लायर इफैक्ट भी शुरु हो सकता है।

सुप्रीम ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

से पार्टी को राजनीतिक नुकसान होता दिख रहा है, क्योंकि ऊंची जातियों में नाराज़गी बढ़ी, और वह सड़कों पर प्रदर्शन के रूप में सामने आई है।

इस मामले की अगली सुनवाई सुप्रीम कोर्ट में 19 मार्च को होगी।

अजित ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

उल्लेखनीय है कि जिस समय हादसा हुआ उस समय बारामती में मौसम साफ था और दृश्यता 3,000 मीटर थी। हवा शांत थी।

बारामती एयरफील्ड पर उतरते समय पहले दो बार पायलट ने रनवे नजर नहीं आने की बात कही थी जिसके कारण विमान उतर नहीं पाया। तीसरी बार में पायलट ने कहा कि उसे रनवे दिख रहा है और विमान को सुबह 8.43 पर उतरने की अनुमति प्रदान कर दी गयी। इसके बाद 8.44 बजे एटीसी ने रनवे 11 के एक छोर पर आग की लपटें देखीं।

कमांड पायलट के पास 1,500 घंटे से अधिक का उड़ान अनुभव था। को-पायलट के पास भी लगभग 1,500 घंटे का उड़ान अनुभव था।

बांग्लादेश के 99 विस्थापित हिंदू परिवारों का यूपी में पुनर्वास होगा

लखनऊ, 29 जनवरी। उत्तर प्रदेश मंत्रिमंडल ने गुरुवार को एक महत्वपूर्ण निर्णय लेते हुए पूर्वी पाकिस्तान (वर्तमान बांग्लादेश) से विस्थापित 99 हिंदू परिवारों के पुनर्वास को स्वीकृति प्रदान की।

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ की अध्यक्षता में गुरुवार को मंत्रिमंडल की बैठक के बाद, वित्त एवं संसदीय कार्य मंत्री सुरेश कुमार खन्ना ने पत्रकारों को बताया कि ये परिवार फिलहाल मेरठ जिले के मवाना क्षेत्र के नंगला गोसाई गांव में रह रहे थे और यह पुनर्वास राष्ट्रीय हरित अधिकरण (एनजीटी) के आदेशों के अनुपालन में किया जा रहा है।

- उत्तर प्रदेश सरकार ने कैबिनेट मीटिंग में इस फैसले पर मोहर लगाई
- इन परिवारों को कानपुर देहात के रसूलाबाद व ताजपुर तरसौली गाँव में बसाया जाएगा।

खन्ना ने बताया कि पुनर्वास योजना के तहत 50 परिवारों को कानपुर देहात जिले की रसूलाबाद तहसील के भैंसाया गांव में 11.1375 हेक्टेयर (27.51 एकड़) भूमि पर बसाया जाएगा, जबकि शेष 49 परिवारों को ताजपुर तरसौली गांव में 10.530 हेक्टेयर (26.01 एकड़) भूमि उपलब्ध कराई जाएगी। यह भूमि पुनर्वास विभाग के नाम दर्ज है।

प्रत्येक परिवार को 0.50 एकड़ भूमि 30 वर्ष की लीज पर दी जाएगी, जिसे दो बार 30-30 वर्षों के लिए नवीनीकृत किया जा सकेगा। इस प्रकार अधिकतम 90 वर्षों तक लीज की व्यवस्था होगी, जो निर्धारित प्रीमियम अथवा लीज रेंट के भुगतान पर प्रदान की जाएगी।

शशि थरूर, राहुल ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

बनने, को पूरा करने के लिए किस तरह की भूमिका निभा रहे हैं, तो यह चिंता का विषय है।

उदाहरण देते हुए शशि थरूर ने राहुल गांधी को बताया कि जब उन्होंने केरल में एक बैठक को संबोधित किया, तो उन्होंने उनका नाम तक नहीं लिया, जबकि वे मंच (डायस) पर मौजूद थे। इस पर राहुल गांधी ने जवाब दिया कि उन्हें एक पर्ची दी गई थी, जिसमें कुछ नाम लिखे थे, और उन्होंने वही नाम पढ़ दिए। नेताओं का कहना है कि यह वेणुगोपाल की शरारत थी।

सूत्रों के मुताबिक, शशि थरूर ने राहुल गांधी से केवल दो बातें कहीं। पहली, राहुल को उन पर भरोसा होना चाहिए; और दूसरी, उन्हें संसद में बोलने की अनुमति दी जानी चाहिए। दोनों ही मांगों पर राहुल गांधी ने उन्हें आश्वासन दिया कि ऐसा किया जाएगा।

इसके साथ ही, राहुल गांधी ने वेणुगोपाल को निर्देश दिया कि वे प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष को सूचित करें कि शशि थरूर को प्रदेश कांग्रेस कमेटी (पीसीसी) की सभी बैठकों में आमंत्रित किया जाए।

इतना ही नहीं, आगामी विधानसभा चुनावों के लिए केरल में कांग्रेस की अभियान समिति और प्रचार समिति की ज़िम्मेदारी भी शशि थरूर को सौंप दी गई है।

राहुल गांधी ने थरूर की शिकायतों को ध्यान से सुना और उन्हें आश्वस्त

- राहुल गांधी ने तुरंत प्रभाव से थरूर को आगामी चुनाव के लिए गठित अभियान समिति व प्रचार समिति का अध्यक्ष भी नियुक्त किया।
- थरूर ने एक आग्रह यह भी किया कि उन्हें संसद में बोलने का मौका दिया जाए।

किया कि उनका समाधान किया जाएगा।

इस बैठक को शशि थरुर की एक तरह की जीत के रूप में प्रस्तुत किया जा रहा है, इस उम्मीद के साथ कि यह समझ आगामी विधानसभा चुनावों तक बनी रहेगी।

नालों की ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

अलग उच्च न्यायालयों के इस मामले पर अलग-अलग विचार थे कि कितना मुआवजा दिया जाना चाहिए। उदाहरण के लिए, मद्रास उच्च न्यायालय ने एक मामले में 10 लाख रुपये दिए, जबकि दिल्ली उच्च न्यायालय ने दूसरे मामले में 30 लाख रुपये दिए।

नफरती ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

मिलती और इसके लिए तीन साल तक की सजा हो सकती है। कांग्रेस की राज्य इकाई ने इस मामले में पहले ही याचिका दायर कर दी है। याद दिलाना जरूरी है कि शिवसेना के संस्थापक बाल ठाकरे को दिसंबर 1999 से दिसंबर 2005 तक छह वर्षों के लिए मतदान करने और चुनाव लड़ने से प्रतिबंधित कर दिया गया था। यह बैन चुनाव आयोग की सिफारिश पर लगाया गया था, क्योंकि उन्होंने धर्म के नाम पर वोट मांगकर गलत काम किया था। हालांकि, वह समय अलग था, जब संस्थानों को सत्तारूढ़ व्यवस्था से इतना जुड़ा हुआ नहीं माना जाता था। हाल के महीनों और वर्षों में इस तरह की आपत्तिजनक बातें सामान्य होती दिखाई दे रही हैं।

नीरजा ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

सीबीएसई की ओर से कहा गया कि स्कूल में सीसीटीवी कैमरे हैं, लेकिन उनकी निगरानी करने के लिए कोई व्यवस्था नहीं थी। यदि सीसीटीवी की लाइव मॉनिटरिंग होती तो शायद घटना नहीं होती। स्कूल में एंटी बुलिंग सहित, कई अन्य कमेटियां केवल कागजों में ही काम कर रही थी। मृतका लंबे समय से बुलिंग की शिकार हो रही थी, लेकिन शिकायत के बाद भी कोई कार्रवाई नहीं हुई।

एन सी पी के भविष्य पर सवालिया निशाल लगा दिया है अजित पवार की अचानक मौत ने

पर, इसे एन सी पी का अंत मान लेना अभी जल्दबाज़ी होगा

-जाल खंबाता-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 29 जनवरी। राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी (एनसीपी) की श्रद्धांजलि लिखना अभी जल्दबाज़ी होगी, लेकिन विमान दुर्घटना में अजित पवार की अचानक हुई मृत्यु निस्संदेह पार्टी के दोनों गुटों के साथ-साथ, उस परिवार के लिए भी लगभग घातक झटका है, जिसने पिछले चार दशकों से पश्चिमी महाराष्ट्र की शुगर बैल्ट और उसकी समृद्ध सहकारी संस्थाओं की राजनीति पर नियंत्रण रखा है।

इससे बदतर समय नहीं हो सकता था। अजित पवार का निधन ऐसे समय में हुआ है। वर्ष 2023 में हुए विभाजन के बाद, एनसीपी गंभीर दौर से गुजर रही है। उक्त विभाजन ने पार्टी को ही नहीं बल्कि, महाराष्ट्र के प्रमुख राजनीतिक परिवारों में से एक को भी विभाजित कर दिया था, जहाँ भतीजा, चाचा के आमने-सामने आ गया और पार्टी के पितामह शरद पवार की सावधानी से बनाई गई उत्तराधिकार योजना उलट गई थी।

यदि अजित पवार जैसी बड़ी क्षति

- अजित की मौत ऐसे समय में हुई है, जब 2023 में विभाजित हुई पार्टी बड़े नाज़ुक दौर से गुज़र रही थी।
- अगर राजनीति के धुरंधर शरद पवार अपनी पार्टी को इस भारी क्षति से उबारने के लिए कोई चमत्कारिक समाधान नहीं कर पाए तो एन सी पी के खाली स्थान पर भाजपा कब्जा कर लेगी।
- अभी सबसे बड़ा मुद्दा अजित पवार गुट के 41 विधायकों का है, यह भी चर्चा है कि भाजपा नेतृत्व उन सभी को अपनी पार्टी में शामिल कर सकता है।

के बाद, शरद पवार अपनी पार्टी को पुनर्जीवित करने के लिए आख़िरी बार भी कोई चमत्कार नहीं कर पाते, तो भाजपा की मशीनरी निश्चित रूप से एनसीपी द्वारा खाली किए गए स्थान पर कब्ज़ा करने आगे बढ़ेगी।

पहली बात, दोनों गुट (एक अजित पवार के नेतृत्व में और दूसरा शरद पवार के नेतृत्व में) हाल ही में हुए नगर निगम चुनावों में पुणे और पिंपरी-चिंचवाड़ जैसे अपने गढ़ों में लगभग सफ़ाए के सदमे से अब तक उबर नहीं पाए हैं। भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) ने दोनों पर कब्ज़ा कर लिया और उसकी जबरदस्त जीत दोनों एनसीपी गुटों के लिए, और संभवतः पवार परिवार के लिए भी, अस्तित्व का संकट खड़ा करता है।

दूसरी बात, दोनों गुटों के पुनर्मिलन की योजनाएँ अब अधर में लटक गई हैं। सीट-बँटवारे को लेकर भाजपा से मतभेदों के बाद, नगर निगम चुनावों से पहले विलय के लिए अजित पवार ही अपने चाचा के पास गये थे। दोनों ने चरणबद्ध तरीके पर सहमति जताई थी। पहला कदम नगर निगम चुनावों के लिए गठबंधन बनाना था। अगला कदम आगामी ज़िला परिषद चुनाव एक ही चुनाव चिन्ह पर लड़ना था। चाचा-भतीजे इस पर सहमत थे कि वे "घड़ी" का चुनाव चिन्ह इस्तेमाल करेंगे, जिसे चुनाव आयोग ने शरद पवार से लेकर अजित पवार की पार्टी को दे दिया था।

इसके बाद, पुनर्मिलन महज़ औपचारिकता रह जाना था, जिसे स्थानीय चुनाव पूरे होने के बाद किया जाना था। अब यह कहना मुश्किल है कि यह प्रक्रिया पूरी होगी या नहीं।

बहुत कुछ इस बात पर निर्भर करेगा कि आने वाले हफ्तों में अजित पवार के 41 विधायक किस दिशा में जाते हैं। अजित के प्रभावशाली नेतृत्व के बिना वे लगभग अनाथ और दिशाहीन हो गए हैं। वर्ष 2022 से महाराष्ट्र की पार्टियों में जिस तरह टूट-फूट हुई है, उसे देखते हुए इस बात की प्रबल संभावना है कि वे या तो अलग-अलग दिशाओं में बिखर जाएँ या फिर भाजपा उन्हें अपने में समाहित कर ले।

अजित पवार के अप्रत्याशित निधन से भाजपा के सामने अवसर भी हैं और चुनौतियाँ भी। उनकी एनसीपी, एकनाथ शिंदे की सेना के मुक़ाबले संतुलनकारी शक्ति के रूप में उपयोगी साबित हुई थी। वस्तुतः, अजित पवार के बिना शर्त समर्थन के चलते ही, शिंदे की नाराज़गी और दबाव की राजनीति के बावजूद, देवेन्द्र फडणवीस के मुख्यमंत्री बनने का रास्ता साफ़ हुआ था। इसके बाद जब-जब शिंदे ने सरकार को अस्थिर करने की कोशिश की, अजित पवार उन्हें लाइन पर लाने के काम आए। एक अर्थ में, फडणवीस और भाजपा ने एक क़ीमती सहयोगी खो दिया है।

फिर भी, अजित पवार की मृत्यु को महाराष्ट्र में भाजपा के दीर्घकालिक लक्ष्य, एकमात्र प्रभुत्वशाली शक्ति बनने और अगले विधानसभा चुनाव में अपने दम पर सरकार बनाने, को हासिल करने के लिहाज से अनुकूल भी माना जा सकता है।

मार्डन मीडिया, बीकानेर के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक सोमेश शर्मा द्वारा वतन प्रेस, कुम्भाना हाऊस, हनुमान हत्था, बीकानेर से मुद्रित एवं प्रकाशित। संपादक-राजेश शर्मा, आर.एन.आई. नं. 35214/79, जयपुर कार्यालय: सुधर्मा एम.आई.रोड, जयपुर। फोन: 2372634, 4103333-34, कोटा कार्यालय : पलायथा हाऊस, छत्रपति शिवाजी मार्ग, कोटा। फोन: 2386031, 2386032,फैक्स:0744-2386033, उदयपुर कार्यालय: आयड मैन रोड आयड, उदयपुर। फोन: 2413092, फैक्स : 0294-2410146, अजमेर कार्यालय:-राष्ट्रदूत भवन, चुंगी नाका के पास, अजमेर। फोन: 2627612, फैक्स:0145-2624665, जालोर कार्यालय :- जी 1/63, इन्डस्ट्रीयल एरिया, फेस प्रथम, जालोर। फोन: 226422,226423, फैक्स: 02973-226424 हिण्डौनसिटी कार्यालय :- जी -1-201, रीको औद्योगिक क्षेत्र, हिण्डौनसिटी। फोन: 230200, 230400, फैक्स: 07469-230600 चूरू कार्यालय : एच-150, रीको औद्योगिक क्षेत्र, चूरू, फोन : 256906, 256907, फैक्स: 01562-256908